मासिक

# शिविरा पत्रिका

वर्ष : 61 | अंक : 07 | जनवरी, 2021 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

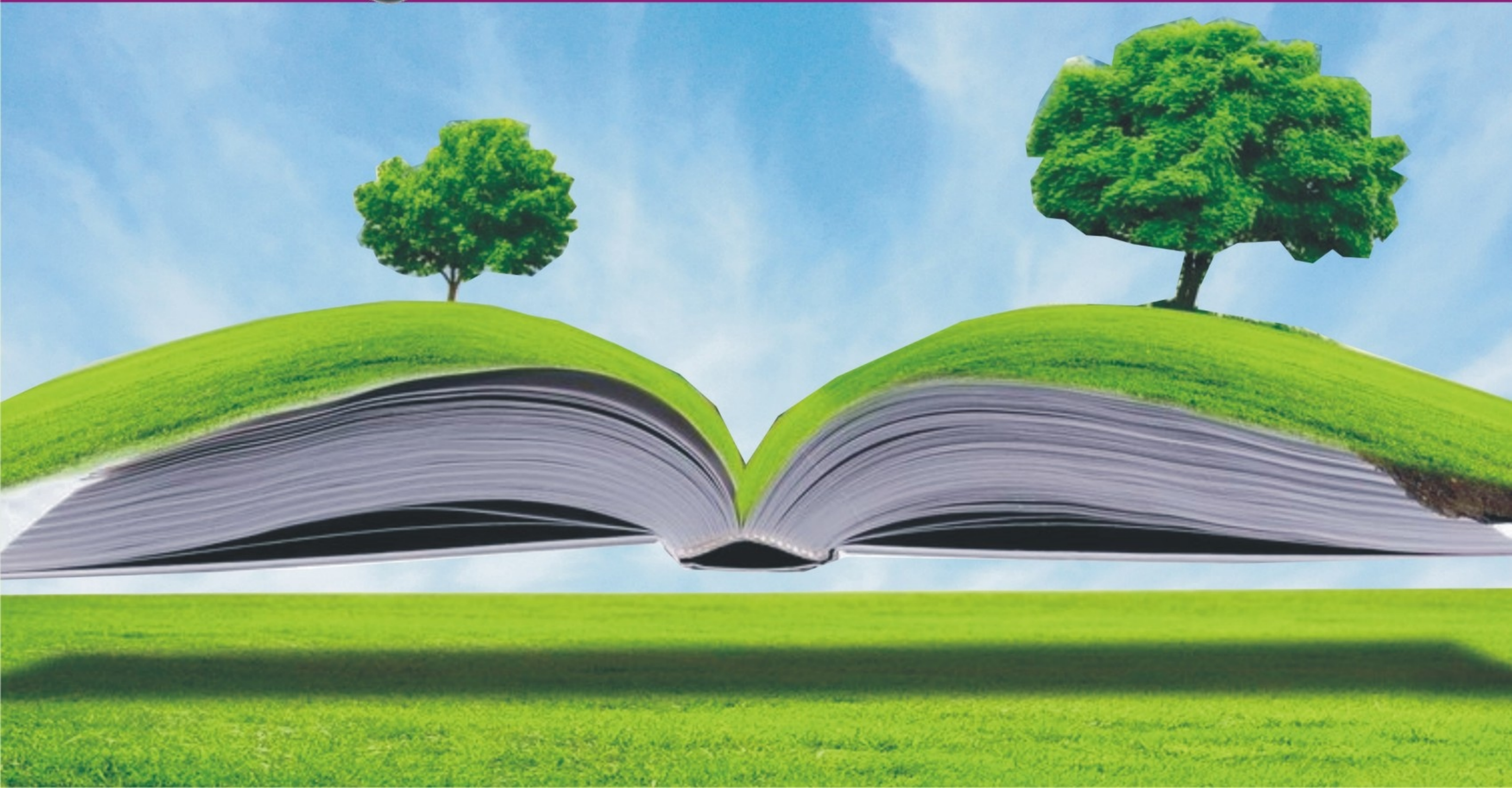

सत्यमेव जयते

**श्री गोविन्द सिंह डोटासरा**
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

# नया साल सारे सुख लाए

21 वीं सदी के इक्कीसवें वर्ष के शुभागमन अवसर पर शिक्षा विभाग के अन्तर्गत राज्य के कोने-कोने में शिक्षा का आलोक फैला रहे गुरुजन एवं मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों का अभिनन्दन करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। बीते वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के कारण पैदा हुई विषम परिस्थितियों में आपने निष्ठा एवं मनोयोगपूर्वक न केवल शिक्षा की अलख जगाए रखी अपितु कोरोना वारियर के रूप में महामारी से मुकाबला करने में भी सराहनीय भूमिका निभाई। इस अवसर पर मैं विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं भामाशाहों को भी बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ जिनके कारण शिक्षा विभाग पल्लवित-पुष्पित होता है।

यदि यह पूर्व की भाँति सामान्य वर्ष होता तो अब तक दो परख एवं अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं सम्पन्न हो चुकी होतीं। कोर्स पूरा होकर अब पुनरावृत्ति तथा बेहतर परीक्षा परिणामों के लिए मिशन मेरिट एवं टारगेट 100 प्रतिशत जैसे अभियान चल रहे होते। मित्रों, लाख अंधेरे के बीच भी प्रकाश की एक छोटी सी किरण जिन्दा रहती है और अन्ततः वही छोटी सी किरण प्रकाश धारा बनकर घनघोर अन्धकार का निवारण करती है-हर विपत्ति, हर बाधा का समाधान होता है। बस आवश्यकता केवल पक्के इरादे, संकल्प और उसे सफल करने के लिए किए जाने वाले प्रयासों की है। नए वर्ष के अवसर पर आइये, दिनकर की इन पंक्तियों को आत्मसात कर लें, जीवन में उतार लें-

**है कौन विघ्न ऐसा जग में, टिक सके आदमी के मग में,**
**खम ठोक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पांव उखड़।**
**मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है।**

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की वार्षिक परीक्षाएँ विधिवत रूप से होनी है। पाठ्यक्रम में कमी कर दी गई है। बोर्ड कक्षाएं अब नियमानुसार पूर्ण समय लगनी शुरू हो जाए, यह मेरी कामना है। गुरुजन अपनी सम्पूर्ण क्षमता एवं योग्यता से शिक्षण एवं मार्गदर्शन का कार्य कर विद्यार्थियों की तैयारी करवाएं ताकि परीक्षा में वे उत्तम प्रदर्शन कर उत्तम रिजल्ट्स प्राप्त कर सकें।

इस महीने में 14 जनवरी के दिन मकर संक्रान्ति का पावन पर्व है। गुरु गोविन्द सिंह जी की जयन्ती 20 जनवरी को है। हमें उनके द्वारा दी गई शिक्षाओं को ग्रहण करना चाहिए। छब्बीस जनवरी को 72वाँ गणतंत्र दिवस है। इस महान राष्ट्रीय पर्व के दिन राष्ट्रभक्ति एवं राष्ट्र प्रेम का संकल्प लेकर देश को दुनिया में सिरमौर बनाने के लिए अपने प्रयास तेज करने चाहिए। नये वर्ष के अवसर पर मुझे एक कवि की ये लाइनें याद आ रही है-

**नया साल सारे सुख लाए, लाए नूतन हर्ष,**
**दे धरती पर मात स्वर्ग को मेरा भारत वर्ष।**
**इस कोने से उस कोने तक बहे प्रेम की गंगा,**
**दूर-दूर तक नज़र ना आए, अब कोई भूखा नंगा।**

एक बार पुनः हार्दिक बधाई एवं कोटिशः शुभकामनाएँ-

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

**"मित्रों, लाख अंधेरे के बीच भी प्रकाश की एक छोटी सी किरण जिन्दा रहती है और अन्ततः वही छोटी सी किरण प्रकाश धारा बनकर घनघोर अन्धकार का निवारण करती है-हर विपत्ति, हर बाधा का समाधान होता है। बस आवश्यकता केवल पक्के इरादे, संकल्प और उसे सफल करने के लिए किए जाने वाले प्रयासों की है।"**

मासिक
# शिविरा पत्रिका
न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 61 | अंक : 7 | पौष-माघ, २०७७ | जनवरी, 2021

प्रधान सम्पादक
**सौरभ स्वामी**

वरिष्ठ सम्पादक
**अनिल कुमार अग्रवाल**

सम्पादक
**मुकेश व्यास**

सह सम्पादक
**सीताराम गोदारा**

प्रकाशन सहायक
**नारायणदास जीनगर**
**रमेश व्यास**

मूल्य : ₹ 20

**वार्षिक चंदा दर व शर्तें**
- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

**पत्र व्यवहार हेतु पता**
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। -वरिष्ठ संपादक

## इस अंक में

**दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ**
- नवाचारों की पहल 5

**आलेख**
- हमारी महान विरासत-स्वामी विवेकानन्द 6
  **रमाकान्त वर्मा**
- बुलंद हौंसलों के धनी नेताजी सुभाष 8
  **रामगोपाल राही**
- सम्मान समारोह-2020 9
  **पदम सिंह सोलंकी**
- पंजाब केसरी लाला लाजपतराय 12
  **कमल नारायण शर्मा**
- हर भारतीय की साँस में बसे सुभाष 13
  **सुभाष चन्द्र कस्वाँ**
- स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता 14
  **डॉ. रिंकू सुखवाल**
- राज्य के पुरस्कृत शिक्षक बने : कोरोना योद्धा 15
  **रामेश्वर प्रसाद शर्मा**
- राष्ट्रीय युवा दिवस पर विशेष 16
  **सुभाष चौधरी**
- दीवार पत्रिका : एक शैक्षिक नवाचार 17
  **रामावतार यादव**
- सिलवर एलीफेंट 18
  **गिरधारी लाल शर्मा**
- भारतीय संस्कृति के प्रकाश स्तंभ : स्वामी विवेकानन्द 19
  **नव प्रभात दुबे**
- पुनः खुलते विद्यालय एवं हमारी साझा जवाबदेही 21
  **सिद्धार्थ कुमार 'गौरव'**
- दृष्टिबाधित बालक-बालिकाओं का अध्ययन हुआ सरल 23
  **हेमेन्द्र कुमार सोनी**
- हम जल बिन अधूरे 24
  **पूनम पाण्डे**
- रसिया महाराज उर्फ बृजमोहन पुरोहित 29
  **घनश्याम स्वामी**
- स्वामी विवेकानन्द एवं शिक्षा 31
  **बृजेश कुमार सिंह**
- साहिब-ए-कमाल गुरुगोविन्द सिंह जी 32
  **बलजिन्द्र सिंह बराड़**
- सिस्टम की समझ 34
  **सुभाष चन्द्र**
- भारतीय गणित को सम्मान आवश्यक 36
  **डॉ. राजेश कुमार ठाकुर**
- समय का प्रबन्ध ही जीवन का प्रबन्ध है 38
  **बिग्रेडियर करण सिंह चौहान**

**स्तम्भ**
- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र : जनवरी, 2021 25
- शिक्षावाणी प्रसारण कार्यक्रम 28
- बाल शिविरा 43-44
- शाला प्रांगण 45-48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

**पुस्तक समीक्षा** 40-42
- नूंवौ सूरज
  लेखिका : श्रीमती बसंती पंवार
  समीक्षक : **पूर्णिमा मित्रा**
- वैचारिक पुष्प गुच्छ
  लेखिका : डॉ. अपर्णा पाण्डेय
  समीक्षक : **डॉ. रविन्द्र मारू**
- लट्टू और डोरी
  लेखक : कमलेश तिवारी
  समीक्षक : **डॉ. प्रमोद कुमार चमोली**

**मुख्य आवरण :**
**नारायणदास जीनगर, बीकानेर**

**विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary**

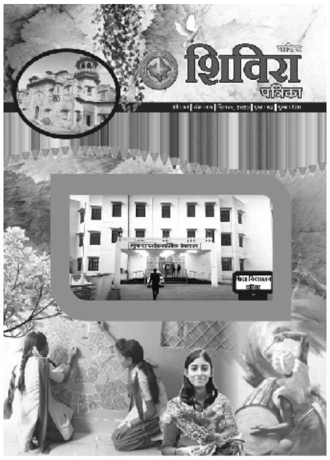


▼ *चिन्तन*

संगच्छध्वं संवद्धध्वं सं
वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे
सञ्जानाना उपासते।।

हम सब एक साथ चलें; एक साथ बोलें; हमारे मन एक हों। प्राचीन समय में देवताओं का ऐसा आचरण रहा इसी कारण वे वंदनीय हैं।

## पाठकों की बात

- मनमोहक चित्रों से सुसज्जित शिविरा दिसम्बर, 2020 मिली। शिविरा का नियमित पाठक होने के कारण 'पाठकों की बात' नियमित रूप से लिखता हूँ चाहे प्रकाशित हो या न हो। 'मेहनत करते जाओ सफलता पाते जाओ।' आलेख के लेखक डॉ. देवेन्द्र सिंह राजावत को हार्दिक बधाई। जिन्होंने इतना प्रेरक उद्बोधन दिया। विचार करके बोलना चाहिए, इसी श्रेणी में परिगणित हो सकता है। विद्यालयों में खेलों का महत्त्व हर शिविरा पाठक के लिए विशेषकर विद्यार्थियों के लिए उपादेय व महत्त्वपूर्ण है, वे इसको अवश्य पढ़ें। बच्चों में सृजनशीलता भी उत्कृष्ट श्रेणी का आलेख है। दिशाकल्प- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की निरंतरता श्रीमान् निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान का भी प्रशंसनीय व अनुकरणीय है। अरुण यह मधुमय देश हमारा शिक्षकों में राष्ट्रीय भावना जाग्रत करेगा। सम्पादक मंडल को हार्दिक बधाई।

**टेकचन्द शर्मा, झुंझुनूं**

- शिविरा दिसम्बर, 2020 का अंक सुन्दर आवरण में प्राप्त हुआ। मंत्री जी व निदेशक महोदय ने अपने कथनों में शिक्षकों का इस कोरोना काल में मार्गदर्शन करते हुए उत्साहवर्धन किया। शिविरा में भूतपूर्व शिक्षा मंत्री मास्टर भंवरलाल जी मेघवाल का जीवन परिचय देते हुए उनकी विशेषताओं से अवगत करवाया। शिविरा हमेशा की तरह साज-सज्जा के साथ उपयोगी एवं जानकारी पूर्ण आलेखों को समेटे हुए शिक्षा जगत की सिरमौर पत्रिका है, जिस पर हर शिक्षक को गर्व होना चाहिए, तथा इसके नियमित सदस्य बनना चाहिए, ताकि किसी से माँगकर न पढ़नी पड़े। शिविरा के स्थाई स्तंभ खासकर बाल शिविरा, शाला प्रांगण से इसका महत्त्व बढ़ा है, शिक्षक, भामाशाह, अभिभावक व छात्र भी अपने समाचारों का प्रकाशन देख हर्षित होते हैं और दूसरों को भी जानकारी देते हैं। सभी विद्यालयों को शाला प्रांगण हेतु अपनी शाला में हुई गतिविधियों एवं नवाचारों को इसमें प्रकाशन हेतु भेजते रहना चाहिए। संपादक टीम को बहुत-बहुत साधुवाद। इस बेहतरीन अंक के लिए।

**विनोद भार्गव, बीकानेर**

- माह दिसम्बर, 2020 का शिविरा अंक समय पर प्राप्त हुआ। रंगीन बहुरंगी आवरण आकर्षक रहा जिसमें निदेशालय भवन के पुराने एवं नए भवन को स्थान देकर निदेशालय की महिमा को बढ़ा दिया। शिक्षा मंत्री जी का अपनों से अपनी बात एवं 'शिक्षक होने का गर्व था जिन्हें' के माध्यम से भूतपूर्व शिक्षा मंत्री मास्टर भंवरलाल जी मेघवाल को शाब्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी उपादेयता एवं खूबियों से भी रूबरू करवाया। निदेशक महोदय के दिशाकल्प : 'मेरा पृष्ठ' के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की निरंतरता के माध्यम से बताया कि उत्साहजनक परिणामों के बाद e-कक्षा कार्यक्रम लाया जाएगा। शिविरा के बेहतरीन आलेखों के संकलन में राजीव गाँधी कॅरियर पोर्टल-विमलेश चन्द्र, विद्यालय में खेलों का महत्त्व-दिनेश चन्द शर्मा, बच्चों की सृजनशीलता-कृष्ण कुमार राजपुरोहित तथा सृजनात्मकता का विकास-डॉ. राकेश कुमार बेहतरीन है। आदेशों की अधिकता की वजह से शायद काफी लेखों को स्थान नहीं मिला है। फिर भी शाला प्रांगण में मय चित्र समाचार, बाल शिविरा व पुस्तक समीक्षा तथा भामाशाह आदि स्थाई स्तंभों ने इसकी पूर्ति करने का बखूबी प्रयास किया। बाल शिविरा के अन्तर्गत नवोदित विद्यार्थी रचनाकारों के चित्रों को आवरण में शामिल कर बहुत ही उत्साहवर्धक कार्य हुआ है जिसके लिए सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई। शिविरा में नवाचारों के प्रेरक शिक्षकों में से किसी एक शिक्षक का हर बार उनके परिवेश के साथ उनके द्वारा विद्यालय प्रांगण में किए जा रहे नवाचारों को लेकर भी एक नया स्तंभ 'शिक्षा नवाचार' आरम्भ किया जाए तो बेहतर होगा।

**मधुप्रिया निर्वाण, हनुमानगढ़**

सत्यमेव जयते

**सौरभ स्वामी**
**निदेशक, माध्यमिक शिक्षा**

**"नई संभावनाओं के साथ हम 2021 में प्रवेश कर रहे हैं। नये उत्साह, उमंग और विश्वास के साथ हम लक्ष्यों की पूर्णता के लिए अपना शत-प्रतिशत देने हेतु दृढ़ संकल्पित हो, निरन्तर कर्म पथ पर अग्रसर रहें।"**

## दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

# नवाचारों की पहल

चुनौतीपूर्ण घटनाओं और विशिष्ट अनुभवों की स्मृतियों के साथ वर्ष 2020 विदा हुआ, पर वह एक अहसास की तरह हमारे मन मस्तिष्क में बसा रहेगा। बीता समय परीक्षाकाल की तरह रहा, जहाँ भौतिक रूप से विद्यालयों में विद्यार्थियों के कक्षा-कक्ष में कक्षाओं का संचालन नहीं हो पा रहा था, पर वहीं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता हमें आश्वस्त कर रही थी कि हम विपरीत परिस्थितियों में भी तप कर सोने की तरह निखरते हैं। मुझे यह तथ्य साझा करने में गर्व है कि राज्य के शिक्षा विभाग (स्कूल शिक्षा) ने अपने विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए उन्नयनकारी शैक्षिक नवाचार अपनाए। e-कक्षा के परिणाम उत्साहजनक रहे। चुनौतियों के मध्य नवाचारों की पहल से राज्य को देश में विशेष मान मिला। विद्यार्थियों को घर पर ही डिजिटल माध्यम से अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवाई गई पाठ्यपुस्तकों, कार्यपुस्तिकाओं की पहुँच के साथ अध्ययन की निरन्तरता एवं व्यापक पहुँच के लिए स्माइल-2 कार्यक्रम का प्रभावी संचालन किया गया।

लॉकडाउन की विशेष परिस्थितियों और उसके बाद भी हमारे शिक्षकों और अभिभावकों ने भामाशाहों के विशेष सहयोग से विद्यालयों के भौतिक स्वरूप को निखारने में अतुलनीय सहयोग किया है। शिक्षा के प्रति समर्पित ऐसे शिक्षकों, अभिभावकों और भामाशाहों को मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ इनकी प्रेरणा से अन्य भामाशाह भी आगे आएंगे। राजकीय विद्यालय आधुनिक संसाधनों से युक्त सही अर्थ में आदर्श और उत्कृष्ट कहलाएंगे।

नई संभावनाओं के साथ हम 2021 में प्रवेश कर रहे हैं। नये उत्साह, उमंग और विश्वास के साथ हम लक्ष्यों की पूर्णता के लिए अपना शत-प्रतिशत देने हेतु दृढ़ संकल्पित हो, निरन्तर कर्म पथ पर अग्रसर रहें।

मुझे विद्यालय समय में गाए जाने वाले प्रेरणागीत की पंक्तियाँ स्मरित हो रही हैं-

**जो बीच राह में बैठ गए वो बैठे ही रह जाते हैं,**
**जो लगातार चलते रहते वो निश्चय मंज़िल पाते हैं।**

अतः हमें लगातार चलते रहना है। लगातार श्रेष्ठ कर्म करते रहना है, लगातार श्रेष्ठ कर्मों के परिणाम सुखद मिलते हैं। आइए हम सभी मिलकर विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने की निरन्तरता के महायज्ञ में अपनी आहुति सुनिश्चित करें। नववर्ष 2021 की सभी को बहुत-बहुत बधाई!

मंगलकामनाएँ!!

**(सौरभ स्वामी)**

विवेकानन्द जयन्ती विशेष

# हमारी महान विरासत - स्वामी विवेकानन्द

❒ रमाकान्त वर्मा

भारत भूमि महापुरुषों के अवतरण के समृद्ध अध्यायों से विश्वपटल पर शोभायमान है। भारत में जब पाश्चात्य की विकृत मानसिकता वाली शिक्षा से नवांकुरों को सिंचित कर गौरवमयी संस्कारों, विशद् ज्ञान विज्ञान को पतन की ओर धकेलने का प्रयास हो रहा था और युवाओं को सही दिशा की नितांत आवश्यकता अनुभव की जा रही थी, उस समय स्वामी विवेकानन्द ने नरेन्द्र नाम धारण कर 12 जनवरी, 1863 को अलौकिक नक्षत्र की तरह भारत की पावन धरा पर अवतरित होकर धन्य किया था। स्वामी विवेकानन्द का पावन स्मरण ऐसे महामानव का स्मरण है, जिसने भारत की महान सांस्कृतिक विरासत से समूची दुनिया को परिचित कराया। ऐसे अवतरण कई सदियों से सुलभ होते हैं। बालक नरेन्द्रनाथ दत्त से स्वामी विवेकानन्द तक अनेक नामों को धारण करते हुए जीवन यात्रा में प्रत्येक नाम को सार्थकता प्रदान की है। विगत दिवसों में सम्पूर्ण विश्व में स्वामी जी के प्रसिद्ध शिकागो व्याख्यान की 125वीं जयन्ती मनाई गई है। किसी व्यक्तित्व के व्याख्यान की जब जयन्ती मनाई जावे तब यह सुनिश्चित हो जाता है कि यह केवल शब्दों का समुच्चय मात्र नहीं है अपितु कालजयी अभिव्यक्ति है। सम्पूर्ण विश्व 12 जनवरी, 2021 को जब विवेकानन्द जयन्ती युवा दिवस के रूप में मना रहा होगा तब हजारों युवाओं, शिक्षाविदों, विद्यार्थियों के लिए स्वामी जी का जीवन वृत्त नवीन ऊर्जा संचरित कर रहा होगा।

बालक नरेन्द्रनाथ का बाल्यकाल आध्यात्मिक वातावरण में पल्वित होकर धैर्य, साहस, सत्यवादिता, जिज्ञासा, सूक्ष्म विश्लेषण, एकाग्रता, सेवा, त्याग के आदर्श भावों से पुष्ट होकर युवावस्था में प्रवेश किया। कॉलेज शिक्षा के दौरान आनन्द शब्द के वर्णन को प्रोफेसर हैस्टी के मुख से सुनने के बाद जैसे जिज्ञासा का ज्वार आ गया हो और नरेन्द्र चले श्री रामकृष्ण

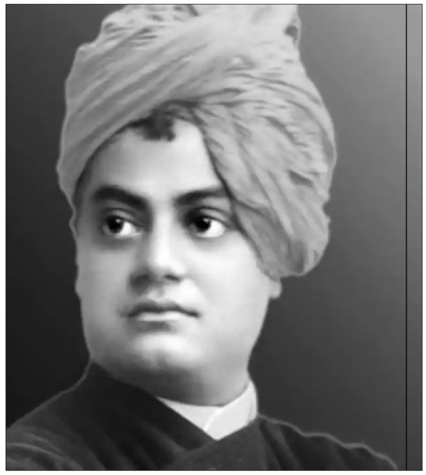

देव के सान्निध्य में कोलकाता के दक्षिणेश्वर काली मंदिर के पुजारी के पास जहाँ प्रथम प्रश्न, क्या आपने ईश्वर को देखा है? हाँ देखा है जितना तुम को देख रहा हूँ-गुरु के साथ यह प्रथम जिज्ञासा को तृप्त करने देने वाला संवाद ही था जिससे युगपुरुष विवेकानन्द की ओर बढ़ने की यात्रा शुरू होती है।

रामकृष्णदेव के सान्निध्य में प्रकृति अन्वेषण, ब्रह्माण्ड रहस्य, ध्यान साधना करते हुए ईश्वर साक्षात के एकमेव परम लक्ष्य को अर्जित करने के साथ ही गुरु के आदेशानुसार समस्त विश्व को परम लक्ष्य अर्जन के मार्ग को प्रशस्त करने हेतु भारत की विविधता, सांस्कृतिक मूल्यों, दर्शन, दुःख दर्द की आत्मानुभूति के लिए भ्रमण हेतु परिव्राज्रकावस्था के लिए बंगाल, बिहार, हिमाचल, कश्मीर, राजस्थान व गुजरात प्रदेश के साथ ही दक्षिण भारत का भ्रमण कर भारत की आत्मा के अन्तर्दर्शन किए। इसी क्रम में राजस्थान की तत्कालीन खेतड़ी रियासत के वृत्तांत विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अरावली की वादियों में हरितिमा, शांति, न्यायप्रिय शासन व्यवस्था के साथ ही एक सुयोग्य राजा बहादुर अजीतसिंह की शासन व्यवस्था से सज्जित था में स्वामीजी पधारे। स्वामी विवेकानन्द का अपने जीवनकाल में तीन बार खेतड़ी आगमन हुआ खेतड़ी से ही राजा अजीतसिंह के द्वारा मित्रवत् निवेदित आर्थिक सहयोग को उत्साहपूर्वक स्वीकार कर स्वामीजी ने अमेरिका के शिकागो में आयोजित सर्वधर्म महासभा के लिए प्रस्थान कर भारत की महान आध्यात्मिक विरासत को विश्व पटल के उच्चासन पर प्रतिष्ठित कर स्वदेश लौटे थे।

अमेरिका से लौट कर खेतड़ी पुनः आगमन पर स्वामीजी का खेतड़ी में नयनाभिराम भव्य स्वागत किया गया जिसमें हर किसी कि आँखें इस दुर्लभ दृश्य को देखने की प्रसन्नता की विपुल तरंगों के आनन्दोत्सव में आप्लावित हो रही थी। आज भी खेतड़ी लौटने के पावन दिवस 12 दिसम्बर को खेतड़ी **'विरासत दिवस'** के रूप में मना कर स्वागत के दृश्यों को साकार किया जाता है। खेतड़ी रहते हुए राजाजी को भौतिक शास्त्र, गणित, खगोल विज्ञान, भाषा सरीखे विषयों को पढ़ाते और घण्टों अध्यात्म चर्चा करते हुए स्वामीजी एकाग्रता के अभ्यास पर बल देते थे यही वह स्थान है जहाँ से स्वामी विदिशानन्द ने राजा के आग्रह पर विवेकानन्द नाम स्वीकार किया था, अमेरिका प्रस्थान से पूर्व राजस्थानी साफा, अंगरखा बड़े स्नेह से स्वामीजी ने स्वीकार कर राजस्थान की धरा को इतिहास के पन्नों में आदरणीय स्थान देने का सौभाग्य हमें प्रदान किया। खेतड़ी के राजभवन में राजा के पुत्र जन्मोत्सव पर एक नर्तकी के मुँह से मीरा बाई के प्रसिद्ध पद-प्रभु जी मोरे अवगुण चित्त न धरो... सुनकर उसे माँ कह कर संबोधित किया और सर्वत्र ब्रह्म से साक्षात भी किया। अनेक घटनाओं का साक्षी रहा है खेतड़ी कस्बा। सामान्य रूप से देखने पर यह सब मानवीय क्रियाएँ प्रतीत होती है, परन्तु सूक्ष्म चिंतन से देखने पर स्वामी के जीवन की प्रत्येक घटना स्रष्टा द्वारा विश्व का मार्ग प्रशस्त करने का महान आध्यात्मिक अनुष्ठान जान पड़ता है। स्वामी

विवेकानन्द कहते थे-मैं और राजा अजीत सिंह दो शरीर एक आत्मा हैं, हमारा जन्म एक-दूसरे के पूरक के रूप में हुआ है; मैं जो कुछ भारत वर्ष के उत्थान के लिए कर पाया वह नहीं कर सकता था, यदि राजा अजीतसिंह नहीं होते' यह भी एक ईश्वरीय संयोग ही कहा जाएगा कि दोनों ही दिव्यात्माओं का देह त्याग 39 वर्ष की अल्पायु में हुआ था। वर्तमान में खेतड़ी में स्वामीजी के सम्पूर्ण जीवन वृत्त को साकार करता राष्ट्रीय स्तर का 'अजीत विवेक संग्रहालय' देश-विदेश के मानव संसाधन को स्वामीजी के विचारों से अनुप्राणित कर रहा है। स्वामीजी के विषय में जानना एक शोध है, एक जीवन जीना है, भारत की आत्मा को जानना है और सर्वाधिक उपयोगी अपने दिव्य स्वरूप को जानकर परम लक्ष्य का अर्जन करना है। स्वामीजी की वाणी-चिंतन-मनन-दर्शन पूर्ववर्ती समय में जितने प्रासंगिक थे आज भी उतने ही सार्थक हैं। स्वामीजी ने अपने अनुभूत ज्ञान से शिक्षा, सामाजिक समन्वय, मूल तत्व पर हमारा मार्गदर्शन करने के विचारों का अकूत समृद्ध भण्डार विरासत के रूप में संजोया है।

स्वामीजी के कृतित्व व व्यक्तित्व के परिप्रेक्ष्य में एक गुरु, चिंतक, वैज्ञानिक, प्रबंधक और सन्यासी योद्धा-एक समग्र व्यक्तित्व ही कहा जाएगा। स्वामी जी ने शिक्षा पर सर्वाधिक बल देते हुए कहा है कि-शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे सद्चरित्र का गठन हो सके बाकी सब अपने आप हो जाएगा। स्वामी जी के शिक्षा विषयक विचारों को आत्मसात करने से ही हमारे विद्यार्थियों में विशुद्ध राष्ट्रीय चरित्र का प्रकटीकरण हो सकेगा तब शिक्षा केवल जीविकोपार्जन का साधन मात्र नहीं रहेगी अपितु व्यक्ति को सम्पूर्ण रूप से आलोकित करेगी। यहाँ व्यक्ति शब्द का शब्दकोशीय तात्पर्य ग्रहण नहीं होगा, आनुभाविक होगा स्वामी जी के दर्शन से व्यक्ति अर्थात जो व्यक्त हो सके-मनुष्य में जो है वह व्यक्त हो सके-मनुष्य ब्रह्माण्ड की अनन्त शक्ति का स्वामी है, ज्ञान से पूर्ण है, दिव्य स्वरूप है, परम शुद्ध है- यह सब हो जाने से क्या शेष बचेगा। इसलिए यह अकिंचित संदेह के कहा जा सकता है कि शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे जीवन की सार्थकता है।

वर्तमान में सांस्कृतिक व चारित्रिक मूल्यों का गठन करने के लिए स्वामी जी को जानना हमारे युवाओं के लिए आवश्यक हो गया है। तब अपराध, नैतिक ह्रास, धार्मिक मतभेद, अकर्मण्यता का, अपने आप समाधान हो जाएगा। हमारे बच्चों को स्वामी जी के अमेरिका के सम्बोधन को पढ़ना चाहिए, ऐसा हो भी क्यों नहीं यह भाषण मात्र नहीं गुरु रामकृष्णदेव की वाणी का ही तो प्रकटीकरण है जिसमें स्वामीजी एक माध्यम है। स्वामीजी के विचारों को प्रतिष्ठालब्द्ध अग्रगण्य मनीषियों यथा-रामधारी सिंह दिनकर, मुंशी प्रेमचंद, सूर्यकांत त्रिपाठी, रोमॉ रोलॉ, एडवर्ड, मैक्समूलर, पं. झाबरमल, आलसिंगा पैरूमल, सुमित्रानंदन पंत अनेक ने अपनी कलम से गुणगान करके समाज को जागृत किया है।

मैं अनुभव के आधार पर यह दृढ़तापूर्वक विचार लिपिबद्ध करता हूँ कि बाल्यकाल से ही स्वामीजी का जीवन जानने से हमारा राष्ट्र महान गुणों से सम्पन्न मानव संसाधन से विभूषित होगा। दीर्घकाल तक रामकृष्णदेव की वाणी एवं स्वामीजी के विचारों से जीव जगत प्राणवान रहने के लिए सर्वविदित है कि स्वामीजी ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी। स्वामी जी ने अपने अंतिम समय में कहा था- मैं सूक्ष्म स्वरूप में तब तक धरा पर मौजूद रहूँगा जब तक समस्त जीव जगत को एकात्मता का अनुभव नहीं हो जाता। विवेकानन्द के समग्र व्यक्तित्व को शब्दों की सीमा में परिबद्ध करना संभव नहीं जान पड़ता-जीना होगा जीवन चरित्र में तभी जान पाएँगे। स्वामी जी के महान कथन-**''उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य को प्राप्त न कर लो''** इसमें जागो शब्द का अनुभव करें-यदि हमने यह जाना तो हम स्वामी जी को आत्मसात करने की दिशा में बढ़ रहे हैं। आइए हम स्वामी विवेकानन्द की महान विरासत संजोने का संकल्प करें।

जयसिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
खेतड़ी, झुंझुनूं (राज.)-335503
**मो: 8114467895**

## समय के पास एक आश्वासन है

संसार की महानतम उपलब्धियां उन लोगों ने हासिल कीं, जो थके और हताश थे, पर जिन्होंने अपना काम जारी रखा। कहते हैं-तुलसीदास जब रामचरितमानस लिख रहे थे, तब काशी के लोगों ने उनके लिए एक के बाद एक मुश्किलें खड़ी कीं, पर उनकी अदम्य रचनाशक्ति ने विजय प्राप्त की।

यह एक पुरानी दुनिया की मिसाल है। आज के संसार में सब कुछ बदला हुआ-सा है। बदलता जा रहा है। भावनाएं, संबंध, विश्वास, उम्मीदें... उन शक्लों में नहीं हैं, जिनमें उन्हें देखने-पहचानने के हम अभ्यस्त रहे हैं। लगता है कि यह समय बड़ा कठिन है, असह्य और दूभर है।

पर समय की परतों में कुछ और भी हो रहा है। शायद यह कठिन समय किसी आगामी जीवन की सृजन-स्थली भी है। मनुष्य के जीवन में बहुत कुछ नया शामिल हो रहा है। इस नए का संपूर्ण गुणा-भाग-जमा होने के बाद शायद एक दूसरी दुनिया सामने होगी। मनुष्य के बहुत सारे बंधन ढीले पड़ रहे हैं। 20वीं सदी के तपते मध्याह्न तक यह लगभग तय दिखता था कि कोई तीसरा विश्वयुद्ध होगा और संसार खत्म हो जाएगा। ऐसा नहीं हुआ।

हमारा समय बहुत सारे अंतर्विरोध से भरा है-व्यक्तियों के लिए यह समय शायद मुश्किल हो, समाजों, देशों और समूहों के लिए भी वक्त के पास ढेरों कठिनाइयां हों, पर धरती पर जीवन निश्चित रूप से एक संक्रमण से गुजर रहा है। जो भी व्यक्ति, देश, समाज, समूह इसकी आहट सुन सकेंगे और इस आहट को अपना प्रत्युत्तर देंगे, उनके लिए धरती के पास एक हंसी और समय के पास एक आश्वासन है।

हमारे छोटे-छोटे कार्यों में, हमारे संबंधों और दृष्टिकोणों में जितनी ही यह बात झलकेगी, वह आगामी काल उतना ही निकटतर आता जाएगा। फिर समय के साथ हमारा संबंध वही नहीं रह जाएगा, न ही जीवन के साथ हम वैसा व्यवहार कर पाएंगे, जिसका अभ्यास सदियों से हमने पाल लिया है।

21वीं सदी का दूसरा दशक बीत गया-कितनी जल्दी और कितनी गति के साथ! हमारी देहरी पर खड़ा नया दशक शायद यह कहना चाहता है कि-'शुभकामनाएं और आशा के संदेश तो गुजरे संसार की बातें हैं। प्रियवर, मुझे पहचानों, मुझे जियो और मुझे अर्थ दो। तुम्हारा हर्ष और उम्मीदें-सिर्फ इसी एक बात पर निर्भर है कि अपने जीवन से कितना अर्थ तुम मुझमें भर पाते हो।'

जयन्ती विशेष

# बुलंद हौंसलों के धनी नेताजी सुभाष

❐ रामगोपाल राही

स्वतंत्रता के लिए जितना बड़ा त्याग व संघर्ष नेताजी सुभाष ने किया, ऐसा शायद ही अन्य किसी नेता ने किया हो। स्वतंत्रता के लिए नेताजी निरंतर सक्रिय व संघर्षरत रहे।

कुशल संगठनकर्ता एवं वक्ता नेताजी 1938 में अखिल भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। नेताजी के अध्यक्ष चुने जाने की खुशी में बड़े उत्साह से 51 बैलों की जोड़ी से जुते विशाल रथ में शोभा यात्रा का जुलूस निकाला गया था।

कुछ समय बाद वैचारिक मतभेदों के चलते, नेता सुभाष ने पार्टी व अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया और फारवर्ड ब्लाक पार्टी बनाई, स्वतंत्रा के लिए संघर्षरत रहे। इसी के चलते नजरबंदी के दौरान साहसी नेता जी वेश बदलकर निकले और जर्मनी पहुँच गए। वहाँ दुनिया के सर्वशक्तिमान शासक हिटलर से मिले। हिटलर शत्रु राष्ट्र इंग्लैंड के प्रति नेताजी के मंसूबों से बड़ा खुश हुआ और नेताजी को बिना शर्त आर्थिक सहयोग करने की घोषणा कर दी।

नेताजी सुभाष ने वहीं बर्लिन में आजाद भारत केंद्र संगठन बनाया, साथ ही वहीं आजाद हिंद रेडियो की स्थापना की। आजाद भारत केन्द्र संगठन की पहली बैठक हुई उसकी अध्यक्षता नेताजी सुभाष ने की। संगठन की बैठक में चार निर्णय हुए। बैठक के दो निर्णय आज भी नेता जी की याद ताजा करते हैं। आजाद भारत के अभिवादन के लिए जय हिंद शब्द का प्रयोग तभी से आरंभ हो गया, जयहिंद आज भी बोला जाता है। दूसरा निर्णय था इस बैठक के बाद आज से ही देशभक्त सुभाष को नेताजी कहकर के पुकारा जाएगा। देश स्वतंत्र कराने के लिए नेताजी की गतिविधियाँ काफी बढ़ गई थी।

देशभक्ति का जज्बा कोई सीखे तो नेताजी से सीखे। दूसरे विश्व युद्ध में नाजी सेना (जर्मनी सेना) को पीछे हटना पड़ा, झुकना पड़ा इसके चलते अब जर्मनी से सहयोग की उम्मीद नहीं थी।

बुलंद हौसलों के धनी नेताजी की अपनी नीति थी कि अभी नहीं तो कभी नहीं, अपनी इसी नीति के अनुसार नेताजी ने जापान के शासक से संपर्क किया। सकारात्मक संदेश पाकर के नेताजी जापान के लिए रवाना हुए। नेताजी की जर्मनी से जापान की यात्रा उस समय

चमत्कार से कम नहीं थी। यह यात्रा नेताजी की देशभक्ति, संकल्प, उनके अदम्य साहस की गाथा है।

अंग्रेजों ने दुनिया भर में नेताजी की चौकसी कर रखी थी। इसलिए नेताजी समुद्र मार्ग से जर्मनी से जापान के लिए 9 फरवरी 1943 को जर्मन पनडुब्बी यू 180 से गुप्त रूप से रवाना हुए। यह पनडुब्बी शत्रु राष्ट्र इंग्लैंड के समुद्र में अंदर ही अंदर चक्कर लगाकर अटलांटिक महासागर में पहुँची। उधर जापानी पनडुब्बी आई 29 मलेशिया के निकट से पेनाम द्वीप से 20 अप्रैल 1943 को नेताजी को लेने के लिए रवाना हुई। 28 अप्रैल को मेडागास्कर समुद्र की अत्यधिक गहराई में दोनों पनडुब्बी आ पहुँची। संकेतों से पुख्ता व्यवस्था कर नेताजी रबर की नौका में जल्दी से जा बैठे–और तत्क्षण तेजी के साथ जापानी पनडुब्बी में जा बैठे।

नेताजी की जर्मनी से जापान की यह यात्रा 90 दिनों में पूरी हुई थी। दूसरे विश्व युद्ध के समय एक पनडुब्बी से दूसरी पनडुब्बी में स्थानांतरण की यह विश्व की एकमात्र घटना थी। देश भक्ति में जान की बाजी लगाने का ऐसा साहस शायद ही किसी नेता ने किया हो।

नेताजी सुभाष स्वतंत्रता के क्रम में विदेश में काफी सक्रिय रहे थे। इसी के तदनंतर सिंगापुर के विशाल पार्क में एक विशाल जनसभा हुई जिसमें रासबिहारी बोस ने जो विदेश में स्वतंत्रता के सक्रिय संगठन चला रहे थे। अपना संगठन आई.आई.एल. का नेतृत्व नेताजी को सौंप दिया। यहीं पर आजाद हिंद फौज की कमान, विधिवत नेता जी के हाथ में आयी थी। कहा जाता है कि इस अवसर पर सभा में नेताजी को पहनाई गई मालाओं से ट्रक भर गया था। यह भी कहा जाता है कि मालाओं की नीलामी से उस समय 25 करोड़ की राशि मिली थी। पहली माला मलाया के उद्योगपति हबीबुर्रहमान ने एक करोड़ तीस लाख में खरीदी। दूसरी माला बनारस के शेख ने अपनी सारी संपत्ति दी लेकिन नहीं खरीद सका। बोली बढ़ गई थी उसने नेता जी के पैर छूकर कहा मैं माला नहीं खरीद सकूंगा मेरी यह सारी संपत्ति आप ले लीजिए और मुझे आजादी की लड़ाई में सम्मिलित कर लें। उसी सभा में एक बुढ़िया अपने जवान बेटे को लेकर नेताजी से मिली कहा– मेरा सभी कुछ यह बेटा है। आप मेरे इस बेटे को आजादी की लड़ाई में सम्मिलित कर लें, मैं अपने को भाग्यशाली समझूंगी। यह सुन नेताजी की आँख में आँसू आ गए। नेताजी ने बुढ़िया के पैर छुए और उसकी सबसे बड़ी बोली घोषित की। इस अवसर पर कई महिलाओं ने अपने मंगलसूत्र दे दे कर मालाएँ खरीदी थी।

विश्वयुद्ध में जर्मनी और जापान की हार हुई। इन्हीं संदर्भों में नेताजी सुभाष बैंकांग से विमान द्वारा जापान जा रहे थे कहा जाता है विमान में आग लग गयी और उसमें नेताजी की मृत्यु हो गयी। इस तरह की घोषणा उस समय जापान रेडियो से हुई थी।

नेताजी के स्वतंत्रता के क्रम में काफी आक्रमक हो सक्रिय रहे। नेताजी सुभाष का त्याग संघर्ष, इतिहास की अमर गाथा है। देश व दुनिया में नेताजी का नाम है। हमारा देश नेताजी को कभी नहीं भूल सकता।

व्याख्याता (सेवानिवृत्त)
वार्ड-4, पो. लाखेरी, बूंदी (राज.) 323615
**मो: 8239604477**

## शिक्षा विभागीय (राज्य स्तरीय) मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी

# सम्मान समारोह-2020

❒ पदम सिंह सोलंकी

शिक्षा विभाग के कार्यालयों की आधार-भूत सरंचना में विशिष्ट योगदान देने वाले एवं विभाग की योजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्वयन में नींव की ईंट के रूप में सहयोग देने वाले मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों के लिए 16 दिसंबर 2020 का दिन एक मील के पत्थर के रूप में स्मरणीय रहा।

इस दिन प्रात 11.00 बजे वेटरनरी ऑडिटोरियम हॉल राजूवास बीकानेर में 28 वाँ शिक्षा विभागीय राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी पुरस्कार व सम्मान समारोह 2020 का भव्य आयोजन हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय श्री भंवर सिंह भाटी उच्च शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) राजस्व उपनिवेशन कृषि सिंचित क्षेत्रीय विकास एवं जल उपयोगिता, राजस्थान सरकार जयपुर की उपस्थिति ने इस कार्यक्रम को और अधिक गरिमापूर्ण बना दिया। इसके अतिरिक्त बीकानेर जिले के नवनियुक्त जिला प्रमुख श्री मोडाराम जी ने भी इस कार्यक्रम में शिरकत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता में सुशोभित रहे श्रीमान सौरभ स्वामी निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर। सम्मान समारोह के अन्य विशिष्ट अतिथियों में शामिल रहे श्री नमित मेहता जिला कलक्टर, बीकानेर, अतिरिक्त जिला कलक्टर श्री ए.एच. गौरी, अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्रीमती रचना भाटिया अतिरिक्त निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा श्री अशोक सांगवा।

हर साल शिक्षा निदेशालय की स्थापना दिवस पर आयोजित किया जाने वाला सम्मान का यह ओजस समारोह शिक्षा विभाग के राज्य भर के कार्यालयों स्कूलों में कार्यरत उन कार्मिकों को सम्मानित करता है जिन्होंने अपनी मेहनत, लगन व जुनून से अपने पदीय दायित्वों के निर्वहन में विगत वर्षों में श्रेष्ठता के नए मानक स्थापित कर विभाग को नए आयाम दिए हैं।

अतिथियों को भारत स्काऊट एवं गाइड के छात्र-छात्राओं द्वारा सलामी देकर स्वागत किया गया एवं शिक्षा विभाग की अलका चारण द्वारा श्रीमान भंवर सिंह भाटी जी का, मोनिका द्वारा श्री मोडाराम जी का एवं सुरभि द्वारा श्री नमित मेहता का तिलक लगाकर स्वागत किया गया। तत्पश्चात माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर मुख्य अतिथि श्रीमान भंवर सिंह भाटी एवं मंचस्थ अतिथियों के द्वारा समारोह का शुभारंभ किया गया। हिन्दुस्तान स्काउट एवं गाइड की बालिकाओं द्वारा सरस्वती वंदना गान किया गया। कार्यक्रम में प्रथम चरण के अन्तर्गत श्रीमती इन्दिरा व्यास एवं श्रीमती प्रीति कलवानी द्वारा सभी सम्मानित कर्मचारियों का तिलक लगाया गया एवं श्री श्याम सुन्दर सोलंकी, संयुक्त निदेशक-कार्मिक, श्री शिवप्रसाद, संयुक्त निदेशक, श्री पितराम जी काला, उपनिदेशक-प्रशासन, एवं श्री सुभाष महलावत, उपनिदेशक द्वारा कर्मचारियों को साफा, बैज, माला एवं श्रीफल देकर कार्यक्रम की शुरूआत की गई।

गरिमामय मंच पर उपस्थित अतिथियों द्वारा सम्मानित होने वाले कर्मचारियों के सम्मान में प्रकाशित 'प्रशस्ति पुस्तिका' का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर विभाग की ओर से स्वागत भाषण निदेशालय के लोकप्रिय एवं अनुभवी वरिष्ठ कर्मचारी श्री आनन्द कुमार साध वरिष्ठ सहायक (प्रदेशाध्यक्ष राजस्थान शिक्षा विभागीय संयुक्त कर्मचारी संघ) द्वारा दिया गया। पधारे हुए सभी अतिथियों व राज्य भर से सम्मानित होने वाले साथी कार्मिकों को बधाई व उपस्थित अतिथियों व आगन्तुकों का आभार एवं अभिनंदन करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस अवसर पर श्री साध द्वारा सम्मान समारोह का प्रारंभिक परिचय दिया गया।

राज्य स्तरीय इस सम्मान समारोह में इस बार 40 कार्मिकों को उनकी श्रेष्ठतम सेवाओं के लिए राज्य भर से चयनित किया गया। राजस्थान राज्य के सबसे बड़े शिक्षा विभाग के माला के ये मनके बारी-बारी से उपस्थित अतिथियों के कर कमलों से सम्मानित किए गए।

अपनी तरह के बिरले एवं भव्य स्तर के इस सम्मान समारोह में श्रेष्ठ कार्मिकों को सम्मानित करने का मंच क्रम चयन इस प्रकार रखा गया कि मंचस्थ अतिथियों द्वारा क्रमशः 11,000 रुपये का चैक, प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति पत्र, एवं शॉल सम्मानित होने वाले कार्मिक को भेंट कर सम्मान समारोह का द्वितीय चरण आरम्भ किया गया। सम्मानित होने वाले कर्मचारियों के सम्मान में साथी कर्मचारियों एवं पारिवारिक सदस्यों द्वारा सम्पूर्ण सभागार को करतल ध्वनि से गुजांयमान किया गया।

## शिक्षा विभागीय (राज्य स्तरीय) मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी पुरस्कार एवं सम्मान समारोह-2020 में सम्मनित हुए कार्मिकों की सूची

1. **श्री शैलेन्द्र सिंह राजपूत,** वरिष्ठ सहायक
कार्या. जिशिअ. मुख्यालय माशि. प्रतापगढ़।
2. **श्री गिरीराज छंगाणी,** वरिष्ठ सहायक
कार्या. निदेशक माध्यमिक शिक्षा राज., बीकानेर।
3. **श्री राजकुमार बजाज,** वरिष्ठ सहायक
राउमावि. अरनिया पंथ, चित्तौड़गढ़।
4. **श्री भूपेन्द्र कुमार शाक्यवार,** सहा. प्रशासनिक अधिकारी
राउमावि. कैथून कोटा।
5. **श्री घनश्याम यादव,** वरिष्ठ सहायक
कार्या. जिशिअ. मुख्यालय माशि. अलवर।
6. **जनाब असलम जमाँ खाँ पठान,** सहा. प्रशासनिक अधिकारी
राउमावि. कनेरा, पं.स. निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़।
7. **श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ला,** वरिष्ठ सहायक
राउमावि. भैंसा, भरतपुर।
8. **श्री दिनेश कुमार परिहार,** अति. प्रशासनिक अधिकारी
कार्या. संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, पाली।
9. **श्री शान्तिलाल खत्री,** सहा. प्रशासनिक अधिकारी
कार्या. जिशिअ. मुख्यालय माशि. सिरोही।
10. **श्री पुखराज प्रजापत,** सहा. प्रशासनिक अधिकारी
कार्या. निदेशक प्रारंभिक शिक्षा राज., बीकानेर।
11. **श्री हरिराम रावल,** सहा. प्रशासनिक अधिकारी
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, (अं. मा.) जावाल, सिरोही।
12. **श्री प्रभुदयाल गुप्ता,** वरिष्ठ सहायक
कार्या. जिशिअ. मुख्यालय, प्रारम्भिक सवाई माधोपुर।
13. **श्री अशोक कुमार सिसोदिया,** सहा. प्रशासनिक अधिकारी
कार्या. जिशिअ. मुख्यालय माशि. पाली।
14. **श्री कन्हैया लाल गुप्ता,** सहा. प्रशासनिक अधिकारी
कार्या. संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा जयपुर।
15. **श्री अरुण कुमार,** निजी सहायक
कार्या. मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, समग्र शिक्षा भरतपुर।
16. **श्री अश्विनी कुमार जोशी,** वरिष्ठ सहायक
कार्या. जिशिअ. मुख्यालय माशि. डूँगरपुर।
17. **श्री पदम कुमार गुप्ता,** सहा. प्रशासनिक अधिकारी
राउमावि. सीमल्या, कोटा।
18. **श्री अखिलेश कुमार शर्मा,** वरिष्ठ सहायक
कार्या. संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, भरतपुर।
19. **श्री विकास कोठारी,** सहा. प्रशासनिक अधिकारी
कार्या. जिशिअ. मुख्यालय मा. शिक्षा, भीलवाड़ा।
20. **श्री सूरजमल,** कनिष्ठ सहायक
कार्या. संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, अजमेर।
21. **श्री मुकेश व्यास,** वरिष्ठ सहायक
कार्या. संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा कोटा।
22. **श्री रामकुमार घलोटिया,** सहा. प्रशा. अधिकारी
राबाउमावि., पीलीबंगा, हनुमानगढ़।
23. **श्री नरपतसिंह राजावत,** वरिष्ठ सहायक
डाइट, झालरापाटन, झालावाड़।
24. **श्री किशोर कुमार सोलंकी,** सहा. प्रशासनिक अधिकारी
कार्या. निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राज. बीकानेर।
25. **श्री नरसिंह राम कड़ेला,** सहा. प्रशासनिक अधिकारी
कार्या. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, मण्डोर, जोधपुर
26. **श्री भवानी शंकर आचार्य,** सहा. प्रशासनिक अधिकारी
कार्या. संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा बीकानेर।
27. **श्री मुकेश यादव,** वरिष्ठ सहायक
कार्या. संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा जयपुर।
28. **श्री हरिराम शर्मा,** सहा. कर्मचारी
रामावि. नंगला रायसिस, किशनगढ़ बास, अलवर।
29. **श्री शेखर शर्मा,** सहा. प्रशासनिक अधिकारी
राउमावि. काजड़ा, झुंझुनूं।
30. **श्री सुरेशचन्द भण्डिया,** सहा. प्रशासनिक अधिकारी
कार्या. जिशिअ. मुख्यालय मा. शिक्षा भीलवाड़ा।
31. **जनाब असद मलिक,** वरिष्ठ सहायक
कार्या. सीबीईओ. मालपुरा, टोंक।
32. **श्री अनिल कुमार,** सहा. प्रशासनिक अधिकारी
राबाउमावि. पक्का सारणा, हनुमानगढ़।
33. **श्री सवाई सिंह,** वरिष्ठ सहायक
कार्या. जिशिअ. मुख्यालय माशि. बाड़मेर।
34. **जनाब इनायत अली,** वरिष्ठ सहायक
कार्या. निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
35. **श्री दुर्जन सिंह,** वरिष्ठ सहायक
कार्या. जिशिअ. मुख्यालय, माशि. बाड़मेर।
36. **श्री राजेश कुमार,** वरिष्ठ सहायक
राउमावि. डाबड़ी, हनुमानगढ़।
37. **श्री मुकेश शर्मा,** वरिष्ठ सहायक
कार्या. संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा चूरू।
38. **श्री दिनेश कुमार सोलंकी,** वरिष्ठ सहायक
कार्या. सीबीईओ. बावड़ी, जोधपुर।
39. **श्री झंवरलाल मारू,** सहायक कर्मचारी
कार्या. निदेशक माध्यमिक शिक्षा राज., बीकानेर।
40. **जनाब इफ्तेखार अली,** वरिष्ठ सहायक
कार्या. अति. जिला परियोजना समन्वयक (समसा), चूरू।

- **निदेशक महोदय द्वारा विशेष सम्मान**
**हरिमोहन जाट** (बिजली मिस्त्री संविदा)
सेवानिवृत्ति पश्चात सतत सेवा

राज्य भर से अलग-अलग स्थानों से सम्मानित होने वाले कार्मिकों के सम्मान के साथ-साथ निदेशक महोदय ने हरिमोहन जाट को विशेष सम्मान प्रदान किया। उल्लेखनीय है कि हरिमोहन जाट ने विभाग में अपनी सुदीर्घ सेवाएँ दी। सेवानिवृत्ति उपरांत भी विभाग की सतत सेवा कर रहे हैं।

विशिष्ट एवं श्रेष्ठ कार्मिकों के सम्मान के इस अवसर पर मुख्य अतिथि **माननीय श्री भंवरसिंह भाटी** उच्च शिक्षा राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार, राजस्व उपनिवेशन कृषि सिंचित क्षेत्रीय विकास एवं जल उपयोगिता, राजस्थान सरकार, जयपुर द्वारा अपने आतिथ्य उद्‌बोधन में राज्य सरकार द्वारा गत दो वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा गया कि मंत्रालयिक कार्मिक और सहायक कर्मचारी शिक्षा विभाग की मुख्य कड़ी हैं, इनके उत्कृष्ट कार्यों का सम्मान अपने आप में सराहनीय है। गत वर्ष के कार्यक्रम में माननीय शिक्षा राज्य मन्त्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गोविन्द सिंह डोटासरा द्वारा सम्मानित होने वाले कार्मिकों को 11,000 रुपये नकद पुरस्कार देने घोषणा की सराहना की और कहा कि राज्य सरकार कार्मिकों के हित में निर्णय लेकर उनकी समस्याओं का समाधान कर रही है। कर्मचारियों का सम्मान एक स्वस्थ परम्परा है, जो कर्मचारियों को अथक परिश्रम, लगन और निष्ठा से कार्य करने की प्रेरणा देती है।

जिला कलक्टर **श्री नमित मेहता** ने मंत्रालयिक कर्मचारियों की सेवाओं की तारीफ में कहा कि यह सम्मान केवल 40 कार्मिकों का सम्मान नहीं वरन समूचे शिक्षा विभाग का सम्मान है, साथ ही यह भी कहा कि पुरस्कृत कार्मिकों से अन्य कार्मिक प्रेरणा लेकर नए जोश और निष्ठा से विभाग की प्रगति के लिए कार्य करेंगे। उन्होंने कोविड काल में शिक्षा विभाग के सहयोग की तारीफ भी की।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन के लिए **श्रीमान सौरभ स्वामी**, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान द्वारा सम्मानित होने वाले कार्मिकों को बहुत-बहुत बधाई देते हुए कहा कि कठोर परिश्रम, लगन और श्रेष्ठ कार्यों की बदौलत सम्मानित होने वाले यह कार्मिक हमारे ब्रांड एम्बेसडर के रूप में अन्य कर्मचारियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनेंगे। उन्हें विभाग की नींव की ईंट की उपमा दी गई। उन्होंने मंत्रालयिक कार्मिकों की उपादेयता व प्रभावशीलता के संदर्भ में यह भी उल्लेखित किया कि विभाग के कार्मिकों के कठिन परिश्रम से किए गए कार्य की प्रशंसा व श्रेय अधिकारीगण को मिलता है। मंत्रालयिक कार्मिक हमेशा पृष्ठभूमि में कार्यरत रहते हुए सतत व निरंतर कर्मशील रहते हैं। उनके द्वारा कहा गया कि आपका कार्य पूरे राज्य में शिक्षा विभाग के कार्मिकों में मिसाल बने और आपकी प्रेरणा पाकर वे कार्य व अपने पदीय दायित्वों के प्रति अधिक सजग श्रेष्ठ व ऊर्जावान बनें ऐसे प्रयास, अन्य कार्मिकों द्वारा भी किए जाने चाहिए। उन्होंने आयोजन में सम्मिलित अधिकारी, कार्मिकों की भी प्रशंसा करते हुए आयोजन को सराहनीय व श्रेष्ठ बताया।

सम्मान समारोह में प्रभावी मंच संचालन श्रीमती प्रीति जलापिया, सहायक निदेशक एवं श्री मदन मोहन मोदी, वरिष्ठ सहायक द्वारा लयबद्ध तरीके से किया जाकर कार्यक्रम को निरन्तर रोचक एवं गरिमापूर्ण बनाए रखा।

इस प्रकार वर्ष 2020 का शिक्षा विभागीय (राज्य स्तरीय) मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह अपनी भव्यता, कोविड गाइड लाईन पालन एवं सम्मानित कर्मचारियों को 11,000/-नकद राशि के सम्मान दिए जाने के नए आयाम स्थापित करते हुए राष्ट्रगान के साथ पूर्ण हुआ।

वरिष्ठ सहायक
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर
**मो: 9460269942**

## सीख

तालाब में कमल और तट पर गुलाब, दो फूल खिल रहे थे। दोनों भले प्रतीत हो रहे थे।

गुलाब के फूल ने अकड़कर कहा-"कमल जी! तुम भी हो तो इतने बड़े, पर सुगंध इतनी कम क्यों देते हो, देखो मेरी महक मीलों तक दौड़ी जा रही है।"

कमल ने हँसकर कहा-"भाई गुलाब! बुरा मत मानो, हम दोनों का एक ही उद्‌देश्य है, आप सुगंध बिखरते हैं और हम सौंदर्य। दोनों मिलकर जो काम कर रहे हैं, वह एक नहीं कर सकता।"

गुलाब अपने दोष-दर्शन पर लज्जित हो गया और कमल दुगुने उत्साह से सौंदर्य बिखरने लगा।

## जयन्ती विशेष

# पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

❒ कमल नारायण शर्मा

लाला लाजपतराय को पंजाब केसरी कहा जाता था। वे सचमुच पंजाब के ही नहीं सारे भारत के केसरी थे। जिस तरह केसरी की दहाड़ से वन के जीव भयाकुल हो जाते हैं, उसी तरह लाला लाजपतराय की गर्जना से अंग्रेज सरकार काँप उठती थी।

भारत को अनेक शक्तिशाली विभूतियों का नेतृत्व प्राप्त हुआ। इन्हीं विभूतियों में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय भी एक महान विभूति थे। लालाजी का जन्म 28 जनवरी, 1865 ई. को पंजाब के मोगा जिले में हुआ था। इनके पिता का नाम लाला राधाकृष्ण अग्रवाल तथा माता का नाम श्रीमती गुलाब देवी था।

बालक लाजपतराय के चरित्र गठन में उनके माता-पिता के विचारों का अधिक योग था। लालाजी ने स्वयं लिखा है- 'मैंने उदारता, सच्चाई और परोपकार आदि के गुण अपनी माता से विरासत के रूप में प्राप्त किए। उन्हीं के कारण मेरे हृदय में धार्मिकता उत्पन्न हुई है और मेरे जीवन के निर्माण में मेरे पिताजी का कुछ कम योग नहीं है। देशभक्ति और देश के लिए त्याग करने का भाव मैंने उन्हीं से पाया है। मेरे माता-पिता दोनों ही मेरे वास्तविक गुरु थे।

लालाजी की प्रारम्भिक शिक्षा उनके पिता की देखरेख में हुई। वे तीव्र बुद्धि के बालक थे। 13 वर्ष की उम्र में मिडिल की परीक्षा पास की। 1880 ई. में लालाजी ने हाईस्कूल की परीक्षा पास की। हाई स्कूल की परीक्षा पास करने के बाद कॉलेज में पढ़ने के लिए लाहौर चले गए। 1885 ई. में उन्होंने इण्टर और वकालत दोनों की परीक्षाएँ साथ-साथ उत्तीर्ण की।

वे बड़े मननशील और परिश्रमी छात्र थे। लाला जी ने 20 वर्ष की अवस्था में पंजाब विश्वविद्यालय से कानून की परीक्षा सर्वोच्च अंकों से पास कर हिसार में वकालत करना प्रारम्भ किया। वकालत करने के दौरान ही वे स्वतंत्रता के महान संघर्ष में भी कूद पड़े। लालाजी कहते थे- 'भारत के युवकों, भारत

माता विदेशियों के द्वारा पीड़ित की जा रही है। कमर कसकर भारत माता को विदेशियों के दुःखों से मुक्ति दिलाओ।

अपने विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए इन्होंने उर्दू का 'वन्दे मातरम्' और अंग्रेजी के 'पीपल' पत्र का सम्पादन कार्य किया। इन पत्रों के द्वारा इनके ओजस्वी विचार जन-जन तक पहुँचे। इससे देश की युवा पीढ़ी में गुलामी से मुक्त होने की चेतना जाग्रत हुई। सन् 1905 में भारत के शिष्टमंडल के साथ वे इंग्लैंड गए। वहाँ उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए भाषण दिए तथा लेख लिखे। भारत लौटने पर देश के सामने यह विचार रखा कि स्वराज्य अंग्रेजों के सामने हाथ पसारने से नहीं मिलेगा, इसके लिए अंग्रेजों से संघर्ष करना पड़ेगा। ये गरम दल के नेता लोकमान्य तिलक के साथ थे।

सन् 1928 ई. के अक्टूबर में भारत में साइमन कमीशन का आगमन हुआ। कांग्रेस ने प्रस्ताव पास करके कमीशन के बहिष्कार की घोषणा की थी। साइमन कमीशन भारत में जहाँ-जहाँ भी जाता था उसका बहिष्कार किया जाता था।

30 अक्टूबर के दिन 'साइमन' लाहौर स्टेशन पर पहुँचा, कमीशन का बहिष्कार करने के लिए लालाजी के नेतृत्व में भारी भीड़ खड़ी थी। साइमन कमीशन के समक्ष स्वयं लालाजी भीड़ का नेतृत्व कर रहे थे। जुलूस के आगे घुड़सवार पुलिस दस्ता रास्ता रोक कर खड़ी थी। अचानक पुलिस ने भीड़ पर डण्डे बरसाने शुरू कर दिए। पुलिस कप्तान साण्डर्स के संकेत पर एक गोरे सिपाही ने लालाजी पर भी प्रहार किया। डण्डे की चोट उनकी छाती में लगी और वे गिर पड़े। लाला जी को शीघ्र अस्पताल पहुँचाया गया, उनको बचाने की पूरी कोशिश की गई परन्तु वे बच नहीं सके। उन्होंने 17 नवम्बर 1928 ई. को सदा के लिए अपनी आँखें बन्द कर ली।

30 अक्टूबर 1928 में जब उन पर लाठियों से प्रहार किया गया तो घायल होने पर उन्होंने कहा कि-मैं कहता हूँ कि यह एक-एक चोट जो हम पर की गई थी, ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत में एक-एक कील साबित होगी।

लालाजी ने देश की सेवा में अपने जीवन को समर्पित कर दिया। लालाजी का व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली था। उनमें राष्ट्रप्रेम, नेतृत्व, लेखन, राजनैतिक सूझबूझ, लोकसेवा, दानी, आत्म गौरव, कर्मठता, देशभक्ति, श्रेष्ठ वक्ता, सुधारक, त्यागी-संन्यासी, श्रेष्ठ सम्पादक के गुण विद्यमान थे।

लालाजी ने देश को स्वतंत्र कराने के लिए जो प्रयत्न और बलिदान दिए वे सदा-सदा देशवासियों को प्रेरणादायक शक्ति देते रहेंगे।

अध्यापक (सेवानिवृत्त)
1/131 हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,
हनुमानगढ़ जं.- 335512
**मो: 94144-74636**

***कोटि हृदय है भाव एक है***
***इसी भूमि पर जन्म लिए***
***मातृभूमि यह, कर्मभूमि यह***
***पुण्यभूमि हित मरें जियें***
***।। जय हिन्दी ।।***

## जयन्ती विशेष

# हर भारतीय की साँस में बसे सुभाष

❒ सुभाष चन्द्र कस्वाँ

'तुम मुझे खून दो-मैं तुम्हें आजादी दूँगा' व 'दिल्ली चलो' जैसे नारों को हर भारतीय के कानों तक पहुँचाने वाले सुभाष के स्वर आज भी मंद नहीं पड़े हैं। लगता है आज भी वे हमारे आसपास ही कहीं मौजूद हैं। देश की अस्मिता पर आने वाली आँच का सामना करने के लिए तैयार होने का साहस भर रहे हैं। देशभक्त, महामानव, वीर साहसी, दयालू और देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाले व्यक्तित्व के नाम से ही श्रद्धा एवं सम्मान से उनकी तस्वीर व प्रतिमा के सामने मस्तिष्क अपने आप झुक जाता है। सुभाष ने देश की आजादी के लिए अपनी जी-जान तक लगा दी। यहाँ तक कि जब उन्हें लगा देश में रहकर उनकी योजना के मुताबिक कार्य करना असंभव है उसे फलीभूत करने के लिए देश छोड़कर चले गए। बालक सुभाष में बचपन से ही कुछ बातें उनके चरित्र में समा पाई थी जो उन्हें हम उम्र साथियों से अलग करती थी। महान क्रांतिकारी व स्वतंत्रता सेनानी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को कटक (वर्तमान ओडिसा) में हुआ। पिता का नाम श्री जानकीनाथ बोस व माता का नाम श्रीमती प्रभा देवी था। 1919 में इंग्लैण्ड चले गए, जहाँ इंडियन सिविल सर्विस के लिए उन्हें चुन लिया गया।

इस परीक्षा के दौरान देशभक्ति का ऐसा परिचय दिया जो अपने आप में अनूठी एक नजीर भी है। आई.सी.एस. की मुख्य परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उम्मीदवार को एक छोटी लिखित परीक्षा भी उत्तीर्ण करनी होती थी। वस्तुतः वह एक अंश था, जिसका सभी को अपनी-अपनी मातृभाषा में अनुवाद करना था। इस अंश में कहा गया 'Indian soldiers are generally dishonest' अर्थात भारतीय सैनिक प्रायः इमानदार नहीं होते। सुभाष ने निरीक्षक से उस प्रश्न को हटाने का आग्रह किया। निरीक्षक ने बताया इस प्रश्न को हटाया नहीं जा सकता। यह तो जान बूझकर रखा गया है यदि आप इसका जवाब नहीं देंगे तब आप चयन की प्रक्रिया से स्वतः ही बाहर हो जाएंगे। इतना सुनना था कि सुभाष तमतमाकर उठे और प्रश्न-पत्र के टुकड़े करते हुए बोले-नौकरी जाए भाड़ में, अपने वतन के लोगों पर लगे कलंक सहने से तो भूखे मर जाना अच्छा है। राष्ट्र के सम्मान की खातिर आजीविका को भी ठुकराने वाले सुभाष चन्द्र बोस के यह विचार जिसमें वीरता भी है तथा आत्मसम्मान की रक्षा भी। हमें राष्ट्र भक्ति का महान संदेश देते हैं। वही व्यक्ति सच्चा राष्ट्रभक्त है जिसके पास विचार और कर्म का केन्द्र राष्ट्र होता है, न कि निजी अभिलाषा। उनके जीवन पर स्वामी विवेकानन्द व देशबंधु चितरंजनदास की विचारधारा का गहरा प्रभाव पड़ा।

1924 में बंगाल ऑर्डिनेंस के विरुद्ध किए गए आंदोलन में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया तब से अंत तक रिहाई व गिरफ्तारी का सिलसिला जारी रहा। सुभाष ने कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) के मेयर, अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के अध्यक्ष व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष जैसे प्रमुख पदों पर रहते हुए अपनी कार्यशैली की अनुपम छाप छोड़ी। विदेश में रहते हुए अपनी निजी सचिव ऐमिली फ्राडलिन शेकल नामक युवती से शादी कर ली। शादी के रहस्य को कुछ समय तक गुप्त रखा। बाद में पत्र के जरिए इसकी सूचना अपने बड़े भाई शरत चन्द्र बोस को दे दी। उनके एक पुत्री भी हुई जिसका नाम उन्होंने अनीता बोस रखा। आज वे 79 साल की हैं। अंग्रेजी हुकूमत से भारत को आजाद करवाने के लिए 'इंडियन नेशनल आर्मी' का उन्होंने पुनर्गठन किया। स्वतंत्रता का अर्थ उनके लिए बड़ा व्यापक था। स्वतंत्रता से उनका तात्पर्य सर्वांगीण स्वतंत्रता से था। व्यक्ति के साथ-साथ समाज की स्वतंत्रता, धनवानों की स्वतंत्रता के साथ-साथ गरीबों की भी स्वतंत्रता, पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं को स्वतंत्रता व सभी लोगों के साथ-साथ सभी वर्गों की भी स्वतंत्रता को वे वास्तविक स्वतंत्रता मानते थे। जीवन की पवित्रता में उनका गहरा विश्वास था। उनका कहना था, 'शिक्षित व्यक्ति यदि चरित्रहीन हो तब भी क्या उसे शिक्षित कहेंगे? कभी नहीं।'

**अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।**

आज उनके अदृश्य हुए पिचेत्तर वर्ष होने के बावजूद भी कुछ सवाल हवा में तैर रहे हैं कि 18 अगस्त 1945 को दो बजे जापान के ताइहोकू हवाई अड्डे से एक हवाई जहाज ने आसमान में उड़ान भरी थी जिसमें सुभाष सवार थे। वह उड़ान भरते ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया। क्या उस विमान में उनकी मृत्यु हो गई? रैंकोजी (जापान) मंदिर में रखी अस्थियाँ किसकी हैं? सरकार ने इनके सत्यापन के लिए समय-समय पर जाँच आयोग भी बैठाए पर कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आए। 1956 में शाहनवाज कमेटी, 1970 में जी.डी. खोसला आयोग व 1999 में मुखर्जी आयोग का गठन सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु पर पड़े सवालों के रहस्य को जानना था। आज भी बहुत से उनके चहेते विश्वास करते हैं कि वे जिंदा हैं। जीवित होने की दशा में उनके अज्ञातवास का कोई कारण नहीं है। उनके जीवित रहने की किवदंती लोगों को आज भी रोमांचित करती रहती है। इस वक्त इस तथ्य पर भी गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। कुछ प्रमाणों के बाद भी लोगों का दिल क्यों नहीं मानता कि सुभाष चन्द्र बोस नहीं रहे? यह सुभाष बाबू की छवि व व्यक्तित्व का ही कमाल कि इतने मंत्रमुग्ध हम हो गए हैं जिसमें वास्तविकता को नजरअंदाज कर उनकी झलक पाने के लिए व्याकुल दिखाई दे रहे हैं।

पुत्र श्री हनुमान कस्वाँ
ग्रा.पो. हेतमसर (वाया-नूँआ),
झुंझुनूं-333041
**मो: 9460841575**

जयन्ती विशेष

# स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

❒ डॉ. रिंकू सुखवाल

**'शिक्षा में सबसे ज्यादा ताकत होती है जिससे पूरी दुनिया को बदला जा सकता है'**

**– स्वामी विवेकानन्द**

12 जनवरी, स्वामी विवेकानन्द जी की जयन्ती को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्वामी जी का दर्शन, चिन्तन, विचार, उनके आदर्श भारतीय युवकों के लिए प्रेरणा का बहुत बड़ा स्रोत है। उनका शैक्षिक दर्शन भी अत्यन्त प्रेरणादायक तथा प्रभावी है। आज के समय में उनके शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। उनके शिक्षा सम्बन्धी विचारों में प्राचीन भारतीय मूल्यों, आदर्शों और आधुनिक पश्चिमी मान्यताओं का समावेश है। स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का प्रथम उद्देश्य अन्तर्निहित पूर्णता को प्राप्त करना है। उनके अनुसार लौकिक तथा आध्यात्मिक सभी ज्ञान मनुष्य के मन में पहले से विद्यमान होता है, इस पर पड़े आवरण को उतार देना ही शिक्षा है। उनके शब्दों में 'शिक्षा उस सन्निहित पूर्णता का प्रकाश है, जो मनुष्य में पहले से ही विद्यमान है।' कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को नहीं सिखाता, प्रत्येक अपने आप स्वयं ही सीखता है। बाहरी शिक्षक तो केवल सुझाव ही प्रस्तुत करता है जिससे भीतरी शिक्षक को समझने में और सीखने के लिए प्रेरणा मिल जाती है। बालक लौकिक तथा आध्यात्मिक सभी प्रकार के ज्ञान का भण्डार होता है वह पेड़-पौधे की भाँति स्वयं ही स्वाभाविक रूप से विकसित होता है अतः बालक को स्वयं विकसित होने का सुझाव दिया है। 'अपने अंदर जाओ और उपनिषदों को अपने में से बाहर निकालो। तुम सबसे महान पुस्तक हो, जो कभी थी अथवा होगी। जब तक अन्तर्रात्मा नहीं खुलती, समस्त बाह्य शिक्षण व्यर्थ है।''

स्वामी जी के विचारो को वर्तमान संदर्भ में देखें तो स्पष्ट होता है कि शिक्षा मनोविज्ञान का जो आज उद्भव और विकास हुआ है, वह स्वामी जी के विचारों के पूर्णतः अनुकूल है। वह केवल पुस्तकों के ज्ञान को शिक्षा नहीं मानते, केवल पोथियाँ पढ़ लेना शिक्षा नहीं है, ना ही अनेक प्रकार का ज्ञान (सूचना) प्राप्त करने का नाम शिक्षा है। ज्ञान को सूचनाओं के रूप में बालक के दिमाग में ठूंसना मात्र शिक्षा का उद्देश्य नहीं है। कुछ शब्दों को पढ़ना, लिखना ही शिक्षा नहीं है। साक्षरता और शिक्षा में अन्तर है। स्वामी जी के अनुसार शिक्षा सूचनाओं एवं जानकारियों को भरना नहीं है बल्कि उन जानकारियों का जीवन में सही प्रयोग करना है। सीखे गए ज्ञान का जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में उचित प्रयोग वास्तव में शिक्षा है। शिक्षा का अर्थ 'व्यक्तियों को इस तरह से संगठित करने से है जिससे उनके विचार, अच्छाई व लोगों की भलाई के लिए दौड़े और वे अपने कार्य को पूर्ण कर सकें।' हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति में वृद्धि होती है, बुद्धि विकसित होती है, जिसको प्राप्त करके व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है' अर्थात शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति और व्यक्तित्व का निर्माण करना तथा उसे आत्मनिर्भर बनाना है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली ऐसी है जिसमें बालक का मूल्यांकन उसके अच्छे अंकों पर ही निर्भर करता है। कम अंक आने पर असफल होने से बालक में निराशा तनाव, कुण्ठा उत्पन्न हो जाती है। कई बार बालक अपनी असफलता को स्वीकार नहीं कर पाता और अनुचित कदम उठा लेता है। ऐसे में स्वामी जी के विचार बालकों का मनोबल बढ़ाते हैं। उनका मानना था कि अपने को कभी कमजोर न समझें, अपना आत्म विश्वास बनाए रखें। उनके शब्दों में 'जो तुम सोचते हो वो हो जाओगे, यदि तुम खुद को कमजोर सोचते हो, तुम कमजोर हो जाओगे, अगर खुद को ताकतवर सोचते हो, तुम ताकतवर हो जाओगे।

जीवन में कभी निराश न हों, असफलता से घबराएँ नहीं बल्कि तब तक प्रयास करें जब तक कि सफलता प्राप्त नहीं हो जाती। उनके शब्दों में 'किसी दिन जब आपके सामने कोई समस्या ना आए आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि आप गलत मार्ग पर चल रहे हैं। **'इसलिए शिक्षा द्वारा छात्रों में आत्मविश्वास, आत्मबल तथा स्वावलंबन उत्पन्न करना चाहिए, यह शिक्षा का उद्देश्य है।'** खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है। स्वामी जी ने आजीवन इस बात पर बल दिया कि अपने ऊपर विश्वास रखना, श्रद्धा तथा आत्मत्याग की भावना को विकसित करना शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। उनके शब्दों में **'उठो! जागो और उस समय तक बढ़ते रहो जब तक कि चरम उद्देश्य की प्राप्ति न हो जाए।'**

आज का समय प्रतियोगिता का समय है दूसरे से आगे निकलने की भावना कई बार अनुचित, गलत कार्यों की ओर अग्रसर करती है, अपराध, बेईमानी, अराजकता, हिंसा, अनैतिकता, समाज में फैल रही है। ऐसे में शिक्षा का उद्देश्य छात्रों में नैतिक आध्यात्मिक चरित्र निर्माण का विकास करना होना चाहिए। स्वामी जी भी छात्रों में नैतिक, आध्यात्मिक और चारित्रिक विकास को शिक्षा का उद्देश्य मानते थे। आज के छात्र कल के नागरिक हैं। स्वामी जी के शब्दों में 'नागरिकों को महान बनाने के लिए उनका नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास परम आवश्यक है।' अतः शिक्षा को इस ओर ध्यान देना चाहिए। नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों से विहीन शिक्षा प्रणाली किसी भी समाज को अवनति की ओर ले जा सकती है। इसलिए स्वामी जी ने अनिवार्य रूप से शिक्षा में गीता, उपनिषद् और वेद में निहित नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के समावेश की आवश्यकता पर बल दिया है। उनके शब्दों में 'नैतिकता और धर्म एक ही है। इन मूल्यों से ओत-प्रोत शिक्षा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करने में सहायक है।'

स्वामी जी का मानना था कि बालक का तन-मन से स्वस्थ रहना बहुत आवश्यक है।

इसलिए शिक्षा का उद्देश्य बालक का शारीरिक एवं मानसिक विकास भी होना चाहिए। शारीरिक उद्देश्य पर इसलिए बल दिया जिससे आज के विद्यार्थी भविष्य में निर्भीक एवं बलवान बनें, साहसी बनें और मानसिक उद्देश्य पर बल देते हुए उन्होंने बताया कि हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिसे प्राप्त करके बालक अपने पैरों पर खड़ा हो सके। ऐसी शिक्षा हो जिससे वह अपना जीवन निर्वाह कर सके। अतः स्वामी जी वैज्ञानिक औद्योगिक और तकनीकी शिक्षा के महत्त्व को भी समझते थे। उन्होंने बालक के भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए शिक्षा को ज्ञान एवं कौशल के रूप में स्वीकार किया। बालक को जीवन संघर्ष के लिए तैयार करना होगा। इसके लिए तकनीकी एवं विज्ञान शिक्षा की आवश्यकता पर उन्होंने बल दिया।

आज शिक्षा मौलिक अधिकार है लेकिन स्वामी जी के समय में शिक्षा जन साधारण को सुलभ न थी किन्तु स्वामी जी का विचार था कि शिक्षा का प्रचार जन साधारण में होना चाहिए। बालक-बालिकाओं को समान शिक्षा मिलनी चाहिए। वे सार्वभौमिक शिक्षा के समर्थक थे। शिक्षा में किसी भी प्रकार के भेदभाव के विरुद्ध थे। निर्धनतम व्यक्ति को भी शिक्षा प्राप्त होनी चाहिए। शिक्षा सभी को सुलभ हो। आम जनता की शिक्षा व्यक्तिगत प्रगति के साथ सामाजिक विकास को सुनिश्चित करती है। वर्तमान में भी हम यही मानते हैं कि देश का सम्पूर्ण विकास तभी होगा जब सभी शिक्षित होंगे।

अन्ततः स्वामी जी ने शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक, व्यावसायिक विकास, भेदभाव रहित सार्वभौमिक शिक्षा का समर्थन किया है तथा मानव के व्यक्तित्व निर्माण को प्राथमिकता दी है। उन्होंने व्यावहारिक और आधुनिक दृष्टिकोण अपनाते हुए प्रौद्योगिकी, वाणिज्य, उद्योग विज्ञान से जुड़ी पश्चिमी शिक्षा को भी महत्त्व दिया है। स्वामी जी का शैक्षिक दर्शन अत्यंत प्रासंगिक है जिसका अनुसरण कर वर्तमान समाज की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

702, फ्लोरा टॉवर, न्यू फ्लोरा कॉम्पलेक्स,
उदयपुर (राज.)
**मो: 8058460706**

## कोरोना महामारी

# राज्य के पुरस्कृत शिक्षक बने : कोरोना योद्धा

**❒ रामेश्वर प्रसाद शर्मा**

पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान के बैनर तले राज्य के राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय पुरस्कृत शिक्षकों ने कोरोना योद्धा बनकर के कार्य किया है। जब देश तथा राज्य में विश्वव्यापी कोरोना महामारी का संक्रमण फैलने लगा था और पूरे देश में लॉकडाउन लग गया था। उस समय सभी भयभीत थे। उस संकट की घड़ी में राज्य के राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरीय सम्मानित शिक्षकों ने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान के आह्वान पर अपने जिलों में गठित जिला इकाईयों के माध्यम से कोरोना योद्धा बनने के दो नेक कार्य किए।

**प्रथम-धनराशि की सहायता-** मुख्यमंत्री सहायता कोष कोविड-19 फंड में राज्य के पुरस्कृत शिक्षकों ने पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान के बैनर तले स्वेच्छा से 11 लाख 21 हजार रुपये राशि जमा कराई। 33 जिलों की जिला इकाइयों के माध्यम से लॉकडाउन काल में विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुए वाट्सअप के माध्यम से एक दूसरे से संवाद किया। नेक कार्य के लिए सक्रियता इतनी बनी कि उन विपरीत हालातों में जब बाहर निकल नहीं सकते थे उस समय इतनी बड़ी राशि का एकत्रित होना अप्रत्याशित कार्य हुआ। इस राशि को एकत्रित कराने जिला इकाई पदाधिकारियों व वहाँ के सक्रिय सदस्यों की भी अहम भूमिका रही। 22 मार्च 2020 से कोविड-19 फंड के लिए सहायता राशि जमा कराने का अभियान शुरू किया था। सभी 33 जिलों के 760 राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरीय सम्मानित शिक्षकों के योगदान व सहभागिता से 22 अप्रैल, 2020 को राज्य पुरस्कृत शिक्षक फोरम ने 11 लाख 21 हजार रुपये राशि का चेक मुख्यमंत्री सहायता कोष कोविड-19 के नाम से चेक काटा। राज्य के सम्मानित शिक्षकों ने आदर्श उदाहरण रखा। कोविड-19 फंड का चेक 13 मई, 2020 को माननीय शिक्षा मंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा को फोरम की ओर से भेंट किया गया।

**द्वितीय- जरूरतमंदों को सहायता व जन जागरण-** सभी जिलों के शहर, कस्बों व गाँवों में कोरोना से बचाव जन जागृति अभियान सम्मानित शिक्षकों ने अपने जिलों में चलाया। अभियान के अन्तर्गत जरूरतमंद लोगों को खाद्य सामग्री, पशुओं को चारा व पक्षियों के लिए परिण्डे बाँधे गए। जिला इकाइयों के पदाधिकारियों ने अपने जिलों के सम्मानित साथियों के साथ मास्क, सेनेटाइजर व साबुन आदि जरूरतमंदों को वितरित किए गए। साथ में कोरोना महामारी के बचाव के लिए जनजागरण अभियान भी चलाया गया। जोधपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, भरतपुर व जालोर आदि जिलों में जिला इकाइयों ने काढ़ा वितरित किया गया। चूरू व झुंझुनूं में जनजागरण वाहन रैली निकाली गई। डूँगरपुर जिला इकाई ने शहर व कस्बों के चौराहों पर कोरोना बचाव से जुड़े बैनर्स लगाए गए। बाड़मेर व अलवर की जिला इकाइयों ने कोरोना योद्धा चिकित्सकों को पी.पी.ई. किट्स वितरित किए गए। राजसमंद जिले के पदाधिकारियों ने 3 लाख 09 हजार रुपये राशि एकत्रित करके अपने जिले के जरूरतमंद लोगों को विभिन्न सामग्री वितरित की गई। कोरोना योद्धा बने चिकित्सकों, पुलिस कर्मियों तथा सफाई कर्मियों का जिला इकाइयों के पदाधिकारियों ने सम्मानित किया। कोरोना काल में राज्य के सम्मानित शिक्षकों की शिक्षा विभाग, सरकार तथा समाज में विशेष स्थान है। इसलिए सम्मानित शिक्षकों ने अपनी जिम्मेदारी निभाई है।

राज्य के राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरीय सम्मानित शिक्षकों ने कोरोना आपदा काल में सहायता सहयोग व सेवा का फर्ज निभाया। इन्हीं दो नेक कार्यों की स्थाई स्मृति रखने के लिए पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान ने कोरोना योद्धा राजस्थान के सम्मानित शिक्षक स्मारिका का प्रकाशन किया है। स्मारिका का विमोचन माननीय नगरीय विकास एवं आवासन मंडल मंत्री श्री शांतिलाल धारीवाल ने 04 दिसम्बर, 2020 को जयपुर में अपने निवास पर किया।

3/403 चित्रकूट पुरस्कृत मार्ग, वैशाली
नगर, जयपुर-302021
**मो: 9413801999**

युवा दिवस विशेष

# राष्ट्रीय युवा दिवस पर विशेष

❒ सुभाष चौधरी

युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 कोलकाता में हुआ। इनके जन्म दिन को 1984 से राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में एवं 'कैरियर डे' के रूप में मनाते हैं क्योंकि युवा पीढ़ी में हर असंभव सफलता के द्वार खोले जा सकते हैं जैसे कि सुभाष चन्द्र बोस उनके बारे में कहते हैं- स्वामी विवेकानन्द जी को सोते-सोते पढ़ोगे तो उठकर बैठ जाओगे, बैठकर पढ़ोगे तो खड़े हो जाओगे और खड़े होकर पढ़ रहे हो तो कार्य में रत हो जाओगे चलने लगोगे क्योंकि उनके शब्दों में अग्नि बाण सी ताकत है।

विवेकानंद ने सभी समकालीन एवं प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्रियों, वैज्ञानिकों ग्रंथों का अध्ययन किया जिनमें डेविड ह्यूम, काँट जे.जी. फिच, स्पिनोजा जे. डब्ल्यू. एच. हेजल, ऑगस्ट कॉम्टे, जे. एस. मिल, चार्ल्स डार्विन थे उन्होंने अंग्रेजी साहित्य को हिन्दी बांग्ला में अनुवाद भी किया।

स्वामी विवेकानंद जी के भाषणों को गुडविन ने लिखकर उनके ज्ञानवर्धक बातों को हम तक संजो कर रखा एवं आनेवाली पीढ़ियों के लिए कारगर साबित होगी। रोमांरोला लिखते हैं- भारत के लोग तीन गुना सौभाग्यशाली है क्योंकि उन्हें रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद एवं उनकी शिक्षाओं को जानने का अवसर मिला।

स्वामी विवेकानंद जी से उसका परम शिष्य 'आलासिंघा पेरुमल' पूछता है वैराग्य कैसे मिले? तो वो कहते हैं राजयोग (पतंजलि के योगसूत्रों की व्याख्या) में बताते हैं कि 'राग और द्वेष से परे जाने का रास्ता है सकारात्मक बन जाओ, भावात्मक बन जाओ अपने आप वैराग्य को धारण कर लोगे।'

स्वामी विवेकानंद जी की जन्म तिथि 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाते हैं क्योंकि उनकी प्रत्येक बात युवाओं के लिए प्रेरणादायक एवं सकारात्मक होती है इस दिवस को स्कूलों, कॉलेजों में स्वामी जी के विचारों पर

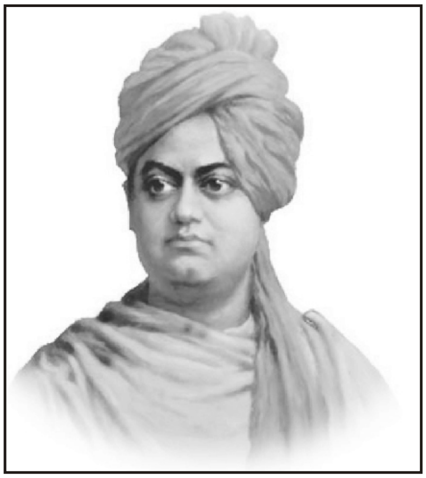

भाषण प्रतियोगिता, गीत, निबंध लेखन संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। भारत में युवाशक्ति 64% निवास करती है इसलिए इसका महत्त्व और ज्यादा है।

स्वामी विवेकानंद के प्रसिद्ध कथन जिनको युवा एक सूत्र के रूप में अपनाकर अपना लक्ष्य, मंजिल की प्राप्ति कर सकते हैं-

1. किसी दिन जब आपके सामने कोई समस्या ना आये तो आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि आप गलत मार्ग पर चले रहे हैं।
2. खुद को कमजोर समझना पाप है।
3. एक ऊर्जावान व्यक्ति एक साल में इतना कर देता है जितना भीड़ एक हजार साल में नहीं कर सकती।
4. कोई एक विचार लो और उसे ही जीवन बना लो उसी के बारे में सोचो, उसके सपने देखो उसे मस्तिष्क में, माँसपेशियों में, नसों में और शरीर के हर हिस्से में डूब जाने जो दूसरे सभी विचारों को अलग रख दो यही सफल होने का तरीका है।
5. ब्रह्मांड की सारी शक्तियाँ पहले से हमारी हैं वो हमी हैं जो अपनी आँखों पर हाथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अंधकार है।
6. हम वो हैं जो हमें हमारी सोच ने बनाया है इसलिए इस बात का ध्यान रखिए कि आप क्या सोचते हैं शब्द गौण हैं विचार रहते हैं वे दूर तक यात्रा करते हैं।
7. कोई तुम्हारी मदद नहीं कर सकता अपनी मदद स्वयं करो, तुम खुद के लिए सबसे अच्छे मित्र हो सबसे बड़े दुश्मन भी।
8. हम जितना ज्यादा बाहर जाएंगे और दूसरों का भला करेंगे हमारा हृदय उतना ही शुद्ध होता जाएगा और परमात्मा उसमें निवास करेंगे।
9. कुछ मत मांगों जो देना है वो दो, वो तुम तक वापस आएगा पर उसके बारे में अभी मत सोचो।
10. जब लोग तुम्हें गाली दें तो तुम उन्हें आशीर्वाद दो सोचो तुम्हारे झूठे दंभ को निकालकर वो तुम्हारी कितनी मदद कर रहे हैं।
11. मनुष्य की कामनाएँ समुद्र की तरह अनंत हैं अगर एक इच्छा पूरी होती है तो यह समुद्र में कोलाहल की तरह अनंत इच्छाएँ उत्पन्न करती है।
12. स्वतंत्र होने का साहस जहाँ तक तुम्हारे विचार जाते हैं वहाँ तक जाने का साहस करो और उन्हें अपने जीवन में उतारने का साहस करो।
13. तुम परिश्रम करके स्वर्ग के ज्यादा नजदीक होंगे बजाए गीता के अध्ययन करने के।
14. लक्ष्य के लिए खड़े हो तो एक पेड़ की तरह गिरो ताकि एक बीज की तरह दोबारा उठकर उस जंग के लिए लड़ सको।
15. जब तक जीवन है तब तक अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षा है।

इन 15 प्रसिद्ध कथनों में उनकी पूरी शिक्षा समाहित है इसी प्रकार उनके बताए मार्ग पर चलकर हर युवा अपना सुनहरा भविष्य चुनकर राष्ट्र निर्माण में अपनी सकारात्मक ऊर्जा लगा सकता है।

व्याख्याता (राजनीति विज्ञान) शिक्षा शोधार्थी
राजकीय जवाहर उच्च माध्यमिक विद्यालय भीनासर
बीकानेर (राज.) **मो: 9114481352**

सृजनात्मकता

# दीवार पत्रिका : एक शैक्षिक नवाचार

❒ रामावतार यादव

राजस्थान सरकार शिक्षा के सार्वजनीकरण तथा गुणवत्ता सुधार के लिए सतत् प्रयत्नशील है। सरकारी विद्यालयों के भौतिक एवं शैक्षिक स्तर उन्नयन के लिए आदर्श विद्यालय, उत्कृष्ट विद्यालय, कस्तूरबा गाँधी विद्यालय, मॉडल स्कूल, आवासीय विद्यालय, महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम स्कूल आदि योजनाएँ प्रारम्भ की हैं। प्रत्येक ग्राम पंचायत मुख्यालय पर सुसज्जित, संसाधनों से भरपूर एवं उच्च शैक्षिक गुणवत्ता युक्त उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय की स्थापना की गयी है, जहाँ कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। राजकीय प्रयासों, भामाशाहों व शिक्षकों के सहयोग से सरकारी विद्यालयों में लगातार नामांकन वृद्धि हो रही है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में सरकारी विद्यालय नवीन कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। ब्लॉक स्तर पर महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय खोल कर राज्य सरकार ने अंग्रेजी माध्यम में निजी विद्यालयों के एकाधिकार को समाप्त कर दिया है।

शिक्षा में गुणवत्ता के साथ ही राज्य सरकार सह-शैक्षणिक गतिविधियों व खेलों को बढ़ावा देने के लिए कृत संकल्पित है। कक्षा 1 से 5 के विद्यार्थियों के बस्ते के बोझ को कम कर दिया गया है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा के साथ अन्य शैक्षणिक, सह-शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन महत्त्वपूर्ण है, इसके लिए राज्य सरकार ने शनिवार को 'नो बैग डे' घोषित किया है। 'नो बैग डे' के दिन शैक्षणिक कार्य न करवाकर सह-शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का विकास किया जाएगा। आशा है कि प्रत्येक शनिवार विद्यार्थियों को शारीरिक व मानसिक रूप से सशक्त बनाने का दिन साबित होगा।

'नो बैग डे' को सार्थक बनाने वाली गतिविधियों में हम 'दीवार पत्रिका' लेखन को शामिल कर सकते हैं। दीवार पत्रिका विद्यार्थियों के लिए अपने विचारों, भावनाओं, सूचनाओं को आदान-प्रदान करने का एक सस्ता, सरल और सशक्त प्रयास है। 'दीवार पत्रिका' में विद्यार्थी अपनी स्वरचित या संकलित रचनाओं को एक चार्ट पर चिपकाते हैं और उसके बाद चार्ट को विद्यालय की दीवार पर टांग दिया जाता है। अपने साथी विद्यार्थियों की रचनाओं, चित्रों आदि को देखकर अन्य विद्यार्थी भी प्रोत्साहित होते हैं। विद्यार्थियों में रचनात्मक विकास, भाषायी दक्षता व कला को बढ़ावा देने के लिए 'दीवार पत्रिका' का प्रयास अपने आप में अनोखा एवं कम खर्चीला है। प्रारम्भ में दीवार पत्रिका का प्रकाशन त्रैमासिक या अर्द्धवार्षिक आधार पर किया जा सकता है। विद्यार्थियों में रुचि बढ़ने के बाद इसका मासिक प्रकाशन भी किया जा सकता है। दीवार पत्रिका की श्रेष्ठ रचनाओं को विद्यालय की वार्षिक पत्रिका में स्थान दिया जा सकता है। दीवार पत्रिका के प्रत्येक अंक के लिए विद्यार्थियों में से ही एक सम्पादक चुना जाता है, जो शिक्षकों की सहायता से रचनाओं का चयन करता है।

दीवार पत्रिका को एक अभियान के रूप में शुरू करने की आवश्यकता है। इसको हम बाल अखबार की संज्ञा भी दे सकते हैं। बहुत ही कम खर्च में इसका प्रकाशन होता है क्योंकि विद्यार्थी अपनी रचनाओं को हाथ से लिखकर एक चार्ट पर चिपकाते हैं। उसके बाद उसे दीवार पर टांग दिया जाता है, जहाँ सभी विद्यार्थी उसको पढ़ सकते हैं। दीवार पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थी बोल-चाल की भाषा में अपने मन की बात को सहज रूप से व्यक्त कर पाते हैं। ऐसा करने से उन्हें आनन्द का अनुभव तो होता ही है साथ ही मस्तिष्क का स्वाभाविक विकास भी होता है। विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता का भी विकास होता है। विद्यार्थी अपने चिन्तन को टूटी-फूटी भाषा में बिना किसी दबाव के व्यक्त करते हैं, इससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

दीवार पत्रिका विभिन्न विषयों से जुड़ी जानकारियों, सूचनाओं, तथ्यों और अन्य विवरणों को विद्यार्थियों तक पहुँचाने का एक सस्ता और सशक्त माध्यम है। टी.वी., मोबाइल, इंटरनेट की दुनिया में खोए हुए किशोरों को दीवार पत्रिका के माध्यम से रचनात्मकता की ओर मोड़ा जा सकता है। वर्तमान में किशोर आभासी दुनियाँ में इस कदर खो गए हैं कि अपने परिवारजनों, गुरुजनों और मित्रों से भी बातचीत करने के लिए सोशल मीडिया साइट्स/चैटिंग का सहारा लेते हैं। ऐसे किशोरों को रचनात्मकता की ओर लाने में दीवार पत्रिका एक अच्छा प्रयास है।

विद्यार्थियों के मन में प्रति क्षण कई नए विचार आते रहते हैं, अगर उन्हें इन विचारों को शब्दों में लिखने को कहा जाए तो उनकी ऊर्जा सकारात्मक दिशा की ओर खर्च होने लगेगी और वे भविष्य के लेखक/कवि/विचारक के रूप में ढल सकेंगे। इसके लिए दीवार पत्रिका में बेहतर विकल्प उनके लिए नहीं है। उन्हें सिर्फ सादे कागज पर अपनी कविताएँ, कहानियाँ या अपने अनुभव लिखकर दीवार पर टंगे हुए बहुत बड़े चार्ट पर चिपकाना होता है। पढ़ाई के दिनों में कविताएँ व कहानियाँ लिखना लेखक बनने की पहली सीढ़ी भी होती है। लेखन जैसे रचनात्मक कार्य कार्य से विद्यार्थियों में सूचनाओं का सम्प्रेषण भी होता है तथा उनका आपस में संवाद और आत्मविश्वास बढ़ता है।

अनेक राज्यों में इस नवाचार को अपनाया जा रहा है। राजस्थान के सभी विद्यालयों को इसे एक अभियान के रूप में अपनाना होगा, ताकि 'नो बैग डे' के उद्देश्यों व लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

प्राध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सोहेला,
टोंक (राज.)
**मो: 9214536511**

भारत स्काउट एवं गाइड

# सिलवर एलीफेंट

❒ गिरधारी लाल शर्मा

भारत स्काउट्स एण्ड गाइड्स, नई दिल्ली प्रतिवर्ष संगठन के विकास व विस्तार हेतु किए गए अतिविशिष्ट, अनुकरणीय व दीर्घकालीन सेवाओं के लिए सहयोगियों, परामर्शदाताओं, शुभचिन्तकों, एडल्ट लीडर्स, स्वयंसेवकों एवं कार्यपालकों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित करता है। जैसे मेडल ऑफ मेरिट, बार टू मेडल ऑफ मेरिट, सिल्वर स्टार, बार टू सिल्वर स्टार, दीर्घकालीन अलंकरण, सर्विस स्टार, धन्यवाद बैज इत्यादि।

**सिलवर एलीफेंटः–** भारत स्काउट्स एण्ड गाइड्स द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार है। इस पुरस्कार की स्थापना भारत स्काउट्स एण्ड गाइड्स की स्थापना से ही मानी जाती है। इस पुरस्कार में 2×3 सेमी. में हाथी की चाँदी में प्रतिकृति तीन रंगों (नीला, हरा एवं लाल, जो तीन विभागों, कब/बुलबुल, स्काउट/गाइड एवं रोवर/रेंजर का प्रतिनिधित्व करती है) की पट्टी में पिरोई हुई एवं एक प्रमाण-पत्र होता है।

**एलीफेंट–** यानी हाथी (गज) जो अपने विशेष रूप, बल एवं सामाजिकता के लिए जाना जाने वाला पशु है।

महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा राष्ट्रपति भवन में आयोजित विशेष समारोह में यह पुरस्कार अतिविशिष्ट, सर्वोत्कृष्ट, अनुकरणीय व दीर्घकालीन सेवाओं के लिए राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं राष्ट्रीय परिषद द्वारा अनुशंसित महानुभावों को प्रदान किया जाता है। राष्ट्र के प्रमुख शिक्षाविदों, राजनीतिज्ञों, समाजसेवियों, प्रशासनिक अधिकारियों, एडल्ट लीडर्स, विभिन्न राष्ट्रों के स्काउट/गाइड संगठन प्रमुखों, विश्व स्काउट ब्यूरो एवं एशिया पेसिफिक रीजन के पदाधिकारियों, राज्यों के मुख्यमंत्रियों एवं मुख्य सचिवों को इस पुरस्कार से नवाजा जा चुका है। उनमें से प्रमुख हैंः- सर्वश्री श्रीमती लक्ष्मी मजूमदार, सरदार लक्ष्मण सिंह, जी. रंगाराव, रामेश्वर ठाकुर, एल.एम. जैन, डॉ. के. के. खण्डेलवाल, श्रीमती नजमा हेपतुल्ला, अशोक गहलोत, बी. आई. नागराले, शालिनी मिश्रा, विनोद खाण्डेकर, रोमा वानी, सुधा प्रकाश, एन. रामचन्द्रन, गोविन्द सिंह बिष्ट, श्रीमती माणक बार्सले, काली प्रसाद मिश्रा, दलजीत सेन महाजन, महेन्द्र भाई पटेल, प्रसन्ना श्रीवास्तव, सुभाष चक्रवर्ती, जी.बी.एस. सजवान, बी.के. बहुगुणा, आर.के. शर्मा, एस. कुमार इत्यादि।

चूँकि स्काउटिंग का प्रकृति एवं पशु-पक्षियों से गहरा सम्बन्ध है इसीलिए प्रायः प्रमुख राष्ट्रों के स्काउट्स एवं गाइड्स संगठनों ने अपने राष्ट्रीय संगठन के सर्वोच्च पुरस्कार का नाम पशु-पक्षियों के नाम पर रखा है।

**ब्रोज वुल्फ–** विश्व स्काउट ब्यूरो द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार है। हमारे देश से यह सम्मान सर्वश्री श्रीमती लक्ष्मी मजूमदार, सरदार लक्ष्मण सिंह, जी. रंगाराव एवं एल.एम. जैन को मिल चुका है।

कुछ कतिपय राष्ट्रों के सर्वोच्च सम्मान निम्नांकित हैंः-

(i) सिल्वर केमिल (Silver Camel)- पाकिस्तान
(ii) सिल्वर टायगर (Silver Tiger)- बांग्लादेश
(iii) सिल्वर कंगारू (Silver Kangaroo)- आस्ट्रेलिया
(iv) सिल्वर बफेलो (Silver Buffalo)- अमेरिका (यू.एस.ए.)
(v) सिल्वर वुल्फ (Silver Wolf)- ग्रेट ब्रिटेन (यू. के.)
(vi) सिल्वर राइनासरेस (Silver Rhinoceros) - नेपाल

उल्लेखनीय कार्यों का सम्मान एक स्वस्थ परम्परा है। इससे अन्य लोगों को अच्छे कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। 'अभिप्रेरणा' प्रबंधन का एक प्रमुख घटक है। यह संगठन के विकास एवं विस्तार में एक महत्त्वपूर्ण रसायन के रूप में काम करती है। यह संगठन से जुड़े सभी स्तरों के स्वयंसेवकों, एडल्ट लीडर्स, कर्मचारियों/अधिकारियों के द्वारा संगठनात्मक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कुशल, सतत एवं ईमानदार प्रयासों को प्रोत्साहित करती है। अभिप्रेरणा जैसे महत्त्वपूर्ण घटक को सभी संगठनों में चाहे वे व्यावसायिक हो, शैक्षिक हो, सैन्य बल हो, अर्द्धसैनिक बल हो, पुलिस बल हो, चिकित्सा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान से सम्बन्धित सरकारी/गैर सरकारी, सामाजिक या अन्य संगठन हो, ने स्वीकारा है। परमविशिष्ट सेवा मेडल, अतिविशिष्ट सेवा मेडल, राष्ट्रपति पुलिस पदक, विशिष्ट एवं सुदीर्घ सेवाओं के लिए प्रदान किए जाने वाले पदकों के अच्छे उदाहरण हैं।

राजस्थान राज्य स्काउट्स एण्ड गाइड्स अपने स्थापना से ही राष्ट्र की स्काउटिंग/गाइडिंग में विशेष स्थान रखता आ रहा है। यहाँ की पेट्रोल कुकिंग, प्रशिक्षण विधि, ग्रामीण रोवरिंग, कुशल एवं दक्ष प्रशिक्षक दल, भौतिक संसाधन, शिविर केन्द्रों की व्यापकता तथा राज्य सरकार द्वारा वित्त पोषण एवं संरक्षण से राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स/गाइड्स में अग्रणी राज्य है।

वर्ष 1998 में आयोजित 13वीं राष्ट्रीय जम्बूरी, खुर्दा, उड़ीसा से अब तक आयोजित सभी राष्ट्रीय जम्बूरियों-17वीं राष्ट्रीय जम्बूरी दिनांक 29.12.2016 से 04.01.2017 तक अडकनहल्ली, मैसूर (कर्नाटक) में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु राष्ट्रीय कमिश्नर ध्वज प्राप्त करता आ रहा है।

**जम्बूरी–** प्रति चार वर्ष के अन्तराल से आयोजित विशाल युवा उत्सव होता है, जिसमें देश/विदेश के स्काउट्स/गाइड्स सदस्य भाग लेते हैं जिसकी मधुर स्मृतियों को स्काउट्स/गाइड्स जीवन भर संजोए रखते हैं।

राष्ट्र में पहली बार राष्ट्रीय जम्बूरी 29.12.1953 से 02.01.1954 तक सिकन्दराबाद-हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश) में आयोजित हुई थी। हमारे राज्य राजस्थान को द्वितीय राष्ट्रीय जम्बूरी दिनांक 26.12.1956 से 01.01.1957 तक जयपुर में आयोजित करने का सुअवसर मिला।

प्रारम्भ से ही इस संगठन को राजा-महाराजाओं का संरक्षण प्राप्त हुआ, कालान्तर में प्रमुख शिक्षाविदों, समाजसेवियों, न्यायविदों,

विचारकों एवं प्रशासनिक अधिकारियों के कुशल मार्गदर्शन में संगठन उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। राज्य संगठन के वार्षिक प्रतिवेदन के अनुसार 31.03.2020 को हमारे राज्य में 4875 कब पैक, 2120 बुलबुल फ्लॉक, 18648 स्काउट ट्रूप्स, 5780 गाइड कम्पनियाँ, 1102 रोवर क्रू व 910 रेंजर टीम्स संचालित हैं, जिनके माध्यम से 10,26,437 स्काउट्स/गाइड्स सुनागरिकता का प्रशिक्षण लेते हुए राज्य सरकार, स्थानीय प्रशासन एवं समाज को अपनी विनम्र सेवाएँ दे रहे हैं।

समय-समय पर राज्य के अनेक महानुभावों एवं पदाधिकारियों को भारत स्काउट्स/गाइड्स के सर्वोच्च पुरस्कार-सिल्वर एलीफेंट से नवाजा गया है। अब तक 27 महानुभावों को यह पुरस्कार मिल चुका है। सर्वश्री राजा अमरनाथ अटल, अध्यक्ष जयपुर स्टेट ब्वॉय स्काउट एसोसिएशन तथा राव चन्द्र पाल सिंह, स्टेट कमिश्नर, जयपुर स्टेट ब्वॉय स्काउट एसोसिएशन को सबसे पहले यह पुरस्कार प्रदान किया गया। सर्वश्री पूर्व स्टेट चीफ कमिश्नर एस. के. जिब्बू, लक्ष्मी लाल जोशी, जगन्नाथ सिंह मेहता, रणजीत सिंह कुम्भट, अतुल कुमार गर्ग व निरंजन आर्य, शिक्षाविद डॉ. मोहन सिंह मेहता, दानमल माथुर, गणपति चन्द्र भण्डारी, मांगी लाल सोलंकी, तेजकरण डंडिया, डॉ. दामोदर शर्मा, राज्य पदाधिकारियों-श्याम सुन्दर शर्मा, मोहन लाल माथुर, शान्ति भण्डारी, उषा सुन्दरी वली, पूर्व राज्य संगठन आयुक्त राम स्वरूप धीमन, गणेशीराम, महेश शरण सहाय एवं रघुवीर सिंह शेखावत, समाज सेवी रतन लाल पारेख, पूर्व प्रशासनिक अधिकारी विष्णुदत्त शर्मा, ब्रह्म दत्त जोशी व राज्य के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को यह सम्मान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ है।

जिस प्रकार राजस्थान प्रदेश स्काउटिंग/गाइडिंग के क्षेत्र में नित नई ऊँचाइयों का स्पर्श कर रहा है तो यह कहा जा सकता है कि संगठन के इस सर्वोच्च अलंकरण की यात्रा राज्य में निश्चित रूप से जारी रहेगी।

रोवर लीडर
सी-3, नित्यानन्द नगर, गाँधी पथ, रोड नं. 11,
वैशाली नगर के पास, जयपुर (राज.)-302021
**मो: 9829355244**

## युवा दिवस विशेष

# भारतीय संस्कृति के प्रकाश स्तंभ : स्वामी विवेकानन्द

❐ **नव प्रभात दुबे**

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार-हममें से अधिकांश व्यक्ति इतिहास पढ़ते हैं परन्तु कुछ लोग होते हैं, जो इतिहास गढ़ते हैं। ऐसा नहीं है कि इतिहास गढ़ने वाले ये सभी महावीर साधन सम्पन्न होते हैं। इनमें से कितने ही असुविधाओं में ही पलते हैं और आगे बढ़ते हैं। संकल्प के धनी इन इतिहास पुरुषों के समक्ष सुविधाहीनता अपने घुटने टेक देती है और ये अपने लक्ष्य तक पहुँच कर ही दम लेते हैं। साधनों की विपुलता या तो व्यक्ति को दुराभिमानी बना देती हैं या आलसी और निकम्मा। जीने का आनन्द तो तब है जब अपनी राह स्वयं बनाई जाए और मंजिल तक पहुँच कर ही दम लिया जाए। ऐसे लोग इतिहास गढ़ते हैं और इतिहास पुरुष कहलाते हैं।

हम भी इतिहास पुरुष न सही पर इतिहास तो गढ़ ही सकते हैं ऐसे ही एक दिव्य महापुरुष स्वामी विवेकानंद जी से प्रेरणा लेकर जिन्होंने स्वयं दीपक बनकर दूसरों को प्रकाशित करने का कार्य किया। जिनका ध्येय वाक्य था- **उठो, जागो और तब तक विश्राम न करो, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।**

स्वामीजी का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता में हुआ। इनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त जो कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकील थे एवं माता भुवनेश्वरी देवी जो अत्यंत सरल और धार्मिक महिला थी। स्वामीजी को बचपन में सब नरेन्द्र के नाम से बुलाते थे। नरेन्द्र की बुद्धि बचपन से ही तीव्र थी और परमात्मा व आध्यात्म में ध्यान था। आपके पिता पाश्चात्य शिक्षा में विश्वास रखते थे वे अपने पुत्र को भी पाश्चात्य सभ्यता के ढर्रे पर चलाना चाहते थे। कलकत्ता वि.वि. से बी.ए. कर कानून की परीक्षा की तैयारी अपने पिता के पदचिह्नों पर चलने का प्रयास किया किन्तु आपका चित्त सन्तुष्ट नहीं हुआ और ज्ञान की पिपासा को शांत करने के लिए स्थान-स्थान पर भटकते रहे। आप ब्रह्म-समाज में भी गए किन्तु जिसकी इन्हें तलाश थी वह नहीं मिला।

इसी बीच आपका एक संबंधी आपको नवम्बर 1881 में कलकत्ता के दक्षिणेश्वर काली माता के पुजारी श्री रामकृष्ण परमहंस के पास ले गया। उन्हें देखकर परमहंसजी की आँखें चमक उठी और कहा- तू आ गया नरेन्द्र, मुझे तेरा कब से इन्तजार था। विवेकानंदजी ने अपनी धार्मिक और आध्यात्मिक जिज्ञासा के चलते प्रश्नों की झड़ी लगा दी। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर पाकर उनके विचारों से प्रभावित होकर विवेकानंद उनके शिष्य बन गए। गुरु से उन्होंने सीखा कि सारे जीवों में स्वयं परमात्मा का ही अस्तित्व है, इसलिए मानव मात्र की सेवा करके भी परमात्मा की सेवा की जा सकती है।

रामकृष्ण परमहंस भारत के महान संत आध्यात्मिक गुरु एव विचारक थे। आपका जन्म 18 फरवरी 1836 को कामारपुकुर बंगाल में हुआ। इनके बचपन का नाम गदाधर व इनके पिता का नाम खुदीराम तथा माता का नाम चन्द्रा देवी था। उन्हें बचपन से ही विश्वास था कि ईश्वर के दर्शन हो सकते हैं। अत: ईश्वर प्राप्ति के लिए उन्होंने कठोर साधना और भक्ति का मार्ग अपनाया। कहा जाता है कि उन्हें काली माता के साक्षात दर्शन होते थे और वे उनसे बातें भी किया करते थे। श्री रामकृष्ण परमहंस की हिन्दू धर्म में गहरी आस्था थी। वे ईश्वर प्राप्ति के लिए नि:स्वार्थ भक्ति एवं सभी मत-पंथों की मौलिक एकता में विश्वास करते थे। नरेन्द्र 1882 से 1886 तक गुरु के सानिध्य मे रहे। पिता की मृत्यु के बाद नरेन्द्र काफी आर्थिक तंगी में रहे। 1885 में श्री रामकृष्ण परमहंस के गले का कैंसर हो गया था। गले के कैंसर ने धीरे-धीरे भंयकर रुप ले लिया। उस समय उनकी सम्पूर्ण सेवा नरेन्द्र ही करते थे। 16 अगस्त 1886 को लम्बी बीमारी के बाद रामकृष्ण परमहंस का निधन हो गया।

गुरु की मृत्यु के बाद स्वामीजी ने सन्यास ग्रहण कर लिया। भारत के विभिन्न हिस्सों में भ्रमण कर धर्मिक ग्रन्थों का गहनता से अध्ययन किया। अज्ञातवास एवं एकान्तवास में साधनारत रहते हुए आध्यात्म की नई ऊँचाईयों को प्राप्त किया।

भारत भ्रमण के दौरान 1891 में आपका सम्पर्क खेतड़ी के महाराज श्री अजीत

सिंह से हुआ। स्वामीजी से प्रभावित होकर अजीत सिंह इनके शिष्य बन गए। इनके मध्य वार्ता में स्वामीजी ने बताया कि प्रत्येक कार्य को तीन अवस्थाओं से गुजरना पड़ता हैं उपहास, विरोध और स्वीकृति। जो मनुष्य समय से आगे के विचार रखता है लोग निश्चय ही उसे गलत समझते हैं किन्तु दृढ़ और पवित्र भाव से ईश्वर पर अपिरिमित विश्वास रखने से ये सब लुप्त हो जाएँगे। स्वामीजी ने महाराज अजीत सिंह को अपना परिचय स्वामी विदिषानंद नाम से दिया था। अजीत सिंह ने स्वामीजी को अपना नाम बदलकर स्वामी विवेकानंद करने का आग्रह किया। स्वामीजी को भी यह नाम पसंद आया। अजीत सिंह ने ही स्वामीजी को साफा बाँधना सिखाया। इस प्रकार स्वामी विवेकानंद का जो रूप हम चित्रों में देखते है वह महाराजा अजीत सिंह जी का दिया हुआ है जो उनकी विश्वव्यापी पहचान बन गया है।

खेतड़ी के महाराजा अजीत सिंह के सहयोग से ही आप 11 सितम्बर 1893 को अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित विश्व धर्म संसद में भाग लेने गए। विवेकानंद भारत के प्रतिनिधि के रूप में गए थे। वहाँ इनका उपहास उड़ाया गया और इन्हें बोलने का अवसर भी नहीं दे रहे थे, लेकिन एक प्रोफेसर के प्रयास से इन्हें 2 मिनट बोलने का अवसर दिया गया। जहाँ इन्होंने अपना विश्व प्रसिद्ध भाषण मेरे प्रिय भाईयों और बहनों.... से प्रारम्भ किया।

जब यूरोप और अमेरिका में भारत की छवि एक खराब देश के रूप में थी। तब स्वामीजी ने बताया की वास्तव में भारत क्या है? विश्व मंच पर भारत की आवाज बुलंद करने का श्रेय विवेकानंदजी को जाता है।

आपने भारतीय संस्कृति और धर्म की महत्ता को बड़े ही प्रभावशाली तरीके से रख भारत की बौद्धिक आध्यात्मिक एवं धार्मिक समृद्धता से विश्व को परिचित कराया। उनके मुख से प्राचीन ग्रन्थों की नई व्याख्या सुनकर वे चकित रह गए। कल तक जो लोग स्वामीजी के पहनावे के लेकर उनका मजाक उड़ा रहे थे, आज वे उनका व्याख्यान सुनकर नतमस्तक थे। अमेरिका का कोई ऐसा अखबार नहीं था जिसके प्रथम पृष्ठ पर स्वामीजी का फोटो और उनका परिचय प्रकाशित न हुआ हो।

अमेरिका के न्यूयार्क हैरल्ड ने लिखा शिकागो धर्म सम्मेलन में विवेकानंद ही सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति है। उनके भाषण सुनने के बाद लगता है कि भारत जैसे समुन्नत राष्ट्र में ईसाई प्रचारकों को भेजा जाना कितनी मूर्खता की बात है।

स्वामीजी अमेरिका में तीन वर्ष तक रहे और वहाँ के लोगों को भारतीय तत्व ज्ञान की दिव्य ज्योती प्रदान की। आपकी वक्तव्य -शैली तथा ज्ञान को देखते हुए वहाँ के मीडिया ने आपको साइक्लानिक हिन्दू का नाम दिया। अध्यात्म विद्या और भारतीय दर्शन के बिना विश्व अनाथ हो जाएगा। यह स्वामीजी का दृढ़ विश्वास था।

नवम्बर 1894 में न्यूयार्क में वेदान्त सोसाइटी की स्थापना की। इसी बीच आपका लंदन अमेरिका भारत आना जाना-लगा रहा। 1 मई 1897 भारत में कोलकता के वेलूरमठ में आपने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। इसकी शाखाएँ भारत के विभिन्न हिस्सों और विदेशों में भी खोली गईं। रामकृष्ण मिशन की शिक्षाएँ मुख्य रूप से वेदांत-दर्शन पर आधारित हैं, जिसके माध्यम से विवेकानंद ने अपने विचारों का प्रचार किया।

एक बार स्वामीजी अमेरिका से लौटते समय लंदन में 3 माह के प्रवास पर थे जहाँ वे उपस्थित लोगों को वेदांत दर्शन समझा रहे थे, एक महिला मार्गरेट एलिजाबेथ नोबल उनसे मिली वे इनके व्यत्तित्व से बड़ी प्रभावित हुई और इसके बाद उनके कई और व्याख्यानों में भी गई । इस दौरान इसने स्वामीजी से ढेरों प्रश्न किए जिनके उत्तरों ने इसके मन में स्वामीजी के लिए श्रद्धा और आदर उत्पन्न किया। मार्गरेट के मन की आध्यात्मिक चेतना के उत्साह को स्वामीजी समझ गए और इसे भारत आने का निमंत्रण दिया। 28 जनवरी 1898 को स्वामीजी के आग्रह पर मार्गरेट अपने परिवार और मित्रों को छोड़कर कोलकता पहुँच गई। प्रारम्भ में विवेकानंद ने उन्हें भारतीय सभ्यता, संस्कृति दर्शन, लोक साहित्य और इतिहास से परिचय कराया फिर 25 मार्च 1889 को मार्गरेट नोबल ने स्वामीजी के देखरेख में ब्रह्मचर्य अंगीकार किया। जिसके बाद विवेकानंद ने उन्हें एक नया नाम निवेदिता दिया। इस प्रकार भगिनी निवेदिता किसी भी भारतीय पंथ को अपनाने वाली पहली पश्चिमी महिला बनी।

निवेदिता ने विवेकानंद के साथ अपने अनुभवों का जिक्र अपनी पुस्तक 'द मास्टर ऐज आई सा हिम' में किया। वे अपने आपको उनकी आध्यात्मिक पुत्री मानती थी ।

निवेदिता ने गुरु के चरणों में अपना जीवन अर्पित कर दिया और स्त्री शिक्षा के लिए बालिका विद्यालय खोला यह कार्य उस समय किया जब समाज के सभ्रांत लोग भी अपनी लड़कियों को स्कूल भेजना पसंद नही करते थे। रामकृष्ण परमहंस की पत्नी माता शारदे ने ही निवेदिता के स्कूल का उद्घाटन किया। इस प्रकार निवेदिता ने भारत में स्त्री शिक्षा के लिए अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

इस प्रकार स्वामी विवेकानंद के जीवन में श्री रामकृष्ण परमहंस, महाराजा अजीत सिंह और भगिनी निवेदिता का विशेष स्थान हैं। स्वामी विवेकानंद एवं रामकृष्ण मिशन ने भारतीयों में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की भावना का विकास किया। इसी भावना ने युवाओं को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की ओर प्रेरित किया। विवेकानंद आध्यात्मिक उन्नति पर बल देते थे जिससे वे पहले मनुष्य को मनुष्य बनाना चाहते थे और उसी को सम्पूर्ण प्रगति का आधार मानते थे। विवेकानंद ने भारतीय समाज में व्याप्त संकीर्णताओं एवं कुरीतियों का विरोध किया तथा जातीय भेदभाव मिटाकर समानता की बात की। पुरानी परम्पराओं को तभी स्वीकार करना चाहिए जब वे उचित जान पड़े। उन्होंने स्त्री पुनरुत्थान की बात की वे भारत से निर्धनता और अज्ञानता को खत्म करना चाहते थे। उन्होंने कहा जब तक भारत के करोड़ों व्यक्ति भूखे और अज्ञानी है तब तक में उस प्रत्येक व्यक्ति को देशद्रोही मानता हूँ जो उन्ही के खर्चे पर शिक्षा ग्रहण करता हैं परन्तु उनकी परवाह नहीं करता।

विवेकानंद ने पूरे विश्व में हिन्दू धर्म एवं दर्शन को प्रसारित कर भारत के प्राचीन गौरव को संसार के समक्ष रखा उन्होंने ऐसी शिक्षा की बात की जिससे चरित्र का निर्माण हो। इस प्रकार हमारी संस्कृति का यह सूरज संसार को प्रकाशित करते हुए 4 जुलाई 1902 को वेलुर मठ हावड़ा में अस्त हो गया।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1984 को अन्तरराष्ट्रीय युवा वर्ष घोषित किया था। इनके महत्त्व को विचार करते हुए भारत सरकार ने घोषणा की कि 12 जनवरी 1984 से ही विवेकानंद जी के जन्मदिवस पर प्रतिवर्ष राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया जाएगा।

व्याख्याता इतिहास
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बडौदिया,
बून्दी (राज.)
**मो: 9414745053**

## शिक्षा एवं शिक्षण

# पुनः खुलते विद्यालय एवं हमारी साझा जवाबदेही

❒ सिद्धार्थ कुमार 'गौरव'

वर्तमान समय में हमारा देश ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व कोरोना वायरस के संक्रमण से होने वाली कोविड-19 महामारी के विकट दौर से गुजर रहा है। इस महामारी से सम्पूर्ण विश्व में लाखों लोग संक्रमित होकर अपनी जान गंवा चुके हैं वहीं हजारों लोग मौत और जिन्दगी के बीच संघर्ष कर रहे हैं। कोरोना वायरस से संक्रमित इस बीमारी का अभी तक कोई उपचार या निदान नहीं होने के कारण कोई भी व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता है कि वह इस वायरस के संक्रमण से पूर्णतः बचा हुआ है। ऐसी विकट परिस्थिति में हमारे सम्मुख एक गंभीर चुनौती है कि किस प्रकार से हम स्वयं, परिवारजनों एवं इस मानव समाज को इस महामारी के संक्रमण से बचा सकें। यद्यपि सरकार ने सभी के सहयोग से कोरोना वायरस के संक्रमण के प्रभाव को रोकने, संक्रमित व्यक्तियों के जीवन को बचाने तथा असंक्रमित व्यक्तियों में इसके संक्रमण की रोकथाम हेतु अनेकों प्रयास करते हुए इस चुनौती से लगातार संघर्ष कर रही है। तथापि सरकारों के प्रयास तब तक सफल नहीं हो सकते, जब तक कि नागरिक इसे गंभीरता से लेते हुए संवेदनशील न हो क्योंकि सरकार एवं संसाधनों की एक सीमा है। जिसके चलते नागरिकों की जागरूकता एवं संवेदनशीलता के अभाव में इस महामारी का सामना करना नामुमकिन है।

इस महामारी के प्रकोप के परिणामस्वरूप विभिन्न देशों की सरकारों द्वारा लंबी अवधि तक घोषित लॉकडाउन ने संपूर्ण विश्व के नागरिकों के जीवन को अस्त-व्यस्त कर अनियमित कर दिया है। भारत जैसे सैकड़ों विकासशील देशों के नागरिक आर्थिक संकट एवं बेरोजगारी की विकट समस्या से जूझ रहे हैं। विश्व के सभी देशों में आर्थिक प्रगति बाधित होने के कारण अर्थव्यवस्था में गिरावट देखी जा रही है। ऐसे विकट समय में एक जागरूक एवं संवेदनशील नागरिक होने के नाते हमारी जिम्मेदारी कई गुना बढ़ जाती है।

महामारी के प्रकोप की भयानकता को देखते हुए राज्य सरकार ने मध्य मार्च माह से ही सभी शैक्षणिक संस्थानों को पूर्णतया बंद कर दिया। इस सम्पूर्ण बंद के चलते विद्यार्थियों का जुड़ाव सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से पूर्णतया कट गया। यद्यपि सरकार के प्रयास एवं शिक्षकों के सहयोग से ऑनलाइन कक्षाएँ निरंतर संचालित की जा रही हैं। यह प्रयास संसाधन संपन्न नामी निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों तथा शहरी क्षेत्र के जागरूक अभिभावकों तक पहुँच बनाने में कुछ हद तक सफल रहा। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के पास संसाधनों की अनुपलब्धता के कारण यह प्रयास असफल होता दिख रहा है।

संसाधनों की सीमा एवं अनुपलब्धता ने ग्रामीण क्षेत्र के आर्थिक रूप से कमजोर एवं अभिभावकों की शिक्षा के प्रति जागरूकता में कमी ने विद्यार्थियों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दायरे को सीमित कर दिया। वहीं दूसरी ओर लम्बे समय से विद्यालय बंद होने के कारण विद्यार्थियों में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में काफी अन्तराल आ गया। इस अन्तराल के कारण राज्य के कई ग्रामीण क्षेत्रों में, सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े तबके में अभिभावकों की शिक्षा के प्रति जागरूकता के अभाव के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों का विद्यालय से पुनः जुड़ाव में कमी तथा ड्रॉपआउट विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। राज्य सरकार जनवरी माह में लगभग नौ माह से बंद पड़े विद्यालयों में शिक्षण व्यवस्था को पुनः सुचारू रूप से चलाने पर विचार कर रही है। इस स्थिति में विद्यार्थियों में कोविड-19 महामारी के संक्रमण को फैलने से रोकने तथा विद्यार्थियों को पुनः शिक्षण व्यवस्था की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु जवाबदेही बढ़ जाती है।

**क. सरकार की जवाबदेही**

- विद्यालय में शिक्षण कार्य पुनः शुरू करने से पूर्व अभिभावकों एवं विद्यार्थियों में जागरूकता लाने हेतु केन्द्रीय गृह मंत्रालय द्वारा जारी 'मानक संचालन प्रक्रिया' गाइडलाइन का विभिन्न माध्यमों से व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाएँ।
- विद्यालयों में शिक्षण कार्य को क्रमिक रूप से माध्यमिक स्तर की कक्षाएँ पहले एवं प्रारम्भिक स्तर की कक्षाएँ बाद में शुरू की जाएँ। उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में 9वीं से 12वीं, माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में 9वीं से 10वीं, उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में 6-8वीं, प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में 3-5 वीं कक्षाएँ एक साथ शुरू की जा सकती हैं। उसके बाद 15 दिन के अन्तराल पर क्रमिक रूप से अगली कक्षाओं के विद्यार्थियों को बुलाया जाएँ।
- उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में 40-50 फीसदी कमी की जानी चाहिए, ताकि शीघ्र पाठ्यक्रम पूर्ण कर समय पर परीक्षा आयोजित की जा सके। प्रारम्भिक स्तर के विद्यालयों में पाठ्यक्रम की बजाय प्रायोगिक शिक्षण (जैसे वर्कबुक) व्यवस्था पर जोर दिया जाएँ।
- विद्यालयों में कोरोना वायरस के संक्रमण के बचाव हेतु विभिन्न आवश्यक संसाधनों की खरीद के लिए मुख्यमंत्री कोविड-19 सहायता कोष से अतिरिक्त बजट का आवंटन किया जाएँ।
- राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा हाल ही में आयोजित परीक्षाओं की तर्ज पर परीक्षा के प्रश्न-पत्र एवं समय में कटौती में करने के साथ-साथ मूल्यांकन के अन्य तरीकों पर भी विचार किया जा सकता है।
- विद्यालय में होने वाली सामूहिक शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक गतिविधियों के आयोजन पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाया जाएँ।
- शिक्षक को अन्य कार्यों से पूर्णतः मुक्त रखते हुए उन पर अतिरिक्त कार्य का बोझ डालने की बजाय सहयोगात्मक रवैया अपनाना चाहिए। ताकि वे बिना किसी मानसिक तनाव के शिक्षण कार्य करवा सकें।

- अभिभावकों की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को इस सत्र में विद्यालय गणवेश की बाध्यता से मुक्त रखा जाएँ।
- आँगनबाड़ी तथा पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के 5 वर्ष से कम उम्र के विद्यार्थियों को आँगनबाड़ी या विद्यालय नहीं बुलाया जाए।

**ख. शिक्षकों की जवाबदेही**

- विद्यालय में शिक्षण शुरू होने से पूर्व संपूर्ण विद्यालय परिसर की सफाई एवं कक्षा-कक्ष को सेनेटाईज किया जाएँ।
- प्रतिदिन विद्यालय में शिक्षण कार्य की समाप्ति के पश्चात सम्पूर्ण कक्षा-कक्ष, पेयजल स्थल एवं शौचालयों को सेनेटाईज किया जाए।
- विद्यालय में शिक्षण कार्य शुरू होने से पूर्व अभिभावक-शिक्षक संघ की बैठक आयोजित कर सरकार द्वारा जारी कोविड-19 गाइडलाइन का पालन हेतु प्रेरित करें।
- विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या के अनुरूप हाथ धोने, फुट ऑपरेटेड सेनेटाईज स्टैण्ड, लिक्विड हैण्डवॉश, साबुन एवं जल की शारीरिक दूरी के साथ व्यवस्था की जाएँ।
- विद्यार्थियों के विद्यालय परिसर में पहुँचते ही उनकी स्क्रीनिंग करने के साथ ही उन्हें कक्षा-कक्ष में बैठने हेतु निर्देशित किया जाएँ। ताकि विद्यार्थी सामूहिक रूप से खड़े ना हो तथा शारीरिक दूरी भी बनी रहे।
- कक्षा-कक्ष में पर्याप्त शारीरिक दूरी के साथ बैठने की व्यवस्था करने के साथ-साथ यह भी सुनिश्चित करें कि प्रत्येक विद्यार्थी के मुँह पर साफ-सुथरा मास्क लगा हो।
- प्रत्येक विद्यार्थी को दोपहर का भोजन तथा पानी की बोतल घर से साथ लाने हेतु प्रेरित करें तथा दोपहर के भोजन के वक्त विद्यार्थियों पर निगरानी रखें।
- शिक्षण कार्य के दौरान विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशील एवं सहयोगात्मक व्यवहार के साथ ही उनको अतिरिक्त कार्य देने से बचें।
- विद्यालय से नहीं जुड़ने वाले विद्यार्थियों को पुनः जोड़ने के लिए हर संभव प्रयास किया जाएँ तथा पलायन करने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों से सम्पर्क किया जाए।
- किसी भी विद्यार्थी में संक्रमण के शुरूआती लक्षण पाए जाने की स्थिति में उनसे दूरी बनाने की बजाए सहयोग के साथ उपचार हेतु स्वास्थ्य विभाग को सूचित करें।
- मौसम परिवर्तन के कारण विद्यार्थियों में सर्दी-जुकाम, खाँसी, बुखार जैसी मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। ऐसी स्थिति में विद्यार्थी को उपचार लेने के साथ घर पर आराम करने की सलाह दें। उसे किसी भी स्थिति में विद्यालय नहीं बुलाए। परीक्षा आदि की स्थिति में उसके बैठने की अलग से व्यवस्था की जाएँ।
- कक्षा-कक्ष में आने-जाने से पूर्व साबुन से अच्छी तरह हाथ धोकर जाएँ तथा विद्यार्थी के साथ किसी वस्तु के लेन-देन से पूर्व हाथों को अच्छी तरह सेनेटाईज करें।

**ग. अभिभावकों की जवाबदेही**

- अपने बच्चों को विद्यालय भेजने से पूर्व विद्यालय में आयोजित शिक्षक-अभिभावक संघ की मीटिंग में अनिवार्य रूप से भाग ले तथा शिक्षकों द्वारा दी गई सलाह का पूर्णतः पालन करें।
- शिक्षक कार्य में बच्चों के प्रति सकारात्मक, सहयोगात्मक एवं संवेदनशील उपहार के साथ-साथ शिक्षकों के निरंतर सम्पर्क में रहें।
- बच्चों को विद्यालय भेजने से पूर्व उनकी स्वच्छता का विशेष ध्यान रखने के साथ-साथ आवश्यक साधन जैसे मास्क, पानी की बोतल, टिफिन आदि साथ भेजने का भी ध्यान रखें।
- मौसम परिवर्तन के कारण बच्चों या घर के किसी सदस्य में सर्दी-जुकाम, बुखार जैसी मौसमी बीमारी हो तो उसे विद्यालय भेजने की बजाय उपचार लेने के साथ घर पर आराम करें।
- बच्चों के विद्यालय आने-जाने से पूर्व घर पर अच्छे से साबुन से हाथ धोने की आदत डालें।

**घ. विद्यार्थियों की जवाबदेही :**

- विद्यालय जाते समय आवश्यक संसाधन जैसे सेनेटाईजर, मास्क, पानी की बोतल, टिफिन आदि साथ लेकर जाएँ।
- समय से पूर्व विद्यालय पहुँचे तथा विद्यालय में समूह में एकत्रित होने से बचें एवं विद्यालय परिसर में हर समय मुँह मास्क से ढककर रखें।
- शिक्षकों द्वारा दिए गए निर्देशों का पूर्णतः पालन करने के साथ ही अपने शिक्षण के प्रति संवदेनशील रहें।
- कक्षा-कक्ष में जाने से पूर्व साबुन से अच्छी तरह अपने हाथ धोकर जाएँ तथा विद्यार्थी या शिक्षक के साथ किसी वस्तु के लेन-देन से पूर्व हाथों को अच्छी तरह सेनेटाईज करें।
- मौसम परिवर्तन के कारण स्वयं या घर के किसी भी सदस्य में सर्दी-जुकाम, खांसी, बुखार जैसी मौसमी बीमारी के लक्षण होने पर विद्यालय जाने की बजाय उपचार लेने के साथ घर पर आराम करें।
- किसी विषय या विषय वस्तु पर संशय या जानकारी का अभाव होने पर शिक्षक, मित्र आदि से समझने के साथ ही घर पर निरन्तर अभ्यास करें।

इस प्रकार हम सब विद्यार्थियों के भविष्य को मद्देनजर रखते हुए अपनी-अपनी जवाबदेही के प्रति संवेदनशील एवं ईमानदारी के साथ उसका निर्वहन करते हुए विद्यालयों में लम्बे अन्तराल के बाद पुनः शिक्षण कार्य संचालित करेंगे तो इस महामारी के प्रकोप से बच सकते हैं। साथ ही जब तक इस बीमारी की कोई वैक्सीन या उपचार नहीं आता तब तक इस वायरस के संक्रमण से बचने एवं निपटने हेतु अत्यधिक सतर्कता ही एकमात्र उपाय हैं।

अति आत्मविश्वास में आकर यह मान लेना कि हमारे आसपास कोई संक्रमित नहीं है। इसलिए मेरे पर इसका असर नहीं होगा यह कहकर गाइडलाइन की पालना नहीं करना वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अपने स्वयं, परिवार, समाज तथा देश के प्रति गैर जिम्मेदारी पूर्ण व्यवहार होगा। जो न केवल आपको ही बल्कि सम्पूर्ण विद्यालय, परिवार, समाज को खतरे में डाल सकता हैं। इसलिए एक जागरूक नागरिक के उच्च गुणों तथा आत्मानुशासन में रहते हुए अपने देश को इस संकट की घड़ी से उभारने तथा विद्यार्थियों को शिक्षण कार्य एवं विद्यालय से पुनः जोड़ने में अपने आपको एक कोरोना योद्धा के रूप में स्थापित कर अन्य के लिए मिशाल बन सकते हैं।

प्राध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुड़ाबीड़ा,
पंचायत समिति सिवाना (बाड़मेर)
**मो: 7611004501**

## विशेष - शिक्षा

# दृष्टिबाधित बालक-बालिकाओं का अध्ययन हुआ सरल

❐ हेमेन्द्र कुमार सोनी

विज्ञान एवं तकनीकी मानव सभ्यता के साथ ही उत्पन्न एक विकासात्मक घटक है, जिसकी बुनियाद पर खड़े होकर आधुनिक मानव ने अपने विकास को सुनिश्चित किया है, लेकिन इस तीव्र गतिमान जीवन में वही सफल होता है जो शारीरिक, मानसिक व सामाजिकता से स्वस्थ है। इस दौड़ में फिर भी कुछ मानव पिछड़े रह जाते हैं। विभिन्न विकासों में आर्थिक विकास समय की माँग है। इससे कोई अछूता नहीं रहे इसका प्रयास वे होनहार आविष्कारक कर रहे हैं जिनके विश्वास पर संसार विज्ञान की खोजों से परिचित हो रहा है और यह भी सर्वविदित है कि तकनीकी जीवन जीने के तरीकों को आसान बनाती है।

**हम बात कर रहे हैं दिव्यांगों की**–क्या दिव्यांगों को एक सभ्य जीवन जीने का अधिकार नहीं है? क्या उनके मन में यह बात नहीं आती है कि वे भी तकनीकी के युग में अपने को नवीनतम ज्ञान से जोड़ कर स्वाभिमानी बनें? इस पर मनन करते हुए हम यहाँ इन्फॉरमेशन कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी (आईसीटी.) पर प्रकाश डालना चाहेंगे। आखिर क्या है आईसीटी– सामान्य से अर्थ में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी। इसका उपयोग इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से सूचना के प्रसार, संग्रहण, निर्माण, प्रदर्शन या आदान–प्रदान में किया जाता है। जो संचार के विभिन्न माध्यम यथा रेडियो, टीवी. वीडियो, डीवीडी, टेलीफोन (लैंडलाइन और मोबाइल, स्मार्ट फोन), सैटेलाइट प्रणाली, कम्प्यूटर और नेटवर्क हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर आदि होते हैं। नवीन व्यवस्थाओं में इनके अतिरिक्त इन प्रौद्योगिकी से जुड़ी इन सेवाओं और उपकरण जैसे–वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, ई–मेल और ब्लॉग्स आदि भी आईसीटी में माने जा रहे हैं।

प्रौद्योगिकी के इस क्रांतिकारी युग में आईसीटी का उपयोग सामान्य व्यक्ति ही नहीं अब तो दिव्यांग व्यक्ति भी कर सकते हैं। दिव्यांगता का क्षेत्र अब सीमित क्षेत्र नहीं रहा। फिर भी यहाँ दृष्टि दिव्यांग के लिए आईसीटी से संबंधित बात हो रही है। युग निरन्तर प्रगति कर रहा है। ऐसे में एक ऐसा सॉफ्टवेयर जो कम्प्यूटर व लैपटॉप में चलाया जाता है और पूर्ण दृष्टिबाधितों के लिए मार्गदर्शक जैसा कार्य कर रहा है, है ना अचरज की बात। जब मानव के चहुँमुखी विकास की बात आती है तो दृष्टि दिव्यांगता से ग्रसित बालक–बालिका, छात्र–छात्रा, सेवा पूर्व व सेवारत शिक्षक इससे वंचित क्यों रहें? तकनीकी के इस दौर में इन्हें कैसे छोड़ा जा सकता है?

ये कैसा सॉफ्टवेयर है? इसका नाम है–नॉन विजुवल डेस्कटॉप एक्सेस अर्थात एक ऐसा सॉफ्टवेयर जो कम्प्यूटर व लैपटॉप की स्क्रीन को पढ़कर बोलते हुए उपयोगकर्त्ता को श्रवण कराता है। एनवीडीए माइक्रोसॉफ्ट विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम के लिए एक स्वतंत्र और ऑपन सोर्स निःशुल्क स्क्रीन रीडर है, जो दृष्टि बाधित लोगों को कम्प्यूटर का उपयोग करने में सक्षम बनाता है। यह एक कम्प्यूटरीकृत आवाज में स्क्रीन पर आने वाली सामग्री को पढ़ता है और उपयोगकर्त्ता कर्सर से स्क्रीन पर प्रदर्शित सामग्री के प्रासंगिक क्षेत्र में की बोर्ड की सहायता लेकर पढ़कर श्रवण करता है।

विश्व की 48 भाषाओं में काम करने वाले इस अद्‌भुत स्क्रीन रीडर सॉफ्टवेयर का आविष्कार माइकल कुरन ने 2006 में किया। यह सॉफ्टवेयर पूर्ण दृष्टिबाधितों के उपयोग में आता है जो अध्ययन व दैनिक जीवन में आने वाली कई कठिनाइयाँ कम करता है। इसके उपयोग में माउस की आवश्यकता नहीं पड़ती है, क्योंकि ये स्क्रीन रीडर सॉफ्टवेयर है। इसकी स्पीच रोबोटिक होती है लेकिन मानव वाणी में अब यह उपलब्ध है। यह केवल टैक्स्ट को ही पढ़ कर बताता है न कि किसी ग्राफिक्स को। कम्प्यूटर या लैपटॉप की स्क्रीन बंद करके काम में लेने पर बैटरी 10 मिनट ज्यादा काम करती है। यह सॉफ्टवेयर मात्र 18 से 20 एमबी का होता है। इसके उपयोग हेतु सिस्टम में ऑडियो ड्राइवर का होना जरूरी है। कीबोर्ड में इन्सर्ट की को एनवीडीए की भी कहते हैं।

दृष्टिबाधित बालक–बालिका, छात्र–छात्रा, सेवा पूर्व व सेवारत शिक्षक को इसके माध्यम से शिक्षा, रोजगार, ईमेल, सोशल नेटवर्किंग, ऑनलाइन शॉपिंग, नेट बैंकिंग, ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम, चैटिंग, मनोरंजन, परिवहन की जानकारी, समाचार पढ़ना, वर्ड व एक्सल में काम करना। इसके ब्रेल डिस्प्ले को आउटपुट पर टेक्स्ट को ब्रेल में कनवर्ट करने सहित कई कार्य कर सकते हैं। राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद् के माध्यम से पूर्व में भी दृष्टि बाधित बालक–बालिकाओं को लैपटॉप वितरित किए गए थे। जिनके संचालन हेतु दक्ष प्रशिक्षकों व साईट सेवर राजस्थान के माध्यम से प्रशिक्षण आयोजित किए गए। वर्तमान में राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् भी इसी क्रम को जारी रखे हुए हैं। प्रशिक्षण पश्चात् दृष्टिबाधित बालक–बालिकाओं को कक्षानुसार पाठ्यक्रम स्वयं डाउनलोड कर अपने लैपटॉप पर स्वाध्याय कर शिक्षा की धारा में स्थान स्थापित कर रहे हैं। ये ऐसी क्रांति आई की विद्यार्थी ही नहीं शिक्षकों के लिए अध्ययन–अध्यापन सुलभ हो गया है। कहा गया है कि–

**आलसस्य कुतः विद्या अविद्यस्य कुतः धनम्।**
**अधनस्य कुतः मित्रम् अमित्रस्य कुतः सुखम्ः।।**

अर्थात आलसी को विद्या कहाँ, अनपढ़ या मूर्ख को धन कहाँ, निर्धन को मित्र कहाँ और अमित्र को सुख कहाँ।

लेकिन हमारे होनहार दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों ने आलस्य त्याग दिया और संचार की तकनीकी से जुड़ गए। अब वे अनपढ़ नहीं रहेंगे, यही प्रयास करेंगे कि दूसरे भी ज्ञानवान बनें, शिक्षित होने पर मित्र व सुख सदैव प्राप्त होता रहेगा। इसी आशा व विश्वास के साथ।

(CWSN) एवं एसआरजी समग्र शिक्षा
गंगरार, चित्तौड़गढ़, (राज.)
**मो: 9461184546**

जल-जीवन

# हम जल बिन अधूरे

❒ पूनम पाण्डे

जल जोड़ने का काम करता है। जल से जुड़ा तो मानव और सभ्य होता चला गया। उसमें सामाजिक संस्कार विकसित होने लगे। जंगल में गुफा के भीतर रहने वाला मनुष्य जब जल से तरंगित हो गया तब वह मानव उत्सव भी मनाने लगा। आज भी पारंपरिक विवाह संस्कार में सात महासागर और गंगा नदी का विविध पावन श्लोकों में उपस्थित होना और वर-वधू के साथ सबको आशीर्वाद प्रदान करना जीवन में जल के महत्त्व का परिचायक है। पानी बहता रहता है तो साफ और चमकदार लगता है। साँसें भी चलती रहती हैं तो जीवन गतिमान रहता है।

हम पंच तत्वों से रचे गए हैं- **'क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा।** पंच तत्व का बना शरीर।।' इसमें जल बहुत मूल्यवान है। भारतीय दर्शन और परंपरा में पानी केवल वो तरल पदार्थ मात्रा नहीं है जो प्यास बुझाता है बल्कि जीवन दर्शन भी है। पानी हमारी मानव संस्कृति का संरक्षक भी है। मानव इतिहास में जीवन की प्रगति की प्रतीक सभ्यताओं का जन्म और पल्लवन पानी के पास ही हुआ। फिर चाहे वह सिंधु नदी के किनारे हड़प्पा या दजला हो या फरात नदियों के पास मेसोपोटामिया की सभ्यता हो। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि जल ने जंगली नर को 'मानव' बनाने में अभूतपूर्व योगदान दिया है।

विश्व भर में भारत सहित अनेक देश आज भी नदी, ताल, झील आदि के बहाने पानी को देवता मानकर पूजा करते हैं। संतों ने पानी को गुरु, संरक्षक, साथी, हितैषी आदि का नाम देकर उसके महत्त्व को बरकरार रखा है। पहली बारिश को भी दैवीय चमत्कार मानकर पूजा जाता था।

भारत के रेतीले राज्य राजस्थान तथा गुजरात में पानी बरबाद करने वालों के लिए सैकड़ों कहावतें और कहानियाँ कही-सुनी जाती हैं। एक पौराणिक कथा के अनुसार दस बूँद से अधिक पानी बेकार बहाने वाले को दस साल के भीतर दैहिक रोगों का सामना करना पड़ता है जिससे दुष्प्रभाव के चलते वो पानी ना तो पी सकता है और ना ही पचा सकता है।

इतना ही नहीं पानी फेंकने वाले को अगले जन्म में ऐसा कीट, पतंगा बनना पड़ता है जो पानी को स्पर्श करते ही जान गंवा बैठता है। कितने विद्वान और सतर्क थे हमारे पूर्वज जो जल की इस सच्चाई से अच्छी तरह वाकिफ थे कि रुपया, रत्न, राज्य आदि खूब बनाए और बढ़ाए जा सकते हैं मगर जल को बस बचाया ही जा सकता है। इसको कारखाने में उत्पाद की तरह वस्तु की भाँति बना नहीं सकते।

प्रत्येक मांगलिक अवसर चाहे जन्म हो या नामकरण संस्कार, विवाह, गृह प्रवेश हो या कीर्तन, भागवत उनमें पवित्र नदियों का जल लाकर रखने की अनगिनत परंपराएँ देखने को मिलती हैं। कुछ लोग हर तीर्थ यात्रा के बाद वहाँ का जल लाकर पूजाघर में रखते हैं या कुएँ, बावड़ी आदि में डाल देते हैं।

कुछ धर्मों में रिवाज है कि किसी मांगलिक अवसर पर पाँच नदियों का पानी मिलाकर पावन स्नान किया जाए। इसका छिपा हुआ मतलब शायद यही होता होगा कि लोग पानी की इज्जत करें और उसे इतना खास समझें। कालिदास से जुड़े कुछ प्रसंग हैं जिसमें एक यह भी है जब कालिदास को माँ सरस्वती ने वेष बदलकर सबक सिखाना चाहा और अनेक प्रश्न पूछे तब एक सवाल के जवाब में सरस्वती जी ने उनको यह कहकर निरूत्तर कर दिया कि कालिदास...'ये तुम्हारे ग्रंथ और कोरा ज्ञान नहीं बल्कि वो जल है जो सबसे ताकतवर है।' यह कहानी बहुत प्रेरित करती है।

अक्सर आता है 'संकल्प'। यह संकल्प हमेशा जल को हाथ में लेकर ही किया जाता है। इसका कारण यह है कि जल कभी भी पूरी तरह मिटता नहीं। भाप बनता है, कभी बादल तो फिर पानी बन जाता है। इसलिए जल को परम शक्ति माना गया है। हमारे आयुर्वेद में तो हजारों तरह की औषधि बस जल से ही बनाई जाती हैं। जल में नीम मिला तो चर्म रोग, मधुमेह की दवा, जल में तुलसी मिली तो ज्वर की दवा, जल में पुदीना और धनिया का पत्ता मिला तो लू, पेचिश, अतिसार की दवा, जल में नींबू की चार बूंदें डाली तो बैचेनी, घबराहट, अपच की दवा चंद मिनटों में तैयार हो जाती है।

जल को धन, दौलत की तरह लक्ष्मी रूप भी माना गया है। जल को ऐसा संत कहा गया है जो कभी मैला या गंदा नहीं होता। दरअसल प्राकृतिक सत्य यह है कि जल में खुद को साफ करने का गुण होता है। जल और माटी एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। जल का संबंध मान-अपमान से भी है। उत्तर प्रदेश के कुछ जमींदारी इलाकों में घर पर पधारे मेहमान को पानी नहीं पिलाने का मतलब उसका अपमान करना होता है। ग्रामीण अंचलों में लोकगीत गाए जाते हैं कि राहगीर को एक लोटा जल पिलाना ईश्वर की पूजा के समान है।

पानी हमारे अस्तित्व के लिए इतना अनिवार्य है फिर भी अपने स्वार्थ और अदूरदर्शिता के कारण हम जल को बरबाद कर रहे हैं। बारिश का पानी संरक्षित करके पानी की कमी दूर की जा सकती है। राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र आदि में परंपरागत टांके और बावड़ी बनाकर बारिश का जल पूरे साल के लिए बचाया जाता है। जल को धन की तरह बचाना होगा क्योंकि जल को फसल की तरह उगाया नहीं जा सकता।

**जल ही जीवन है।**
**जल है तो कल है।**
**जल की हर बूंद अमृत है।**
**जल के बिना संसार मृत है।।**

दुर्गेश, पुष्कर रोड, कोटड़ा, अजमेर
(राज.)-305004
**मो: 9828792720**

# आदेश-परिपत्र : जनवरी, 2021

1. **कोविड–19 की गाइडलाइन के अनुरूप वर्तमान सत्र 2020–21 में विद्यालय में अध्ययन की निरंतरता बनाए रखने के संबंध में।**
2. **प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग में कार्मिकों के पेंशन प्रकरण काफी संख्या में बकाया रहने के कारण पेंशन प्रकरण अभियान के संबंध में।**

## 1. कोविड–19 की गाइडलाइन के अनुरूप वर्तमान सत्र 2020–21 में विद्यालय में अध्ययन की निरंतरता बनाए रखने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/मा-स/विविध-दिवस/2018 दिनांक 08.12.2020 ● विषयः कोविड–19 की गाइडलाइन के अनुरूप वर्तमान सत्र 2020–21 में विद्यालय में अध्ययन की निरंतरता बनाए रखने के संबंध में ●परिपत्र।

कोविड–19 की गाइडलाइन अनुरूप वर्तमान सत्र 2020–21 में राज्य के सभी राजकीय एवं गैरराजकीय विद्यालयों को नियमित कक्षा संचालन, वर्तमान तक नहीं हो सका है। अध्ययन की निरंतरता के लिए विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक, स्माइल अध्ययन सामग्री, ई–कक्षा, डिजिटल सामग्री, कार्यपुस्तिकाएँ उपलब्ध करवाई जा रही है तथा इस अध्ययन में उत्पन्न जिज्ञासाओं के समाधान के लिए कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों को अभिभावकों की सहमति से विद्यालय में दिनांक 21.09.2020 से आने की अनुमति हेतु निर्देश क्रमांक 18.09.2020 जारी किए गए थे। उक्त निर्देश दिनांक 18.09.2020 के अनुक्रम में अध्ययन की निरन्तरता, प्रायोगिक कार्य तथा कक्षोन्नति एवं परीक्षा/आकलन हेतु केवल सत्र 2020–21 हेतु अग्रांकित प्रावधान किए जा रहे हैंः–

**1. कक्षा : 09 से 12 हेतु**

- जिज्ञासा समाधान एवं मार्गदर्शन के लिए अभिभावकों की सहमति से विद्यालय आने वाले कक्षा 09 से 12 के विद्यार्थियों को जिज्ञासा समाधान के अतिरिक्त विद्यालय आने के दौरान सप्ताह भर के लिए गृहकार्य भी दिया जाएगा।
- प्रदत्त गृहकार्य हेतु विद्यार्थी अपनी विषयवार नोटबुक संधारित करेगा, जिसे साप्ताहिक रूप से जाँचा जाएगा।
- विषयाध्यापक विद्यार्थी की जिज्ञासा समाधान के अतिरिक्त, गृहकार्य देने तथा जाँचकार्य भी आवश्यक रूप से करेंगे।
- सत्र 2020–21 हेतु बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम का संक्षिप्तीकरण किया गया है, जो कि बोर्ड एवं विभागीय वेबसाइट पर उपलब्ध है। वार्षिक/बोर्ड परीक्षा इसी संशोधित पाठ्यक्रम आधारित होगी।
- कक्षोन्नति का आधार वार्षिक/बोर्ड परीक्षा ही होगा।
- वार्षिक/बोर्ड परीक्षा हेतु 20 प्रतिशत अंक आंतरिक मूल्यांकन के एवं 80 प्रतिशत अंक लिखित परीक्षा के निर्धारित हैं। (प्रायोगिक विषयों के अतिरिक्त)
- वार्षिक/बोर्ड परीक्षा में निर्धारित 20 प्रतिशत आंतरिक मूल्यांकन के अंक का आधार विद्यार्थी द्वारा संधारित गृहकार्य पुस्तिका होगी, जो परीक्षा से पूर्व विद्यालय में जमा कराई जाएगी।
- कक्षा 11 एवं 12 के प्रायोगिक विषयों में गृहकार्य आधारित आंतरिक मूल्यांकन निर्धारित प्रायोगिक अंकों के अतिरिक्त शेष अंकों का 20 प्रतिशत होगा। (जैसे जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, भूगोल में 14, चित्रकला, संगीत में 6 अंक)

**प्रायोगिक विषयों हेतु प्रावधान**

- कक्षा–11 व 12 के जिन विषयों में प्रायोगिक परीक्षा का प्रावधान है उन विषयों के विद्यार्थी, जिज्ञासा समाधान हेतु विद्यालय आने के साथ प्रयोगशाला की क्षमता अनुरूप एक बार में एक प्रयोग का अभ्यास कर, प्रायोगिक कार्य की तैयारी करेंगे।
- संस्थाप्रधान द्वारा मार्गदर्शन के लिए आने वाले कक्षा 11–12 के विद्यार्थियों के लिए ऐसी व्यवस्था की जावे, कि प्रत्येक प्रायोगिक विषय के विद्यार्थी को कम से कम सप्ताह में एक बार प्रयोगशाला में प्रायोगिक कार्य का अवसर प्राप्त हो सके।
- संस्थाप्रधान द्वारा प्रायोगिक कार्य हेतु यह सुनिश्चित किया जाएगा कि प्रयोगशाला में किसी भी एक समय से प्रयोगशाला की क्षमता से आधे से कम विद्यार्थी ही उपस्थिति रहें एवं कोविड–19 की गाइड लाइन की पालना हो।
- विद्यार्थी को प्रायोगिक कार्य हेतु दो घंटे का समय उपलब्ध करवाया जाकर, विषय के निर्धारित पाठ्यक्रम में से दस प्रायोगिक कार्य करवाए जाएँ।
- विद्यार्थियों द्वारा किए गए प्रायोगिक कार्य की एक प्रायोगिक पुस्तिका का संधारण करवाया जाएगा।
- विषयवार चयनित 10 प्रायोगिक कार्य, अन्तिम प्रायोगिक परीक्षा का आधार होंगे। विद्यालय उक्त 10 प्रायोगिक कार्य को चिह्नित कर तैयारी कराएँगे।
- इस कक्षा स्तर के लिए प्रायोगिक परीक्षा का आयोजन मुख्य परीक्षोपरान्त आयोजित होना प्रस्तावित है।
- प्रायोगिक परीक्षा बोर्ड/विभाग द्वारा विषय हेतु निर्धारित अंक की होगी।

- अंतिम प्रायोगिक परीक्षा में से 50 प्रतिशत अंक (जैसे रसायन में 30 में से 15 अंक) विद्यार्थी द्वारा संधारित प्रायोगिक अभ्यास पुस्तिका के आधार होंगे।
- शेष 50 प्रतिशत अंक (जैसे रसायन में 30 में से 15 अंक) अंतिम प्रायोगिक परीक्षा के अनुरूप होंगे।
- गैर सरकारी विद्यालयों में भी कक्षा 9 से 12 हेतु गृहकार्य, प्रायोगिक अभ्यास कार्य, परीक्षा योजना तथा पैपर पैटर्न राजकीय विद्यालयों के अनुसार ही होगा।

**प्रश्न पत्र पैटर्न**

- सत्रः 2020-21 हेतु प्रश्न-पत्र में बहु वैकल्पिक प्रश्नों को भी सम्मिलित किया जाएगा।
- अन्य अतिलघुत्तरात्मक, लघुत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्नों में आंतरिक चयन (यथा-या, अथवा, कोई दो...) का विकल्प उपलब्ध करवाया जाएगा।
- इसी प्रकार निबंधात्मक प्रश्नों की संख्या कम की जानी है।
- भाषा आधारित विषयों के प्रश्न-पत्रों में पठित व अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्न भी सम्मिलित किए जाएँगे, जिसमें पर्याप्त विकल्प भी उपलब्ध होंगे।
- विद्यार्थियों की परीक्षा तैयारी हेतु परीक्षा योजना/पैटर्न अनुरूप नमूने के प्रश्न-पत्र (मॉडल प्रश्न-पत्र) 15 जनवरी 2021 के उपरान्त उपलब्ध करवाए जाएँगे।

**2. कक्षा 06 से 08 हेतु**

- सत्र 2020-21 हेतु कक्षा 06 से 08 तक के विद्यार्थियों को 'आओ घर में सीखे' कार्यक्रम अन्तर्गत स्माइल-2, ई-कक्षा आदि के माध्यम से निरन्तर अध्ययन करवाया जा रहा है।
- इन विद्यार्थियों के लिए फरवरी-2021 में गतिविधि आधारित कार्य-पुस्तिकाएँ उपलब्ध करवाई जाएगी।
- सम्बन्धित शिक्षकगण इन उपलब्ध कराई गई कार्य-पुस्तिकाओं को विद्यार्थियों द्वारा पूर्ण किया जाना सुनिश्चित करेंगे। वार्षिक-परीक्षा, संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार ली जाएगी।
- यह कार्य-पुस्तिकाएँ, स्माइल-2 के तहत दिए गृहकार्य से तैयार पोर्टफोलियो, अन्तिम/वार्षिक परीक्षा का भाग होंगे।
- सत्र 2020-21 हेतु आर.एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा पाठ्यक्रम का संक्षिप्तीकरण किया गया है, जो कि आर.एस.सी.ई.आर.टी. एवं विभागीय वेबसाइट पर उपलब्ध है।
- कक्षोन्नति का आधार अंतिम/वार्षिक परीक्षा ही होगा। अंतिम/वार्षिक परीक्षा में 40 प्रतिशत अंक आंतरिक मूल्यांकन (कार्यपुस्तिका, गृहकार्य एवं पोर्टफोलियो आधारित) के होंगे।
- शेष 60 प्रतिशत में से 10 प्रतिशत अंक, मौखिक परीक्षा एवं 50 प्रतिशत अंक लिखित परीक्षा के रहेंगे।
- आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों हेतु बोर्ड परीक्षा का आयोजन किया जाएगा।
- आठवीं बोर्ड परीक्षा में अंक विभाजन उपर्युक्तानुसार ही होगा।
- प्रश्न-पत्र पैटर्न में कक्षा 9 से 12 में उल्लेखित प्रावधानों के अनुरूप परिवर्तन किया जाएगा।
- गैर सरकारी विद्यालयों में भी परीक्षा एवं पेपर पैटर्न उक्तानुसार ही होगा।
- आंतरिक मूल्यांकन के लिए गैर सरकारी विद्यालय निर्धारित संशोधित पाठ्यक्रम के अनुरूप गृहकार्य तैयार कर विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाएँगे। इस हेतु विभागीय वेबसाइट पर उपलब्ध कराई जाने वाले 'कार्यपुस्तिकाओं' का उपयोग भी किया जा सकता है।
- ऑनलाइन शिक्षण नहीं लेने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों को भी उक्त तैयार गृहकार्य उपलब्ध कराया जाना है। इस हेतु यथासंभव अभिभावकों को कम से कम विद्यालय बुलाया जाए एवं कोविड-19 गाइडलाइन की पालना की जाए।

**3. कक्षा 03 से 05 हेतु**

- सत्र 2020-21 हेतु कक्षा 03 से 05 तक के विद्यार्थियों को 'आओ घर में सीखें' कार्यक्रम के अन्तर्गत कार्य-पुस्तिका के आधार पर, स्माइल-2 के तहत गृहकार्य आदि के माध्यम से निरन्तर अध्ययन करवाया जा रहा है।
- सत्र 2020-21 हेतु आर.एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा पाठ्यक्रम का संक्षिप्तीकरण किया गया है, जो कि आर.एस.सी.ई.आर.टी. एवं विभागीय वेबसाइट पर उपलब्ध है।
- कक्षोन्नति का आधार अंतिम/वार्षिक परीक्षा ही होगा। इन विद्यार्थियों को एटग्रेड कार्य-पुस्तिकाएँ उपलब्ध करवाई जा चुकी है।
- विद्यार्थी को उपलब्ध कराई गई कार्य-पुस्तिकाओं (कक्षा स्तर एवं निम्न कक्षा स्तर) को पूर्ण करना है परन्तु परीक्षा नवीन संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार ही होगी।
- सम्बन्धित संस्थाप्रधान, प्रत्येक विद्यार्थी तक एटग्रेड कार्य पुस्तिका की पहुँच सुनिश्चित करेंगे।
- सम्बन्धित शिक्षक, कार्य-पुस्तिकाओं को विद्यार्थियों द्वारा पूर्ण करवाना सुनिश्चित करेंगे।
- तैयार कार्य-पुस्तिकाओं एवं स्माइल-2 के तहत तैयार पोर्टफोलियो ही अंतिम परीक्षा/योगात्मक आकलन का आधार करेंगे।
- कक्षोन्नति का आधार अंतिम परीक्षा/योगात्मक आकलन होगा। जिसमें 50 प्रतिशत अंक आंतरिक मूल्यांकन (कार्यपुस्तिका, गृहकार्य एवं पोर्टफोलियो आधारित) तथा 10 प्रतिशत अंक मौखिक

परीक्षा एवं 40 प्रतिशत अंक लिखित परीक्षा हेतु होंगे।

- उक्तानुसार ही पांचवी कक्षा के विद्यार्थियों हेतु बोर्ड परीक्षा का आयोजन किया जाएगा।
- गैर सरकारी विद्यालयों में भी परीक्षा एवं पेपर पैटर्न उक्तानुसार ही होगा।
- आंतरिक मूल्यांकन के लिए गैर सरकारी विद्यालय निर्धारित संशोधित पाठ्यक्रम के अनुरूप गृहकार्य तैयार कर विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाएँगे इसे हेतु विभागीय वेबसाइट पर उपलब्ध कराई जाने वाले 'कार्यपुस्तिकाओं' का उपयोग भी किया जा सकता हे।
- ऑनलाइन शिक्षण नहीं लेने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों को भी उक्त तैयार गृहकार्य उपलब्ध कराया जाना है। इस हेतु यथासंभव अभिभावकों को कम से कम विद्यालय बुलाया जाए एवं कोविड-19 गाइडलाइन की पालना की जाए।

**कक्षा 01 से 02 हेतु**

- मौजूदा सत्र 2020-21 हेतु कक्षा 01 से 02 तक के विद्यार्थियों को 'आओ घर में सीखें' कार्यक्रम अन्तर्गत स्माइल एवं कार्य-पुस्तिका के माध्यम से अध्ययन करवाया जा रहा है।
- इन विद्यार्थियों के लिए गतिविधि आधारित कार्य-पुस्तिकाएँ उपलब्ध करवाई जा रही है।
- सम्बन्धित संस्थाप्रधान, प्रत्येक विद्यार्थी तक एटग्रेड कार्य-पुस्तिका की पहुँच सुनिश्चित करेंगे।
- सम्बन्धित शिक्षकों एवं अभिभावकों की सहायता से विद्यार्थियों द्वारा इन कार्य-पुस्तिका को पूर्ण किया जा सकेगा।
- विद्यार्थियों द्वारा अभिभावकों एवं शिक्षकों की सहायता से पूर्ण की गई कार्य-पुस्तिकाओं के आधार पर कक्षोन्नति की जाएगी।
- गैर सरकारी विद्यालयों में परीक्षा पैटर्न उक्तानुसार ही होगा।
- आंतरिक मूल्यांकन के लिए गैर सरकारी विद्यालय निर्धारित संशोधित पाठ्यक्रम के अनुरूप गृहकार्य तैयार कर विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाएँगे। इस हेतु विभागीय वेबसाइट पर उपलब्ध कराई जाने वाले 'कार्य-पुस्तिकाओं' का उपयोग भी किया जा सकता है।
- ऑनलाइन शिक्षण नहीं लेने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों को भी उक्त तैयार गृहकार्य उपलब्ध कराया जाना है। इस हेतु यथासंभव अभिभावकों को कम से कम विद्यालय बुलाया जाए कोविड-19 गाइडलाइन की पालना की जावे।

बोर्ड परीक्षाओं का आयोजन दिनांक 15 मई, 2021 के उपरान्त तथा अन्य परीक्षाएँ द्वारा निर्धारित समयावधि में होनी प्रस्तावित है, जिसके सम्बन्ध में तत्समय निर्देश जारी किए जाएँगे। समस्त संस्थाप्रधान बोर्ड एवं आर.एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा संशोधित पाठ्यक्रम को सभी शिक्षकों/समस्त विद्यार्थियों को उपलब्ध कराया जाना सुनिश्चित कराएँगे। उक्त संशोधित पाठ्यक्रम बोर्ड/आर.एस.सी.ई.आर.टी. एवं विभागीय वेबसाइट तथा शाला दर्पण उपलब्ध है जहाँ से डाउनलोड किया जा सकता है।

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

## 2. प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग में कार्मिकों के पेंशन प्रकरण काफी संख्या में बकाया रहने के कारण पेंशन प्रकरण अभियान के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/लेखा डी-2/पेंशन प्रकरण/34925/01 दिनांक 10.12.2020 ● विषयः प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग में कार्मिकों के पेंशन प्रकरण काफी संख्या में बकाया रहने के कारण पेंशन प्रकरण अभियान के संबंध में। ●कार्यालय आदेश

प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग में कार्मिकों के पेंशन प्रकरण काफी संख्या में बकाया रहने के कारण दिनांक 01.01.2021 शुक्रवार 29.01.2021 शुक्रवार तक राज्यस्तरीय पेंशन प्रकरण निस्तारण अभियान चलाया जाएगा। पेंशन प्रकरण निस्तारण अभियान के प्रभावी संचालन समन्वय एवं मॉनिटरिंग हेतु राज्यस्तरीय समिति वित्तीय सलाहकार माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के निर्देशन में निम्नानुसार गठन किया गया हैः-

1. श्री नीरज बुडानिया, लेखाधिकारी (अनुदान) माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर।
2. श्री चन्द्र प्रकाश सिंघल, सहायक लेखाधिकारी, प्रथम, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर।
3. श्री विनोद जोशी, सहायक लेखाधिकारी प्रथम, प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर।
4. श्री विजय कुमार शर्मा, सहायक प्रशासनिक अधिकारी (विधानसभा अनुभाग) प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर।
5. श्री महेन्द्र चौहान, सहायक प्रशासनिक अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर।

उपर्युक्त राज्यस्तरीय समिति अभियान के पश्चात निरन्तर मॉनिटरिंग कर कार्मिकों को समय पर पेंशन का भुगतान की व्यवस्था सुनिश्चित करेंगे। अभियान प्रारम्भ होने से पूर्व तैयारी हेतु निम्न कार्यवाही 31 दिसम्बर तक समयबद्ध रूप से करेंः-

1. दिनांक 31मार्च, 2022 तक सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिकों के सेवानिवृत्ति आदेश जिसमें विभागीय जाँच बकाया होने/न होने का प्रमाण पत्र अंकित हो (राजस्थान पेंशन नियम 96 परिशिष्ठ 8 के अनुसार)
2. संभागस्तर पर संयुक्त निदेशक व जिलास्तर पर मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के वरिष्ठतम लेखाकर्मी व पेंशन सम्बन्धित कार्मिक दो सदस्यीय संभाग/जिलास्तरीय समिति गठित कर उनके ई-मेल व मोबाइल नम्बर निदेशालय को भिजवाएंगे।
3. इसी प्रकार अधीनस्थ जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारम्भिक) मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालयस्तर पर समिति गठन करावें।
4. 31 दिसम्बर 2020 तक सेवानिवृत्त कार्मिकों के पेंशन प्रकरण तैयार कर पेंशन विभाग में भिजवाने की व्यवस्था करें।

**राज्य स्तरीय पेंशन निस्तारण अभियान के दौरान निम्न**

**कार्यवाही करेंगेः–**

1. संभागीय पेंशन विभाग के कार्यालयों में समन्वय कर 31.12.2020 तक सेवानिवृत्त कार्मिकों के पी.पी.ओ. जारी करवाना।
2. राजस्थान पेंशन नियम 1996 के परिशिष्ठ 8 व राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प. 10(12)वित्त/राजस्व/2015 दिनांक 01.03.2017 के अनुसार दिनांक 30.06.2021 पेंशन प्रकरण निस्तारण की सूचना विभागीय प्रपत्र 01 से 08 में संयुक्त निदेशक स्तर से निदेशालय को भिजवाई जाएगी। पेंशन विभाग में बकाया प्रकरणों की संभागीय पेंशन विभाग कार्यालय से मिलान कर भिजवाएंगे।

● **(बी.एल. सर्वा)** वित्तीय सलाहकार, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

## शिक्षावाणी प्रसारण कार्यक्रम (दिनांक 04.01.2021 से 30.01.2021 तक)
### प्रसारण समय : 11.00 से 11.55 बजे तक

| दिनांक | वार | प्रारंभ से 15 मिनट | 16 मिनट से 35 मिनट तक | | | | 36 मिनट से 55 मिनट तक | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | मीना की कहानियां | कक्षा | विषय पाठ्यपुस्तक | पाठ क्रमांक | पाठ का नाम | कक्षा | विषय पाठ्यपुस्तक | पाठ क्रमांक | पाठ का नाम |
| 04.01.2021 | सोमवार | पूरी बात | 1 | हिन्दी आओ सीखे | 1 | घ र च ल | 10 | सामाजिक विज्ञान | 5 | लोकतंत्र |
| 05.01.2021 | मंगलवार | दावत का लड्डू | 6 | सामा. विज्ञान भूगोल | 2 | ग्लोबःअक्षंश एवं देशांतर | 12 | हिन्दी अनि. सर्जना | 3 | रहीम नीति के दोहे |
| 06.01.2021 | बुधवार | मीना और खो–खो मैच | 3 | हिन्दी | 2 | मीठे बोल | 10 | हिन्दी क्षितिज | 6 | जयशंकर प्रसाद प्रभो |
| 07.01.2021 | गुरुवार | जन्मदिन का तोहफा | 4 | पर्यावरण | 3 | कैसे जानूं मैं | 9 | सामाजिक विज्ञान | 2 | संविधान निर्माण |
| 08.01.2021 | शुक्रवार | अभी मैं छोटा हूँ। | 8 | हिन्दी | 3 | बस की यात्रा | 12 | भौतिक विज्ञान | 14 | परमाण्वीय भौतिकी |
| 09.01.2021 | शनिवार | स्कूल से भागा भूत | 8 | विज्ञान | 6 | दहन और ज्वाला | 9 | संस्कृत | 5 | सूक्ति–मौक्तिकम |
| 11.01.2021 | सोमवार | सबसे बढ़िया निबंध | 8 | संस्कृत रूचिरा | 2 | विलस्य वाणी न कदापि में श्रुता | 12 | जीव विज्ञान | 2 | नर मादा युग्मोद्भिद संरचना एवं विकास |
| 12.01.2021 | मंगलवार | तोहफा | 7 | हिन्दी बसंत भाग–2 | 7 | पापा खो गए | 12 | अर्थशास्त्र | 6 | मुद्रा एवं बैंकिंग |
| 13.01.2021 | बुधवार | कुंभकरण | 8 | सामाजिक विज्ञान | 1 | संसाधन | 10 | सामाजिक विज्ञान | 4 | विश्व का इतिहास |
| 14.01.2021 | गुरुवार | दीपू बना मॉनीटर | 6 | हिन्दी बसंत भाग 1 | 11 | जो देखकर भी नहीं देखता | 12 | हिन्दी साहित्य सरयू | 13 | प्रेमचन्द गुल्ली डंडा |
| 15.01.2021 | शुक्रवार | सुनहरी को बचाओ | 7 | सामाजिक विज्ञान | 2 | नए राजा एवं उनके राज्य | 10 | हिन्दी क्षितिज | 11 | भारतेन्दु हरीशचन्द्र–एक अद्भूत अपूर्व स्वप्न |
| 16.01.2021 | शनिवार | काकी की कहानी | 3 | पर्यावरण | 3 | स्वच्छता की आदत | 9 | विज्ञान | 5 | जीवन की मौलिक इकाई |
| 18.01.2021 | सोमवार | लड़कियां कहाँ जाऐं | 7 | विज्ञान | 5 | अम्ल, क्षारक लवण | 10 | संस्कृत स्पन्दना | 6 | महाराणा प्रताप |
| 19.01.2021 | मंगलवार | बीनाती फर्स्ट आयी | 6 | सा. विज्ञान हमारे अतीत भाग 1 | 3 | आरंभिक नगर | 12 | इतिहास | 7 | राजस्थान |
| 20.01.2021 | बुधवार | **गुरू गोविन्द सिंह जयंती अवकाश** | | | | | | | | |
| 21.01.2021 | गुरुवार | चॉक की लड़ाई | 6 | विज्ञान | 6 | हमारे चारों ओर परिवर्तन | 11 | राजनीति विज्ञान | 3 | चुनाव व प्रतिनिधित्व |
| 22.01.2021 | शुक्रवार | नए दोस्त | 7 | संस्कृत रूचिरा | 2 | दुबुल्दिः विनश्याति | 11 | भौतिक विज्ञान | 3 | सरल रेखा में गति |
| 23.01.2021 | शनिवार | अखबार से क्या सीखा | 2 | हिन्दी आओ सीखे | 5 | स्नान | 11 | भूगोल | 8 | भारत स्थिति आकार एवं पड़ौसी देश |
| 25.01.2021 | सोमवार | शर्त | 8 | विज्ञान | 5 | कोयला और पैट्रोलियम | 10 | विज्ञान | 2 | मानव तंत्र |
| 26.01.2021 | मंगलवार | **गणतंत्र दिवस** | | | | | | | | |
| 27.01.2021 | बुधवार | सुरीला संगीत | 8 | संस्कृत रूचिरा | 1 | सुभाषितानि | 11 | जीव विज्ञान | 1 | जीव जगत |
| 28.01.2021 | गुरुवार | साथी हाथ बढ़ाना | 4 | हिन्दी | 9 | खेजड़ी कविता | 9 | सामाजिक विज्ञान | 1 | लोकतंत्र–क्या और क्यों? |
| 29.01.2021 | शुक्रवार | कमाल की कबड्डी | 8 | हिन्दी–वसंत भाग 3 | 7 | क्या निराश हुआ जाए | 12 | हिन्दी अनिवार्य आरोह | 5 | दुष्यंत कुमार गजल |
| 30.01.2021 | शनिवार | छुप्पम छुपाई | 6 | संसकृत | 2 | शब्द परिचय पुल्लिंग | 12 | हिन्दी अनि. आरोह | 6 | भ्रान्तो बालः |

**रक्तदान : महादान**

## बहुआयामी व्यक्तित्व स्व. श्री बृजमोहन पुरोहित को समर्पित

**राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड, स्थानीय संघ, बीकानेर पिछले 6 वर्षों से दिनांक 29 नवम्बर को बीकानेर के तीन युवाओं की पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर का आयोजन करता रहा है। इस वर्ष 2020 को रक्तदान शिविर शिक्षा निदेशालय से सेवानिवृत्त अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी स्व. श्री बृजमोहन पुरोहित जिनका आकस्मिक स्वर्गवास दिनांक 3 अक्टूबर, 2020 को हो गया था को समर्पित था। उक्त रक्तदान शिविर में श्रीमान सौरभ स्वामी, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा ने पधार कर स्व. पुरोहित को श्रद्धांजलि देते हुए स्वयं भी रक्तदान देकर बहुत ही प्रेरणामयी संदेश दिया। निदेशक महोदय ने अपने संदेश में बताया कि वर्तमान कोरोना महामारी के समय रक्तदान की महत्ता और बढ़ जाती है। इस रक्तदान शिविर में भारत स्काउट गाइड की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा डॉ. विमला डुकवाल, प्रख्यात पर्वतारोही श्रीमती सुषमा बिस्सा, स्काउटर, गाइडर, रोवर्स, रेंजर्स, समाज के गणमान्य नागरिकों ने दिवंगत आत्माओं के परिवारजनों सहित कुल 63 रक्तदान दाताओं ने रक्तदान किया। इस अवसर पर श्री केशरी चन्द सुथार-उपप्रधान, श्री विजयशंकर आचार्य-मण्डल चीफ कमिश्नर, श्री देवानन्द पुरोहित-मण्डल सचिव, श्री मानमहेन्द्र सिंह भाटी- सहायक रा.सं. आयुक्त, श्री जसवंत सिंह राजपुरोहित-सीओ, श्रीमती ज्योति महात्मा-सीओ, श्रीमती चंचल चौधरी-संयुक्त सचिव, श्री घनश्याम स्वामी-रोवर लीडर, श्री मांगीलाल सुथार, श्री सुगनाराम चौधरी, श्री विनोद चौधरी, श्री आनन्द स्वामी-अध्यक्ष शिक्षा विभाग कर्मचारी संघ, स्काउटर-गाइडर, रोवर रेंजर्स, स्काउट गाइड कार्मिकों ने सक्रिय सहभागिता निभाई। इनके अलावा रक्तदान में सर्व श्री शान्ति प्रसाद बिस्सा-कोषाध्यक्ष, जितेन्द्र पुरोहित-मेनेजर एच.डी.एफ.सी. बैंक, स्काउटर-श्री बल्लभ पुरोहित, रोवर्स-रवि प्रकाश चाहर, हर्षवर्धन भाटी व योगेश स्वामी, रेंजर्स-नम्रता बुड़ानिया, बिरमा विश्नोई, मदन गोपाल पुरोहित एवं मनोज पुरोहित ने उपस्थित रहकर सहयोग किया।**

# रसिया महाराज उर्फ बृजमोहन पुरोहित

❒ **घनश्याम स्वामी**

आज जो इतिहास की बात है वह कल आज का रंग-बहुरंग था। अब खुशबू है जो सदा हमारे मन को महकाता रहेगा। जी हाँ बात है रसिया महाराज की उर्फ बृजमोहन पुरोहित की। जो भौतिक संज्ञा की बजाय लौकिक रस संज्ञा से जाने जाते रहे हैं। रसिया महाराज मित्रों में सहयोग, स्काउटिंग आंदोलन में निष्ठा व समर्पण, समाज में सेवा समन्वय-सक्रियता, सहयोगी कार्मिकों में सतत कर्मठता और हितैषणा एवं स्काउटर के रूप में नैतिकता के सेवा पुरुष के रूप में ख्यात और प्रेरक पुरुष रहे। श्री पुरोहित रचनात्मक सोच, सकारात्मक दृष्टि और सतत कर्मशील सक्रियता का दूसरा नाम है। वे अभी हमारे बीच नहीं हैं पर वे मुस्कानों के साथ हमारे अन्दर हैं। यह भीतरी सुवास हम सब में प्रेरणा के रूप में उपस्थित रहेगी। इसी कारण वे आने वाले समय में वर्तमान रहेंगे तथा हमें प्रोत्साहन देते रहेंगे।

कर्मठ कर्मचारी, एक खिलाड़ी, कर्मचारी नेता, समाज सेवक, कलाकार एवं स्काउटर के रूप में उन्होंने आजन्म सेवाएँ दीं और आदर्श, समाज के सम्मुख रखे। जमाना उन्हें एक चमकीले नक्षत्र के रूप में जगमगाता

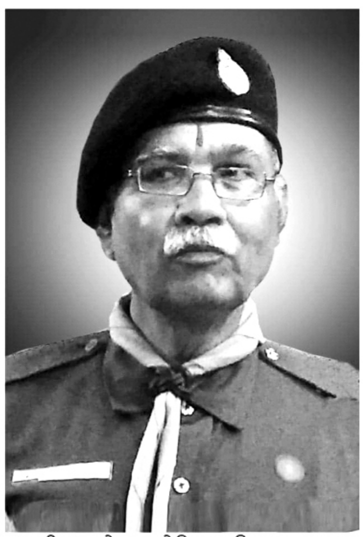

स्व. श्री बृज मोहन पुरोहित ( रसिया महाराज)
सचिव स्थानीय संघ राजस्थान राज्य भारत स्काउट एंड गाइड बीकानेर
जन्म- 17.08.1955 वैकुंठ- 03.10.2020

देखता है। किसी प्रख्यात शायर की पंक्तियाँ स्मरण आ रही है कि-

**एक सूरज था तारों के घराने से बिछुड़ गया**
**एक शख्स हम सबको वीरान कर गया**

स्व. श्री बृजमोहन पुरोहित एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, सेवा के पर्याय, एक सच्चे स्काउटर, प्रतिष्ठित समाज सेवक, कर्मठ राजकीय कर्मचारी, कुशल खिलाड़ी, लेखक, साहित्य, गायन, संगीत, खेलों के साथ कुकिंग के बहुत ही धनी व्यक्तित्व थे।

**कर्मठ कर्मचारी के रूप में-** श्री पुरोहित शिक्षा विभाग के कर्मठ, कर्त्तव्यनिष्ठ, ईमानदार कार्मिक थे। शिक्षा निदेशालय में विभिन्न अनुभागों सामान्य प्रशासन, एबी अनुभाग, बजट अनुभाग, खेलकूद अनुभाग, भण्डारपाल, शार्दूल स्पोर्ट्स स्कूल आदि-आदि महत्त्वपूर्ण स्थानों पर अपने कार्य की पहचान से अधिकारियों के चहेते बने रहे, श्रीमान निदेशक महोदय द्वारा अनेक बार उनको प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया गया। राज्य स्तरीय मंत्रालयिक सम्मान समारोह में भी सम्मानित किया गया।

**एक खिलाड़ी के रूप में-** श्री पुरोहित खेलकूद गतिविधियों में बहुत बढ़-चढ़ कर भाग लेते थे। वॉलीबाल, फुटबाल इनके पसंदीदा खेल थे। शिक्षा विभाग में प्रतिवर्ष दिसम्बर माह में आयोज्य राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में नियमित रूप से भाग लेते रहे एवं अनेक बार शिक्षा निदेशालय टीम का नेतृत्व कर उच्च स्तर प्राप्त किया।

**एक कर्मचारी नेता के रूप में–** श्री पुरोहित राज्य सरकार के कर्मचारियों के हितों की रक्षा हेतु सदैव अग्रणी रहे। नेतृत्व क्षमता उनमें कूट–कूट कर भरी थी। शिक्षा निदेशालय में भी कर्मचारियों को उनके हितों के लिए लामबद्ध करना, आन्दोलनों में अपनी बुलंद आवाज से अगुवाई करना पूरे शिक्षा विभाग के कर्मचारियों को हमेशा याद रहेगा।

**एक समाज सेवक के रूप में–** श्री पुरोहित ने अपने पुष्टिकर समाज में शिक्षा, रोजगार, नवाचार हेतु हमेशा सक्रिय भूमिका निभाई। समाज की एकमात्र पत्रिका पुष्करणा संदेश के प्रकाशन, सदस्यता, विस्तार, प्रेषण को वर्षों तक निस्वार्थ भाव से संचालन, निर्देशन स्वयं टीम के माध्यम से किया। समाज में बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्तित्व श्री पुरोहित का रहा। पुरोहित ने अनेक कन्याओं के विवाह से संबंधित भोजन व्यवस्था सहित सभी प्रकार के प्रबंधन का कार्य बहुत मन से एवं सुगमता से सम्पन्न करवाए।

**एक कलाकार के रूप में–** श्री पुरोहित बीकानेर के विश्व प्रसिद्ध रम्मत कार्यक्रम के कलाकार थे। होली के अवसर पर बीकानेर में आयोजित होने वाली मुख्य रम्मत हेडाउ महेरी, अमरसिंह राठौड़ की कथा, स्वांग मेरी, नौटंकी सहजादी जैसी अनेक रम्मतों में एक अग्रणी कलाकार के रूप में जाने जाते थे। गायन में उनकी बहुत ही रुचि होती थी, बहुत ही बुलंद और मधुर आवाज होने से ऊँचे स्वर को भी बहुत ही सुंदर ढंग से साध लेते थे। होली के साथ अन्य सभी कार्यक्रमों में गायक रूप में, पात्र के रूप में आनन्द एवं रस के साथ भाग लेते थे। इसी वजह से बीकानेर में उनका नाम रसिया महाराज के रूप में प्रसिद्ध हुआ। आज भी वे बृजमोहन नाम से अधिक रसिया महाराज के नाम से जाने जाते रहे हैं।

**एक सच्चे स्काउट के रूप में–** जिनका जन्म सेवा के लिए होता है वे सेवा का कोई ना कोई प्लेटफार्म (स्थान) ढूँढ़ ही लेते हैं। श्री पुरोहित ने भी स्काउटिंग के माध्यम से अपनी सेवाभावना को जीवन का लक्ष्य बनाया। भारत स्काउट गाइड द्वारा आयोज्य अधिकांश कुंभ मेला सेवा शिविरों हरिद्वार, प्रयागराज, नासिक एवं उज्जैन में होने वाले अर्द्ध कुंभ, महाकुंभ, सिंहस्थ कुंभ में श्री पुरोहित ने सक्रिय भाग लिया और अनेक शिविरों में संचालक सदस्य के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान की।

श्री पुरोहित ने स्काउट व गाइड द्वारा आयोजित कुल 9 नेशनल जम्बूरियों, सार्क जम्बूरी, एशिया पेसेफिक जम्बूरी में सेवाभावी रोवर लीडर के रूप में भाग लिया एवं राजस्थान को उच्च स्तर प्राप्त करने में सहभागिता निभाई। शिक्षा निदेशालय में रोवर क्रू का सफल संचालन किया।

राष्ट्रीय मुख्यालय द्वारा अब तक आयोजित कुल 8 नेशनल ट्रेकिंग शिविर में सह संचालक के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर राजस्थान का गौरव बढ़ाया। इसी प्रकार अब तक कुल 3 राष्ट्रीय हिमालय ट्रैकिंग जिनमें चेरापूंजी–मेघालय, पिण्डारी ग्लेशियर–उत्तराखण्ड, कुर्शीयांग–दार्जिलिंग में राजस्थान दल का नेतृत्व किया एवं सहसंचालक के रूप में भाग लिया।

राष्ट्रीय मुख्यालय द्वारा श्री पुरोहित को राष्ट्रपति पुरस्कार हेतु राष्ट्रपति रोवर अवॉर्ड जाँच शिविर हेतु कुल 3 बार जाँच अधिकारी नियुक्त किया गया। इसी प्रकार राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त करने हेतु आयोज्य कुल 3 बार राष्ट्रपति अवॉर्ड रैली में सहसंचालक के रूप में नियुक्त किए गए। उत्तराखण्ड में आयोज्य एडवांस एण्ड नेचर स्टडी प्रोग्राम में भी श्री पुरोहित ने भाग लिया।

श्री पुरोहित की राष्ट्रीय स्तर के साथ–साथ राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड, राज्य मुख्यालय द्वारा आयोजित होने वाले रोवर रेंजर मूट–मीट शिविरों, रोवर–रेंजर साहसिक शिविरों, प्रशिक्षण शिविरों, बेसिक कोर्सेज, एडवांस कोर्सेज, वार्षिक अधिवेशनों, संगोष्ठियों, जाँच शिविरों, अलंकार पुरस्कार समारोहों, कब–बुलबुल उत्सवों अवार्ड रैली हाईक साहसिक शिविरों, खेलकूद प्रतियोगिताओं, युवा खोज कार्यक्रमों, सर्वधर्म प्रार्थना सभाओं, रैलियों, स्वाधीनता दिवस, गणतंत्र दिवस समारोहों, समय–समय पर आयोज्य बैठकों, विचार गोष्ठियों आदि सभी स्तर पर सक्रिय सहभागिता रहती थी। उनकी इस स्काउट भावना एवं अनुभवों को देखते हुए वे राज्य कार्यकारिणी, मण्डल कार्यकारिणी सदस्य के रूप में चयनित रहे।

**सचिव स्थानीय संघ के रूप में पहचान–** श्री पुरोहित ने एक कर्मठ रोवर स्काउट के रूप में, एक रोवर लीडर के रूप में, एक सहायक लीडर ट्रेनर के रूप में कार्य करते हुए श्री पुरोहित ने अक्टूबर, 2009 में सचिव स्थानीय संघ का पदभार संभाला तब से बीकानेर स्थानीय संघ ने स्काउटिंग में ही नहीं बीकानेर जिला प्रशासन, जनमानस में स्थानीय संघ का नाम रोशन किया। स्थानीय संघ ने अपने अपने एल.एल. भवन को पूर्णतः विकसित, सुसज्जित संसाधनों से परिपूर्ण किया। नगर विकास न्यास, सांसद निधि, भामाशाहों के सहयोग से भवन में लगभग 35 लाख रुपये के निर्माण कार्य करवाए। अनेक उच्च स्तर के स्काउट गाइड कार्यक्रमों, अभिरुचि एवं कला कौशल शिविरों, सामाजिक सरोकारों से संबंधित गतिविधियों का आयोजन समय–समय पर करवाकर समाज के गणमान्य नागरिकों, भामाशाहों, शिक्षाविदों को स्थानीय संघ से जुड़ाव पैदा किया। अनेक प्रभावी कार्यक्रमों में जिला कलेक्टर, निदेशक महोदय, महापौर महोदय, नगर विकास न्यास–अध्यक्ष, विश्वविद्यालय कुलपति महोदय, मंत्री महोदय, सांसद महोदय, विधानसभा सदस्य, जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों, समाज सेवियों, प्रसिद्ध भामाशाहों ने आतिथ्य स्वीकार कर आयोजन को उच्च स्तर का एवं प्रेरणामयी बताया।

श्री पुरोहित कुकिंग के विशेषज्ञ थे जितना स्वादिष्ट और रुचिकर खाना बनाना जानते थे उतना ही रुचि और प्रेम से खिलाने में आनन्द की अनुभूति करते थे।

**पुरस्कार एवं सम्मान–**श्री पुरोहित ने स्काउट गाइड के सर्वोच्च पुरस्कार राष्ट्रपति रोवर अवॉर्ड परीक्षा उत्तीर्ण कर महामहिम राष्ट्रपति

महोदय से अवॉर्ड प्राप्त किया। वर्ष 2018 में महामहिम राज्यपाल महोदय से मेडल ऑफ मेरिट अवॉर्ड प्राप्त किया। जिला प्रशासन, शिक्षा विभाग, चिकित्सा विभाग, पुष्टिकर समाज, नारायण सेवा संघ, कर्मचारी संगठनों, रोटरी क्लब, लॉयन्स क्लब, शैक्षणिक संस्थाओं, तेरापंथी जैन महासभा द्वारा समय-समय पर श्री पुरोहित को सम्मानित किया गया।

वे धार्मिक सहिष्णुता से ओत-प्रोत थे, विशेष अवसरों पर आयोज्य सर्वधर्म प्रार्थना-सभाओं का आयोजन पूरी निष्ठापूर्वक करते थे। तेरापंथी जैन समाज द्वारा आयोज्य लगभग सभी चातुर्मास कार्यक्रमों में व्यवस्था हेतु श्री पुरोहित को हर वर्ष आमंत्रित किया जाता रहा जिससे जैन समाज में भी उनकी प्रतिष्ठा एवं जुड़ाव था। श्री पुरोहित प्रतिवर्ष धार्मिक यात्राएँ, अनुष्ठान अपने साथियों संग करते रहते थे। साहित्य, लेखन में रुचि रखते थे। शिक्षा विभाग की मासिक पत्रिका शिविरा, स्काउट गाइड ज्योति, पुष्करणा संदेश, दिव्य संसार में उनके लेख, रचनाएँ प्रकाशित हुई।

इस तरह श्री पुरोहित द्वारा 18 अगस्त, 1955 को जन्म और दिनांक 3 अक्टूबर, 2020 तक के स्वर्णिम जीवनकाल में अपने बहुआयामी व्यक्तित्व के माध्यम से बालकों, युवाओं से लेकर हर आयु वर्ग के लोगों के दिलों में अपनी जगह बनाकर इस संसार से विदा ली और एक प्रेरणात्मक ज्योत जलाकर सेवा का रास्ता दिखा गए। परमपिता परमात्मा उनको अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें। इसी भाव विह्वल भावना के साथ हम उनके पथों के राही बनें तथा उनके सपनों को साकार करने हेतु सक्रिय रहें।

उनके जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण एक बात इकबाल की गजल-

**किसी के काम जो आए उसे इन्सान कहते हैं,**
**पराया दर्द जो अपनाए उसे इन्सान कहते हैं**

जो सदैव गुनगुनाते रहते थे और प्रेरित करते थे। अंतिम समय तक वे इसी गीत की शृंखला में चलते रहे।

निजी सहायक
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
**मो. 9414303345**

## जयन्ती विशेष

# स्वामी विवेकानन्द एवं शिक्षा

**❒ बृजेश कुमार सिंह**

विश्व की महान विभूतियों में से एक स्वामी विवेकानन्द भारतीय इतिहास में एक ध्रुव तारे के रूप में क्षितिज में आज भी अपनी उपस्थिति का एहसास भारतीय जनमानस को करा रहे हैं।

12 जनवरी, 1863 में कोलकाता में सम्पन्न कायस्थ परिवार में जन्मे नरेन्द्र नाथ पारस पत्थर रूपी गुरु रामकृष्ण के संपर्क में आकर स्वामी विवेकानन्द के रूप में विख्यात हुए। स्वामी जी ने अपने गुरु की अवधारणा को जन-जन तक पहुँचाने का बीड़ा उठाया था। हिन्दू सनातन दर्शन को विश्व स्तर पर प्रकाशित किया। 11 सितम्बर 1893 को शिकागो सम्मेलन में भारत के संदर्भ में विदेशियों में व्याप्त नकारात्मक सोच को धनात्मक सोच में परिवर्तित किया। वेदांत सोसाइटी नामक संस्था के माध्यम से भारतीय दर्शन का प्रचार-प्रसार किया। नर सेवा-नारायण सेवा के संकल्प को पूरा करने एवं गुरु रामकृष्ण परमहंस की स्मृति को चिर स्थाई बनाने के लिए 1897 में रामकृष्ण मिशन नामक संस्था गठित की। शायद धरातल पर विद्वान नेक फरिश्तों की आवश्यकता प्रभु को भी होती है। 39 वर्ष का अल्पकाल पूर्ण कर 4 जुलाई, 1902 धरती पुत्र महान देशभक्त, समाज सुधारक, भारतीय संस्कृति एवं वेदांत का व्याख्याता अनाथों का मसीहा अनंत शक्ति में विलीन हो गया।

**स्वामीजी एवं शिक्षा** : स्वामीजी ने निषेधात्मक शिक्षा का विरोध करते हुए सकारात्मक शिक्षा का समर्थन किया वह ऐसी शिक्षा प्रणाली के समर्थक थे जो नैतिक दृष्टि से राष्ट्र एवं व्यक्ति के गिरते मनोबल एवं आत्मबल के विकास में सहायक हो। वह भारती संस्कृति के आदर्शों को उजागर करने की शिक्षा को लागू करना चाहते थे क्योंकि उनके अनुसार मानव के अंतर्निहित पूर्णता का विकास करना ही शिक्षा है। वे ऐसी शिक्षा के समर्थक थे जो जीवन निर्माण, मनुष्य निर्माण, चरित्र निर्माण में सहायक हो। स्वामी जी के अनुसार ऐसी यांत्रिक शिक्षा की आवश्यकता है जिससे उद्योगों का विकास हो तथा मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करे। शिशु शिक्षा ऐसी हो जो उन्हें स्वयं चिंतन करना सिखाए, शिक्षार्थियों में अज्ञान रूपी आवरण को हटाकर ज्ञान का संचार हो सके। स्वामी जी नारी को धर्म केन्द्रित शिक्षा दिए जाने के पक्ष में थे जो चरित्र निर्माण में सहायक हो, वह नारी की स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे किन्तु उनकी स्वच्छंदता एवं उच्छृंखलता के घोर विरोधी थे। स्वामी जी पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण करने के घोर विरोधी थे।

नारी का सम्मान उनके उत्तम सहज चरित्र, सौंदर्य संयम एवं सदाचार पूर्ण जीवन व्यतीत करने में है इन्हीं गुणों के उन्हें सम्मान और श्रद्धा के चश्मे से देखा जाता है। स्वामी जी ने ग्रामीण लोगों को शिक्षित करने के लिए समूह शिक्षा पर बल दिया जिसके माध्यम से व्यक्तियों का जीवन दृष्टिकोण बदलना चाहते थे जिससे समाज में जाग्रति का आगाज हो वे शिक्षा के माध्यम से चित्त, चिंतन एवं चरित्र बदलना चाहते थे।

इस कार्य हेतु ऐसे समाज सेवकों का निर्माण करना चाहते थे जो त्याग एवं निस्वार्थ भाव से गरीब लोगों को शिक्षित कर सकें। वास्तव में आज के युग में ऐसी ही शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जो शिक्षार्थी को वास्तव में एक सच्चा भारतीय बना सके न कि मशीन। यदि प्रत्येक शिक्षार्थी के मन में ऐसा आत्मबोध विकसित हो जाए तो भारत परम वैभव को प्राप्त कर सकेगा तथा भारत पुनः विश्व गुरु बन जाएगा।

प्राध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बस्सी,
चित्तौड़गढ़ (राज.)
**मो. 9414800527**

## 20 जनवरी : जयन्ती विशेष

# साहिब-ए-कमाल गुरुगोविन्द सिंह जी

❒ बलजिन्द्र सिंह बराड़

**कलगीयां वालिया करां की सिफ्त तेरी। कागज कलम तों तुहाडा आकार वड्डा, सारी उम्र नां लथनां इनसानां तों, इंसानी कौम उते तुहाडा उधार वड्डा।।**

अर्थात् गुरु गोविन्द सिंह जी के बारे में लिखना मुश्किल है क्योंकि इनके बहुरूपी बलिदानी पात्र को कागज कलम से नहीं उकेरा जा सकता। आपके एहसान का कर्ज इंसानी उम्र पर है ही इतना बड़ा की जो पूरी उम्र में नहीं उतारा जा सकता।

आपके जीवन के बारे में लिखते समय समझ नहीं आता है कि आपके जीवन के किस पक्ष के बारे में लिखा जाए। दशमेश पिता साहिबश्री गुरु गोविन्द सिंह जी आप सर्ववंश दानी, संत सिपाही, महान योद्धा, सफल नेतृत्वकर्ता, सामाजिक-आध्यात्मिक-राजनैतिक चिंतक, श्रेष्ठ साहित्यकार, बहुभाषी विद्वान, दया-क्षमा-प्रेम-विनम्रता-परोपकार आदि उच्च मानवीय गुणों के मूर्तरूप, शरणदाता आदि सद्गुणों से विभूषित एक सम्पूर्ण व आदर्श व्यक्तित्व थे।

आपका संक्षिप्त परिचय :-

**नाम – गोविन्द राय (गुरु गोविन्द सिंह)**
**पिता – हिन्द-ए-चादर (गुरुतेगबहादुर जी)**
**माता – माता गुजरी जी।**
**जन्म – पोष शुक्ल सप्तमी, 1723**
**(विक्रम संवत के अनुसार)**
**देहावसान– कार्तिक शुक्ल पंचमी, 1765**
**जन्म स्थान – पटना साहिब, बिहार।**
**पुत्र – 1. शहीद अजीत सिंह 2. शहीद जुझार सिंह 3. शहीद जोरावर सिंह 4. शहीद फ़तेह सिंह।**

**उपनाम/उपाधियां :** आपको साहिब-ए-कमाल, दशमेश, कवि, बादशाह दरवेश, सरबंसदानी, संत-सिपाही, महादानी, कलगीधर, बाजां वाले, आपै गुरु चेला,शाहे शहनशाह, मर्द अगमड़ा आदि नामों से जाना जाता है।

आप हिन्द-ए-चादर श्री गुरु तेगबहादुर की इकलौती सन्तान थे। आपने अपना सम्पूर्ण परिवार धर्म की रक्षा और जुल्म के खिलाफ अपनी आँखों के सामने न्यौछावर कर दिया। विभिन्न इतिहासकारों, विद्वान लेखकों के अलावा कनिंघम जैसे पश्चिमी इतिहासकार एवं विद्वान ने भी लिखा है कि शौर्य, पराक्रम और बलिदान की ऐसी मिसाल दुनिया में कहीं नहीं मिलेगी।

प्रसिद्ध इतिहासकार व विद्वान श्री गोकुल चंद नारंग लिखते हैं कि गुरु गोविन्द सिंह जी केवल आदर्शवादी ही नहीं बल्कि व्यवहारिक व यथार्थवादी आध्यात्मिक गुरु थे जिन्होंने मानवता को त्याग, शांति, प्रेम, एकता, समानता, संघर्ष एवं समृद्धि का महान उदाहरण पेश किया।

आपके जीवन को संक्षिप्त में मुख्यत: 6 भागों में जानने का यत्न है :-

1. **पुत्र के रूप में :** आपको एक आदर्श सुपुत्र के रूप में देखा जाए तो आपके जैसा कोई पुत्र नहीं है जिसने अपनी माता गुजरी को वार दिया, अपने पिता से हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए मात्र 9 साल की उम्र में शहीद होने का आग्रह किया हो। हिन्दुओं को जबरन मुसलमान बनाए जाने पर कश्मीरी पण्डितों के आग्रह पर कि हमारे सामने ये शर्त रखी गयी है कि कोई ऐसा महापुरुष जो इस्लाम स्वीकार न कर अपना बलिदान भी दे सके तो आप सब का भी धर्म परिवर्तन नहीं किया जाएगा। उस समय आप 9 साल के थे। आपने पिताजी गुरु तेग बहादुर जी से विनयपूर्वक निवेदन किया कि पिताजी आपसे बड़ा बलिदानी और कौन हो सकता है। 11 नवम्बर 1675 को औरंगजेब ने दिल्ली के चांदनी चौक में सार्वजनिक रूप से श्रीगुरु तेग बहादुर जी का सिर कटवा दिया। इस प्रकार हिन्दु धर्म की रक्षा के लिए श्रीगुरु तेग बहादुर जी को हिन्द ए चादर नाम दिया गया। इसका वर्णन आप स्वयं करते हैं कि-

**सिर देना ते मुहों ना सी करनी।**
**ईह है मौत दे नाल रीत साडी।।**
**जिउना मरनां तां जानदा है जग सारा।**
**बन्द बन्द कटवोना तां है रीत साडी।।**

2. **पिता के रूप में :** आप जैसा महानतम् पिता कोई नहीं है जिन्होनें खुद अपने चारों बेटों को देश, धर्म के लिए अपनी आँखों के सामने वार दिया 2 बेटों (साहिबजादा अजीत सिंह 17 वर्ष व साहिबजादा जुझार सिंह 15 वर्ष) को चमकौर के युद्ध में शस्त्र दिए और जुल्म के खिलाफ़ दुश्मन का सामना करने को कहा। इस युद्ध में दोनों बड़े साहिबजादे वीरगति को प्राप्त हो गए। 2 छोटे बेटों (साहिबजादा जोरावर सिंह 7वर्ष व साहिबजादा फतेह सिंह 5वर्ष ) को धर्म ईमान के लिए अडिग रहना सिखाया । इस्लाम न कबूलने पर इन्हें जिन्दा दीवार में चुनवा कर गला रेत दिया गया। छोटे साहिबजादों की शहीदी की खबर सुनकर माता गुजरी जी ने अकाल पुरख को इस गर्वमयी शहादत के लिए शुक्रिया किया और अपने प्राण त्याग दिए। इस प्रकार माता गुजरी व छोटे साहिबजादे भी न्यौछावर हो गए। चारों बेटों की शहादत पर दुश्मन की सेना के सैनिक ने प्रभावित होकर पूछा कि लोग पत्थरों को पूजकर पुत्र मांगते हैं आपने तो पुत्र ही दीवार में चुनवा दिए।

**कलगीयां वालेया तेरे हौंसले सी**
**अखां साहमने पूत शहीद करवा दिते।**
**लौकी लबदै ने लाल पत्थरां चों ते**
**तूसी लाल ही पत्थरां विच चिनवा दितै।।**

इस पर गुरु गोविन्द सिंह जी कहते हैं :

**इन पुतरन के सीस पर वार दिए सुत चार।**

**चार मुऐ तो क्या हुआ जीवत कई हजार।।**

चारों साहिबजादों की शहादत पर उर्दु शायर ने लिखा है :

**बस एक हिन्द में तीर्थ है यात्रा के लिए।**
**कटाए बाप ने बच्चे जहाँ खुदा के लिए।।**

**3. लेखक/कवि के रूप में :** आप तलवार के साथ कलम के धनी भी रहे हैं। आप वीर रस के ओजस्वी कवि के रूप में जाने जाते हैं। आप संस्कृत, पंजाबी, उर्दू, फारसी, पश्तो सहित विभिन्न भाषाओं के ज्ञाता थे। आपने स्वयं श्रीगुरुग्रन्थ साहिब को पूर्ण रूप दिया। लेखन शैली से आपकी बहुआयामी सोच को समझ पाना आसान बात नहीं है। आपने अपनी आत्मकथा की वचित्र (विचित्र) **नाटक** नाम से एक पुस्तक लिखी है। इसके साथ जाप साहिब, चण्डी दी वार, तव प्रसाद सवैये, अकाल उस्तत, चौपई, खालसे दी महिमा, शस्त्र नाम माला, ज्ञान प्रबोध, 24 अवतार, शब्द हजारे, मंगल प्रकाश आदि प्रमुख रचनाएं लिखी हैं। दशम ग्रंथ आपकी रचनाओं का संकलित ग्रन्थ है। आपने 1708 में 52 हुक्मनामा लिखा है जिसमें खालसा के लिए आदर्श जीवन के 52 तरीके बताएं हैं। आपके दरबार में बहुभाषी 52 कवि भी रहे हैं। 1705 में छोटे साहिबजादों की शहादत के तरीके को जानकर आपने फारसी भाषा में औरंगजेब के नाम एक पत्र लिखा जिसे जफ़रनामा के नाम से जाना जाता है, जो कि लेखन शैली की एक नायाब कृति है। जिसे स्वयं औरंगजेब पढ़कर रोने लगा।

आपकी लेखन कार्य की बानगी भी धर्म निरपेक्ष रही है उदाहरण स्वरूप :-

**साचु कहों सुन लेहु सभै जिन**
**प्रेम किउ तिन ही प्रभ पाइओ।।**

व

**हिन्दु, तुर्क कोउ राफजी ईमाम साफी**
**मानस की जात सबैं एक पहिचानबौ।**

**4. त्यागी के रूप में :** एक त्यागी के रूप में आपको देखा जाए तो आप आनन्दपुर का सुख वैभव छोड़कर, माँ की ममता, पिता का सम्मान, बच्चों का मोह धर्म एवं देश हित में आसानी से त्याग कर मुगल सेना से टक्कर लेने को निकल पड़े। सिरसा नदी के किनारे पर रात के समय में सारा परिवार बिछुड़ गया। नदी के वेग में आपका सिख धर्म से सम्बंधित बहुमूल्य साहित्य भी बह गया। आनन्दपुर साहिब के किले को छोड़कर मात्र 42 सिख सैनिकों के साथ आपने चमकौर का युद्ध लड़ा। आपके सहर्ष त्याग के जज्बे को आपकी लेखनी बयां करती है :

**देह शिवा वर मोहि ईहो**
**शुभ करमन ते कबहूँ न टरों।**
**ना डरों अरि सों जब जाई लरों**
**निश्चै कर आपणी जीत करों।**
**अर सिख हो आपने ही मन को**
**इह लालचरो गुण तउ उचरों।**
**जब आव की अउध निदान बनै**
**अत ही रन मैं तब जूझ मरों।।**

**5. महान योद्धा के रूप में :** सर्ववंशदानी पर्याय आपके बारे में बहुत कुछ जाहिर करता है। आपको एक योद्धा के रूप में देखा जाए तो हैरानी होती है कि आप अपने हर तीर के साथ दो तौला सोना लगाकर रखते थे ताकि आपके तीर से हताहत हुए का ईलाज हो सके अगर उसकी मौत हो गई तो अन्तिम संस्कार हो सके। आप जोश के साथ होश का तालमेल बनाकर रखते थे। आप जोश के लिए लिखते हैं :-

**चुंह कर अज हमह हिलते दर गुजशत।**
**हलाल अस्त बुरदन ब शमशीर दस्त।।**

(जब जुल्म रोकने के सारे रास्ते काम न आएं तब हाथ में तलवार उठा लेनी चाहिए)

होश के लिए आप लिखते हैं :-

**मजन तेग बर खुन कस बे दरेग।**
**तुरा नीज खुँ चरख रेजद घतेग।।**

(कि असहाय और गरीब पर उठाई तलवार आप खुद का खून बहाएगी )

**सूरा सौ पहचानिये जो लड़े दीन के हेत**
**पुर्जा पुर्जा कट मरे कबहुँ न छाडे खेत।**

की भावना के साथ आपने स्वयं व अपनी फौज को तैयार कर मुगलों व पहाड़ी राजाओं के साथ लड़ाईयां लड़ी जिनमें भंगानी, नादौन, गुलेर, आनंदपुर, निर्माहगढ़, बसोली, सरसा, चमकौर व मुक्तसर के युद्ध प्रमुख हैं। बहुत सारे युद्धों में मुगलों की लाखों की सेना के सामने आपके नेतृत्व में गिनती के सिख सैनिकों ने लड़ाईयां लड़ी जिसे आपने कुछ यूं उकेरा है:-

**सवा लाख ते एक लड़ाउँ,**
**चिड़ियन ते मैं बाज तुड़ाउँ।**
**तबै गुरू गोबिन्द सिंह नाम कहाउँ।**

चमकौर का युद्ध भारतीय इतिहास का वह ऐतिहासिक युद्ध है जिसमें गुरु साहिबान स्वयं व दो बड़े साहिबजादे व 40 अन्य सिंह थे। 22 दिसम्बर 1704 को लड़े गए इस अनोखे युद्ध में मात्र 43 सिक्खों ने वजीर खां के नेतृत्व वाली 10 लाख मुग़ल सैनिकों की सेना के मंसूबे पर पानी फेर दिया। इस युद्ध में गुरुजी मात्र जिन्दा बचे थे। यह युद्ध सिक्खों को विजय प्रदान कर गया।

पराक्रम के साथ सौम्यता को धारण करने वाले गुरु गोविन्द सिंह जी ने एक युद्ध के मैदान में अपने सैनिक भाई घनिया जी को मुगल सेना के घायल सैनिकों को भी पानी पिलाने को कहा। आपने कहा कि हमारी लड़ाई जुल्म के खिलाफ़ है किसी जाति, धर्म या व्यक्ति विशेष के विरूद्ध नहीं है।

**6. महान गुरू के रूप में :** गुरु रूप में भी आपकी महिमा अपरंपार है। आप सिक्खों के दसवें गुरु होने के साथ ही आपने सिखों के चरणों में बैठकर अमृत की दात मंगाई और वचन दिया कि मैं आपका सेवक हूँ जो हुकुम दोगे मंजूर करूंगा। तभी कहा गया है :-

**वह प्रगटिओ मरद अगंमड़ा वरियाम अकेला।**
**वाहु वाहु गोबिन्द सिंह आपे गुरू चेला।।**

आपने 13 अप्रैल 1699 को भक्ति और शक्ति के संगम से खालसा पंथ बनाया जो कि सिख इतिहास का सबसे महत्त्वपूर्ण दिन है। आपने खालसा सृजन के लिए आह्वान किया :

**है कोई सिख बेटा जो करे शीश भेटा।**
**बेअंत शीश चाहिए सो जल्द जल्द आइए।।**

तदोपरान्त गुरुजी के आदेश की पालना के लिए शीश देने को तत्पर युवक अलग-अलग जगह से अलग-अलग जाति वर्णो के उठ खड़े हुए जिनमें लाहौर से खत्री, दिल्ली से नाई, गुजरात से जाटव, उड़ीसा से धोबी, बीदर (कर्नाटक)से अहीर थे। गुरुजी ने इन्हें खण्डे बाटे का अमृत पिलाया व खुद उनसे पीया। इस प्रकार आपने सामाजिक एकता अपनाने, छुआछूत की बुराई को त्यागने और **मानस की जात सबै एक पहिचानवौ** का महासन्देश दिया। और शब्द उकेरे-

**रहनी रहे सोई सिख मेरा,**
**ओ साहिब मैं उसका चेरा।।**

(मर्यादा में रहने वाला सिख ही मेरा गुरु है

व मैं उसका चेला)

गुरुजी ने फिर आदि ग्रन्थ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब को सिखों के गुरु के रूप में नवाजा व बताया कि **आज्ञा भई अकाल की तभे चलायेओ पन्थ सब सिखन को हुक्म है गुरु मानेयो ग्रन्थ।**

आपने अन्तिम सन्देश दिया कि-

**जो हम को परमेश्वर उचरै हैं।**
**ते सब नरक कुंड में परि है।**
**मो दास तवन का जानौ या मै भेद न रंच पछानो।**

(जो भी कोई मुझे भगवान कहता है वो नर्क में चला जाएगा मुझको सदा उसका सेवक ही मानो और इसमें किसी भी प्रकार का संदेह मत रखो।)

**शहीदी :** औरंगजेब की मृत्यु के बाद गुरुजी ने बहादुरशाह को बादशाह बनाने में मदद की। गुरुजी व बहादुरशाह के संबंध अत्यंत मधुर थे। इन संबंधों को देखकर सरहद का नवाब वजीत खाँ घबरा गया। अत: उसने दो पठान गुरुजी के पीछे लगा दिए। इन पठानों ने गुरुजी पर धोखे से घातक वार किया जिससे 7 अक्टूबर 1708 में गुरु गोविन्द सिंह जी नांदेड़ साहिब में दिव्य ज्योति में लीन हो गए।

जात-पाँत के भेद और जीवन में कायरता को समाप्त कर महान धार्मिक व सामाजिक क्रांति के रूप में भारतीय समाज को स्वाभिमानी राष्ट्र का रास्ता दिखाया। स्वामी विवेकानन्द जी ने गुरुजी के त्याग एवं बलिदान के बारे में कहा है कि ऐसे आदर्श व्यक्तित्व सदैव याद रहने चाहिए। 20वीं सदी के उर्दू शायर अल्लाह यार खां जोगी ने लिखा है कि :

**इंसाफ करे जी में जमाना तो यकीं है।**
**कह दो कि गुरूगोविन्द का कोई सानी ही नहीं है।**

सन् 1915 में गुरु गोविन्द सिंह जी के बलिदान पर लिखी गई कविता गंज-ए-शहिदां को पढ़कर पत्थर दिल इंसान की आँखों में भी आंसू आ जाए।

प्रत्येक भारतीय को अपने बच्चों को एक बार साहिबजादों की वीरगति की भूमि चमकौर साहिब व फतेहगढ़ साहिब (सरहिन्द) का प्रत्यक्ष साक्षी बनवाना चाहिए।

व्याख्याता (अंग्रेजी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
जेजे (पदमपुर) श्रीगंगानगर
**मो. 9983217581**

## शैक्षिक परिवेश

# सिस्टम की समझ

❒ सुभाष चन्द्र

प्रकृति की प्रत्येक घटना स्वाभाविक रूप से घटित होती है चाहे वह भौगोलिक हो या जैविक लेकिन इन सभी घटनाओं के होने की कोई न कोई वजह अवश्य होती है चाहे वह आन्तरिक हो या बाह्य। यहाँ आन्तरिक तथा बाह्य वजह का तात्पर्य है परिवर्तन जो किसी मूल स्वरूप में होता है। दोनों ही परिस्थितियों में जो परिणाम प्राप्त होता है वह किसी नैसर्गिक रचना का नवीन स्वरूप है जो हमें परिवर्तन की वजह बताता है कि उसके होने का मूल क्या है? यदि हम इसी परिवर्तन को समझना चाहें तो हमें प्रकृति के उसी स्वरूप को जानना होगा कि जिसे सिस्टम कहा जाता है। यूं शाब्दिक रूप से सिस्टम (System) को व्यवस्था, प्रणाली या तंत्र कह सकते हैं परन्तु व्यावहारिक रूप से समझने के लिए इसका तात्पर्य बहुत व्यापक है। हमें इसे व्यापक रूप से समझने के लिए पुस्तकों में झांकने के बजाय किसी प्रशासनिक कार्यालय, किसी कम्पनी के उत्पादन में संलग्नता, किसी अदालत में मुकदमे की कार्यवाही, किसी विद्यालय की दिनचर्या या जीवों की प्राकृतिक दिनचर्या का अवलोकन करना होगा क्योंकि अधिगम ज्ञान का द्वितीय सोपान है जो समानान्तर व तुलनात्मक सीख को ग्रहण करने में प्राथमिकता देता है।

यदि किसी भी घटना के प्रथम बार साक्षी होते हैं तो केवल हम उसके मूल अन्तिम स्वरूप को ही जान पाते परन्तु यदि वह घटना बारम्बार दोहरायी जाती है तो हम घटना के घटित होने की वजह व परिणाम यानि परिवर्तन को भी जान लेते हैं और यही परिवर्तन हमें सिस्टम को समझने में मदद करता है। उदाहरण के तौर पर जब हम किसी प्रशासनिक विभाग या कार्यालय की सकारात्मक या नकारात्मक चर्चा सुनते हैं तो उसके होने के मूल को जानने की कोशिश करते हैं। यदि मधुमक्खियों ने शहद कैसे बनाया यह जानना पड़े तो उसके मूल को जानने की कोशिश करते हैं। किसी विद्यालय की विशेष उपलब्धियों को जानने के लिए उसकी दिनचर्या को जानने की कोशिश करते हैं। ठीक उसी प्रकार किसी मशीन या इंजन या हमारे शरीर के अस्तित्व को जानना चाहें तो हमें उसके प्रक्रम को जानना पड़ता है। यही वो मूल है जो किसी परिवर्तन से परिणाम तक पहुँचने का स्थायी व्यवहार है, तरीका है, कार्य प्रणाली है या उस विभाग, कार्यालय, विद्यालय की उद्देश्य सम्पादन या समस्या समाधान की व्यवस्था या किसी मशीन, इंजन या किसी जीव के कार्य करने का स्थायी प्रकार है, हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि सिस्टम किसी भी परिणाम तक पहुँचने का व्यावहारिक तरीका है, सलीखा है, व्यवस्था है जो उसका स्थायी माध्यम बन जाता है जिसके फलस्वरूप वो परिणाम प्राप्त किया जाता है। यदि हम सामाजिक रूप से समझना चाहें तो हमें प्रत्येक घर का अवलोकन करना होगा कि वो उसी कार्य का हो जो हर घर में होता है जैसे जन्मोत्सव, वैवाहिक संस्कार, परिनिर्वाण संस्कार या दैनिक क्रियाएँ आदि को कैसे सम्पादित करता है? क्योंकि हर उद्देश्य या समस्या निवारण का एक स्थायी तरीका होता है जो हमारे लिए स्थायी माध्यम या साधन बन जाता है। यदि हम यह देखना चाहें कि एक लोकतांत्रिक व्यवस्था कैसे परिणत होती है तो हमें किसी प्रशासनिक कार्यालय की स्थायी दिनचर्या का अवलोकन करना होगा कि आरम्भ से समापन तक वो दैनिक रूप से अपने उद्देश्यों को कैसे निर्बाध रूप से सम्पादित कर लेते हैं। यही बात व्यावहारिक तौर से विद्यालय पर लागू होती है क्योंकि विद्यालय में दो तरीके का सिस्टम होता है- प्रथम प्रशासनिक सिस्टम व द्वितीय अधिगम सिस्टम। प्रशासनिक सिस्टम का प्रथम सोपान है उसके पदों की सहभागिता जो हर उद्देश्य पूर्णता या समस्या समाधान में सहभागी होते हैं। द्वितीय सोपान है उसके पदों की आपसी जवाबदेही जो उन्हें अपने पदानुसार व्यवहार करने में प्रतिबद्ध करती है जो उच्चस्थ व अधीनस्थ के प्रति व्यवहार करने या जवाबदेही का तरीका सिखाती है। तृतीय सोपान है व्यक्तिगत भूमिका जो किसी भी सिस्टम की परिपक्वता का अन्तिम स्वरूप है जिसमें उस पद धारित में यह समझ विकसित हो जाती है कि उसे

अपने पदानुसार किस प्रकार कर्त्तव्य सम्पादन करना है। जब ये तीनों सोपान नियमित व्यवहारगत हो जाते हैं तो उस व्यवस्था की कार्यप्रणाली की वह स्थायी पहचान बन जाती है। ठीक उसी प्रकार अधिगम सिस्टम में भी चार सोपान हैं जो उस विद्यालय के उद्देश्यों की प्राप्ति व समस्या समाधान में स्थायी कारक बनकर उसकी अधिगम प्रणाली को विकसित करते हैं। प्रथम सोपान है प्रशासनिक तंत्र जो उस विद्यालय को वार्षिक व दैनिक सुविधाएँ व अनुकूल माहौल प्रदान करता है जो स्थायी दिनचर्या में अधिगम हेतु विद्यार्थी की सहायता करता है। इस व्यवस्था में अकादमिक उपलब्धियाँ, शैक्षणिक व सह शैक्षणिक गतिविधियों हेतु अवसर उपलब्ध करवाना जो अधिगम सिस्टम को प्रभावी बनाता है। द्वितीय सोपान है अकादमिक तंत्र जो अधिगम हेतु प्रशासनिक उद्देश्यों की प्राप्ति में विभाग व विद्यार्थी का सहायक बनता है एवं वह वो स्थायी व्यवहार करता है जो उस विद्यालय की दिनचर्या का मूल हिस्सा होता है। तृतीय सोपान है हितधारक तंत्र जो विद्यालय के अधिगम उद्देश्यों की व्यवस्था में अपनी बाह्य भूमिका निभाकर विद्यार्थी की मदद करता है। चौथा सोपान है विद्यार्थी जिस हेतु पूरा सिस्टम उसके इर्द-गिर्द उपस्थिति दर्शाता है। यदि एक भी सोपान कमजोर हो जाता है तो विद्यालय का सिस्टम पूरी तरह प्रभावित हो जाता है जिस कारण विद्यालय के दैनिक व वार्षिक उद्देश्यों की सफलता असंभव हो जाती है।

**विद्यालय के सिस्टम को सफल कैसे बनाएँ–** विद्यालय समाज की धुरी होता है जो एक सफल व्यक्तित्व निर्माण का उद्योग है जिसके फलस्वरूप वह समाज द्वारा उसे प्रदान किए गए कच्चे माल (विद्यार्थी) को संसाधन (योग्य व्यक्तित्व) में परिणत करता है। यदि समाज द्वारा प्रदत्त विद्यार्थी के अधिगम प्रक्रिया में कोई भी सोपान सार्थक भूमिका निभाने में असमर्थ रहता है तो उस विद्यालय की व्यवस्था व वहाँ का अधिगम सिस्टम प्रभावित हो जाता है जिस कारण वहाँ की व्यवस्था में नकारात्मक परिवर्तन आना स्वाभाविक है जिसका परिणाम विद्यार्थी के कभी भी हित में नहीं होता है इसलिए विद्यालय के सिस्टम को समझने एवं प्रभावी बनाने के लिए सिस्टम की समझ आवश्यक है जिसमें दोनों सिस्टम की पारदर्शिता व चारों सोपानों की सहभागिता नितान्त आवश्यक है।

**विभाग (Education Department) की भूमिका–** विद्यार्थी के अधिगम में सहायक व हितधारक के रूप में विभाग बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है–

- आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध करवाना।
- शैक्षणिक वातावरण निर्माण करना।
- कौशल परक पाठ्यक्रम लागू करना।
- शैक्षिक दक्षता हेतु नियमित प्रशिक्षण व कार्यशाला आयोजन।
- तकनीकी व यांत्रिक कौशल को प्राथमिकता देना।
- अभिरुचि को अभिवृत्ति में परिवर्तनकारी अधिगम को महत्त्व देना।
- नियमित एवं प्रभावी पुनर्बलन प्रदान करना।
- हितधारकों की सहभागिता सुनिश्चित करना।
- आदर्श अधिगम सिस्टम हेतु प्रेरित करना।

**अकादमिक या बौद्धिक (School Staff) तंत्र की भूमिका–**

- विद्यालय के अधिगम सिस्टम को सफल बनाने में वहाँ के बौद्धिक तंत्र की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। अकादमिक तंत्र निम्न रूप से अपनी भूमिका निर्वहन कर विद्यालय के अधिगम सिस्टम को मजबूत कर सकता है–
- विभाग के प्रशासनिक सिस्टम के प्रति अपनी जवाबदेही से भली भाँति परिचित होना।
- अपने पदाभिहीत अधिकारों व कर्त्तव्यों की समझ होना।
- प्रशासनिक उद्देश्यों को फलीभूत करने में सक्षम होना।
- अधिगम सिस्टम को प्रभावी रूप से सफल बनाने में व्यक्तिगत कौशलता में परिपूर्ण होना।
- अधिगम सिस्टम की अवस्था की समझ विकसित करना।
- सहगामी उद्देश्यों के सम्पादन में सहयोगी प्रवृत्ति का विकास करना।
- अधिगम को नवाचारी रूप प्रदान करना।
- हितधारकों से विद्यार्थी के अधिगम संवर्धन में उनकी योग्यता, क्षमता व कौशल परक मदद लेना।
- विद्यार्थी में निहित क्षमताओं को पहचानना व अभिरुचि के आधार पर अधिगम संवर्धन में सहायक बनना।

**हितधारक (Stake Holders) तंत्र की भूमिका–** अधिगम के बाह्य सिस्टम में हितधारक होते हैं जिसमें विद्यार्थी के अभिभावक, समिति के सदस्य, अवलोकनकर्त्ता व भामाशाहों की बहुत फलदायी भूमिका होती है जो निम्न रूप से मददगार बन सकते हैं–

- अधिगम सिस्टम को मजबूत करने एवं विद्यार्थी के कौशल संवर्धन में विभिन्न सम्बलन प्रदान कर हितधारक विद्यालय सिस्टम में अपनी उपादेयता सिद्ध करता है जिस कारण उनकी सामाजिक भूमिका बहुत ही सार्थक हो जाती है।
- हितधारक सामयिक रूप से नियमित आयोज्य गतिविधि में सहभागी बनकर, आर्थिक सम्बलन देकर, सामाजिक मूल्यों को मजबूत कर व बाह्य समस्याओं का निदान कर अधिगम सिस्टम को प्रभावी बना सकते हैं।

**विद्यार्थी की भूमिका–** विद्यार्थी विद्यालय के प्रशासनिक व अधिगम सिस्टम का केन्द्र है जिस पर सभी की जिम्मेदारियाँ तय होती हैं। विद्यालय के सिस्टम को सफल बनाने में विद्यार्थी निम्न रूप में अपनी सार्थक भूमिका अदा कर सकता है–

- संस्कार परक संवेदनाओं को व्यवहार में अभिव्यक्त करना।
- सामाजिक मूल्यों की व्यावहारिक पालना करना।
- रुचिप्रद अधिगम को विशेष समय व महत्त्व देना।
- उपलब्ध संसाधनों से अपने मजबूत पक्ष को कौशलपूर्ण बनाना।
- अधिकारों के प्रति सजगता व कर्त्तव्यों के प्रति जिम्मेदारी दिखाना।
- हुनर को अवसर प्रदान करना।
- नेतृत्व व सहभागिता की भावना विकसित करना।

इस प्रकार किसी भी विभाग, संस्था, इकाई, उपागम या प्राकृतिक तंत्र के कार्य करने के तरीकों को समझना या उस विशेष क्रियाकलाप के उद्देश्य सम्पादन की प्रणाली को जानना ही सिस्टम की समझ है।

प्रधानाचार्य
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय बैरासर,
बीदासर, चूरू (राज.)
**मो: 9784873840**

## वैदिक गणित

# भारतीय गणित को सम्मान आवश्यक

❒ डॉ. राजेश कुमार ठाकुर

जब रेडियो या टेलीविजन पर गाना बजता है-जब नीरो दिया मेरे भारत ने तो दिल में एक खुशी का भाव आता है पर क्या इससे आगे हम कुछ नया नहीं कर पाए या हमारी खोज जीरो से आगे ही नहीं बढ़ा। वेदांग ज्योतिष में गणित के बारे में बड़ी मजेदार बात लिखी है-

यथा शिखा मयूराणां, नागानां मणयो यथा।
तद् वेदांगशास्त्राणां, गणितं मूर्धि वर्तते।।

जैसे मोरों में शिखा और नागों में मणि का स्थान सबसे ऊपर है, वैसे ही सभी वेदांग और शास्त्रों में गणित का स्थान सबसे ऊपर है।

सुनने में तो यह काफी रोचक लगता है पर आज भारत में गणित की जो स्थिति है उसे देखकर ऐसा नहीं लगता। माना शून्य और दाशमिक प्रणाली के जनक हम हैं, द्विआधारी पद्धति के बारे में हमने विश्व को बताया, पाइथागोरस प्रमेय को हमने 800 ईसा पूर्व खोज लिया और तो और अनंत के सोच का प्रतिपादन भी हमने ही किया पर इतना करने के बाद हम गहरी नींद में खो गए और ऐसे सोए कि कोई हमारी खोज को अपना बताता रहा और हम हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। शुल्ब सूत्र में गणित के कई ऐसे रहस्यों का उद्घाटन हुआ है जो हजारों साल तक गणितज्ञों के लिए एक पहेली थी, क्रमचय और संचय के लिए सूत्र 9वीं शताब्दी में महावीर ने दी पर पश्चिमी जगत इसका श्रेय ले गए। हाँ स्मिथ द्वारा लिखे गणित का इतिहास पुस्तक भाग दो में क्रमचय और संचय के लिए सूत्र के लिए भारतीय गणितज्ञ भास्कराचार्य को इसका श्रेय देना नहीं भूले। मध्यकालीन भारत में इस्लामी विद्वानों ने लीलावती, गणित सार संग्रह, आर्यभट्टीय जैसी पुस्तक का अनुवाद फारसी में किया पर फिर भी भारतीय गणित का वो प्रचार-प्रसार हम नहीं कर पाए जिसकी अपेक्षा थी। दूसरी सदी ईसा पूर्व में आचार्य पिंगल ने मेरु प्रशस्त्र के द्वारा तो 11वीं सदी में भट्टोत्पला ने मेरु प्रशस्त्र के 16 पंक्ति तक विस्तार करने में सफलता तो पाई पर 1655 में इसी खोज के लिए आज हम पास्कल को याद करते हैं। भारतीय गणित में शून्य की खोज की बात अगर करें तो यह निश्चय ही भारत की सबसे बड़ी खोज है पर आचार्य पिंगल ने 200 ईसा पूर्व में अपनी पुस्तक छंदशास्त्र में इसका जिक्र किया।

गायत्रे षड्संख्यामर्धेऽपनीते द्वयड़ के अवशिष्ट स्रयस्तेषु रूपमपनीय द्वयड़ काधः शून्यं स्थाप्यम्।।

अर्थात- एक गायत्री छंद के एक पद में 6 अक्षर होते हैं इसे आधा करें और इसमें 1 घटाएं, फिर इसे आधा कर इसमें 1 घटाने पर शून्य प्राप्त होता है। $0=\frac{1}{2}\{\frac{1}{2} \text{ of } 6-1\}-1$

ब्रह्मगुप्त ने छठी सदी में शून्य से सम्बन्धित नियम का प्रतिपादन अपनी पुस्तक ब्रह्मस्फुट सिद्धांत में कर दिया तो पूरे विश्व को इटली के महान गणितज्ञ फिबोनिच्ची का इंतजार 12वीं सदी तक क्यों करना पड़ा? ब्रह्मगुप्त ने शून्य को लेकर चार नियम प्रतिपादित किए जिसमें किसी संख्या में शून्य जोड़ने, घटाने से उत्तर में कोई अंतर नहीं आने, गुणा करने से शून्य और भाग देने से ही शून्य की प्राप्ति की बात की गई।

अ+0 = अ   अ - 0 = अ

अx0=0   तथा अ÷0=0

इनमें से तीन नियम तो सही थे पर भारतीयों के इस खोज को भी मान्यता तभी मिली जब पश्चिमी देशों को इटली के गणितज्ञ फिबोनिच्ची की पुस्तक लिबेर अबाची के द्वारा भारतीय गणित के दार्शनिक प्रणाली के बारे में पता चला जिसमें भारतीय गणित में शून्य की खोज के बारे में बताया। अफसोस तब होता है जब 876 ईस्वीं में ग्वालियर में बने चतुर्भुज मन्दिर जिसमें एक पत्थर के प्लेट पर 270 लिखा है- राजा जयवर्धने द्वारा निर्मित कराया गया था। इसे रामा रॉक या राम पत्थर कहते हैं- से शून्य के चिह्न की बात की जाती रही है को 2012 में बीबीसी की एक टीम ने भारत आकर चतुर्भुज मन्दिर पर लिखे इस शिलालेख को खोजा तब से इस मन्दिर को जीरो मन्दिर के नाम से जाना जाने लगा है।

इसी तरह माध्व के Sine सीरीज को टेलर सीरीज के नाम से जाना जाता है। आज जब किसी भारतीय मूल के किसी अमेरिकी गणितज्ञ को फील्ड्स मेडल मिलता है। तो हम खुशी से फूले नहीं समाते। पर जो प्रश्न विचारणीय है वो ये कि-क्या हम उन्हें रिसर्च का वातावरण अगर भारत में देते तो उन्हें विदेश जाने की आवश्यकता होती? भारत के गणित जानकर किसी युवा गणितज्ञ को आगे बढ़ने में मदद क्यों नहीं करते। मुझे जे.बी.एस. हेल्डेन की वो बात बरबस याद आ जाती है जिसमें उन्होंने कहा रामानुजन पर चर्चा तब तक बेकार है जब तक हम उनके जीवन से कुछ नहीं सीखते। यह 5 वर्षों का मेरा अनुभव है कि भारतीय संस्थानों और विश्वविद्यालयों ने कुछ नहीं सीखा है। अगर आज रामानुजन जीवित होते, तो वे इस आधार पर कि उनके पास कोई डिग्री नहीं थी; भारतीय गाँव के किसी कॉलेज में व्याख्याता की नौकरी पाने में असफल होते, मुझे पता है कि इंग्लैण्ड में रॉयल सोसाइटी के फेलो चुने जाने के बाद उन्हें भारत में नौकरी की पेशकश की गई थी। यह बहुत ही अपमानजनक है कि भारतीय प्रतिभाओं को विदेशी पहचान की आवश्यकता है।

क्यों हमारे गणितज्ञों को विदेशी मान्यता के बिना हम अपने देश में नहीं अपनाते? हम भारतीय ही अपने लोगों को बढ़ने में रोड़े अटकाएं खड़े हैं। आज हमें प्रोफेसर हार्डी जैसे गणितज्ञों की जरूरत है जो ये कहकर खुश हो गए कि रामानुजन मेरी सबसे बड़ी खोज है। हमें कार्ल फ्रेडरिक गॉस के शिक्षक बटनर जैसे उत्साहवर्धक शिक्षक की जरूरत है जो आगे आकर खुद राजा से बात कर गॉस के पढ़ाई का खर्च राजकोष से करवाने में सफल हो सके। आज हमारे शिक्षा तंत्र को भी प्रतिभा को तरजीह देने की आवश्यकता है कि लकीर का फकीर बने रोड़े अटकाने की। रैखीय प्रोग्रामिंग के जनक जॉर्ज देन्तिंजग लिखते हैं कि एक बार वो अपने यूनिवर्सिटी की कक्षा में देर से पहुँचे तब तक प्रोफेसर जा चुके थे और उन्होंने ब्लैकबोर्ड पर दो

सवाल लिखे देखे गए जिसे गृह कार्य समझा वो नोट कर घर वापस आ गए। 15 दिनों के अथक मेहनत के बाद जब वो अपने प्रोफेसर को उन सवालों का हल दिखाने गए तो वे चकित हो गए क्योंकि वो दोनों सवाल अभी तक अनुत्तरित थे और उनके प्रोफेसर ने अपने होनहार छात्र को इन्ही दो सवालों के हल को अपने पीएचडी. के . थीसिस के रूप में जमा कराने को कह दिया।

भारत ने विश्व को दाशमिक प्रणाली, शून्य की परिकल्पना, ऋणात्मक संख्या, अंकगणित, बीजगणित, त्रिकोणमिति, खगोल विज्ञान में जो काम करके दिया उसके लिए विश्व आज भी ऋणी है।

हड़प्पा और मोहनजोदड़ों की खुदाई के दौरान जो ईंट मिले हैं उसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई का अनुपात 4:2:1 है और मजे की बात ये है कि उन्होंने व्यापार के लिए जो मापने के लिए भार बनाया वो मानकीकृत थी जिसका अनुपात 1/20, 1/10, 1/5, 1/2, 1, 2, 5, 10, 20, 50, 100, 200 और 500 था। साथ ही उनके द्वारा प्रयोग में लाए जा रहे बाट षटकोण, बेलन, शंकु इत्यादि आकार के थे जो उनके गणितीय कौशल का परिचायक हैं।

**1.** सन  1881 में तक्षशिला से लगभग 70 मील दूर बक्षाली गाँव में खुदाई के दौरान जो 70 पन्ने मिले वो गणितीय ज्ञान से ओत-प्रोत था और शारदा लिपि में लिखी इस पुस्तक में शून्य के लिए भी एक मोटे गोले का प्रयोग उनके गणितीय ज्ञान को बताता है। इस पुस्तक में अंकगणित, बीजगणित के सुंदर सवाल मौजूद हैं और आश्चर्य की बात ये है कि इसमें भिन्न को लगभग वैसे ही दिखाया गया है जैसा हम दिखाते हैं अंश को ऊपर और हर को नीचे पर इसमें बटा चिह्न का प्रयोग नहीं दिखता। इस पुस्तक में वर्गमूल निकालने की बेहद रोचक विधि का उल्लेख मिलता है और इससे संबंधित जो सूत्र हमें मिलता है वो इस प्रकार है-

अकृते श्लिष्टकृत्युनात् शेषच्छेदो द्विसंगुणः।
तद्वर्गदल संश्लिष्टह्रति शुद्धिकृति क्षयः।।

इस श्लोक को गणितीय रूप में लिखने पर

$$\sqrt{Q} = \sqrt{A^2 + b} = A + \frac{b}{2A} - \frac{\left(\frac{b}{2A}\right)^2}{2\left(A + \frac{b}{2A}\right)}$$

प्राप्त होता है और इसकी मदद से आप संख्या का वर्गमूल बड़ी आसानी से निकाल सकते हैं।

**2.** प्राचीन भारत की एक और गणित पुस्तक शतपथ ब्राह्मण जिसका काल 7वीं सदी ईसापूर्व बताया जा रहा है, में ऋषियों के द्वारा यज्ञ कुंड बनाने में गणितीय कला खासकर ज्यामिति का सुंदर प्रयोग दिखता है जिसमें ज्यामितिक आकृति-त्रिभुज, आयत, वर्ग, समलम्ब चतुर्भुज तथा वृत्त का प्रयोग किया गया है। समकोण त्रिभुजाकार यज्ञ कुंड के लिए पाइथागोरस प्रमेय और वृत्ताकार के लिए परिधि और व्यास के बीच पाई का संबंध बखूबी दिखता है। इसके एक हिस्से में 720 के सभी 15 गुणनखंड- (1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 12, 15, 16, 18, 20, 24) यह दर्शाते हैं कि उन्हें गुणनखंड और चारों गणितीय संक्रियाओं का भरपूर ज्ञान था।

3. वेदों में बड़ी-बड़ी संख्या का उपयोग लिखा है। बौद्ध धर्म की पुस्तक ललित विस्तर में महात्मा बुद्ध के द्वारा 10∧53 जिसे तलाक्षणा का नाम दिया गया, वाल्मीकि रामायण के युद्ध कांड में गुप्तचर शुक द्वारा रावण को राम की सेना में 10∧60 जैसे महौघ कहा गया का उल्लेख भारतीय गणित की पराकाष्ठा को दिखाता है।

आज हमें हनुमान की तरह अपनी खोई ताकत वापस लाने का समय आ गया। भारत ने विश्व को पहले भी बहुत कुछ दिया और भविष्य में भी बहुत कुछ देने की क्षमता रखता है बशर्ते हम अपनी खोई संस्कृति पर नाज कर सोये नहीं बल्कि एक ऐसा वातावरण तैयार करें जहाँ हम अपने गणितज्ञों की खोज को आगे बढ़ाकर ये साबित करें कि हम किसी से कम नहीं। गणित के प्रचार-प्रसार के बिना देश का विकास संभव नहीं पर आज हमारा सारा ध्यान कोर्स तक ही सीमित है हमने प्रयोग और आगे बढ़ाने की संस्कृति को विराम दे रखा है नहीं तो आज भारत के युवा जब विश्वपटल पर अपने ज्ञान का परचम फहराते हैं तो क्यों नहीं हमारे गणितज्ञ, वैज्ञानिक, सरकारें और हम खुद का एक ऐसा वातावरण पैदा करें जहाँ ज्ञान का प्रसार हो और एक शोध का वातावरण बने जिसमें कोई बड़ा-छोटा नहीं बल्कि सब भागीदारी से काम करें।

अध्यापक (गणित)
15, बागवान अपार्टमेंट, सेक्टर-28, रोहिणी
दिल्ली-110042
**मो: 9868060804**

## प्रेरक-प्रसंग

दार्शनिक चुनिंग तो हांङ्ग कहा करते थे कि कठिनाई एक विशालकाय, भयंकर आकृति के, किंतु कागज के बने हुए सिंह के समान है, जिसे दूर से देखने पर बड़ा डर लगता है, पर एक बार जो साहस करके उसके पास पहुँच जाता है, उसे प्रतीत होता है कि वह एक कागज का खिलौना मात्र था। बहुत लोग चूहों को लड़ते देखकर डर जाते हैं, पर ऐसे भी करोड़ों योद्धा हैं जो दिन-रात आग उगलने वाली तोपों की छाया में सोते हैं। एक व्यक्ति को जो घटना वज्रपात के समान असह्य अनुभव होती है, परंतु दूसरे आदमी पर जब वही घटना घटित होती है तो वह लापरवाही से कहता है ऊँह, क्या चिंता है, जो होगा सो देखा जाएगा। ऐसे लोगों के लिए वह दुर्घटना 'स्वाद परिवर्तन' की एक सामान्य बात होती है। विपत्ति अपना काम करती रहती है, वे अपना काम करते रहते हैं। बादलों की छाया की भाँति बुरी घड़ी आती है और समयानुसार टल जाती है। बहादुर आदमी हर नई परिस्थिति के लिए तैयार रहता है। पिछले दिनों ऐश आराम के साधनों का उपभोग भी वही करता था और अब मुश्किल से भरे, अभावग्रस्त दिन बिताने पड़ेंगे, तो इसके लिए भी वह तैयार है। इस प्रकार का साहस रखने वाले वीर पुरुष ही इस संसार में सुखी जीवन का उपयोग करने के अधिकारी हैं।

समय का सदुपयोग

# समय का प्रबन्ध ही जीवन का प्रबन्ध है

❒ बिग्रेडियर करण सिंह चौहान

**'दी ट्रबल इज यूथिंक यू हैव टाइम'**

वर्तमान समय में जो शब्द प्रायः हर जगह अनेकानेक लोगों से सुनाई पड़ता है वह है-समय का अकाल। हम सभी हर समय कहीं न कहीं किसी न किसी दौड़ में उलझे ही रहते हैं तथा इस दौड़ की गति भी दिन-प्रतिदिन तेज होती जा रही है। लगता है समय का इतना अकाल किसी भी युग में नहीं रहा है। यह भी अचरज की बात है कि चरम सीमा पर पहुँचने वाली वैज्ञानिक उपलब्धियाँ भी समय के पूर्ण उपयोग के बारे में किसी उपकरण का आविष्कार नहीं कर पाई हैं। हम सभी के लिए यह भी कम आश्चर्य की बात नहीं होगी कि अपनी वास्तविक स्थिरता को बनाए रखने के लिए भी हमें लगातार दौड़ना पड़ रहा है।

प्रकृति हर सुबह हम सभी को समान रूप से 86400 सैकण्ड का समय प्रदान करती है और यह हम पर छोड़ देती है कि हम इस समय का सदुपयोग करें अथवा बीते हुए कल की गिनती में सम्मिलित कर लें।

समय के उचित उपयोग के प्रबंधन के बारे में बुद्धिजीवी प्रारम्भ से ही चिंतित रहें हैं और यही कारण है कि समय-प्रबंधन के बारे में कई पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं एवं कितनी ही गोष्ठियाँ आयोजित की जा रही हैं। समय के बारे में अभी तक जितना लिखा गया है तथा लिखा जा रहा है, उसके अनुसार समय के स्वरूप एवं महत्त्व को उतना समझा नहीं जा रहा है।

अपनी हाल की पुस्तक 'टाईम लॉक' में राल्फ कीज ने लिखा है कि हमारे जीवन में क्या है, क्या करना चाहिए के अन्तर्द्वंद्व में ही हम अपने आप में उसी प्रकार बन्दी हो जाते हैं जिस प्रकार एक पिंजरे में कैद पक्षी होता है। आप किसी भी वार्तालाप या बैठक में निम्नलिखित अनौपचारिक कथन सुन सकते हैंः-

- मुझे ब्रेक चाहिए।
- मेरे ऑफिस में बहुत काम है।
- क्या अच्छा होता कि अगर दिन में कुछ और घंटे होते।

उपर्युक्त कथन स्पष्ट रूप से दो बातें दर्शाते हैंः-

- समय का दुरुपयोग एवं
- तनाव की स्थिति।

दोनों ही स्थितियाँ गंभीर हैं और वैज्ञानिक विश्लेषण एवं स्वयं के प्रयत्नों से इनका निवारण तुरन्त किया जाना अनिवार्य है। इस सम्बन्ध में किसी भी कदम को उठाने से पूर्व निम्नलिखित भ्रान्तियों से बचना आवश्यक है-

- कभी न कभी समय आएगा, जब मैं अपने कार्य को उत्कृष्ट तरीके से कर सकूँगा।
- किसी न किसी तरह मैं कुछ समय तो बचा ही लूँगा।

**समय का प्रबंध जीवन का प्रबंध हैः-** हम सभी को प्रकृति की ओर से हर सुबह 86400 सैकेण्ड के समय का चैक प्राप्त होता है। यदि यह धन का चैक हो, तो क्या हम इसमें से एक भी पैसा व्यर्थ जाने देंगे? यदि नहीं, तो निश्चित रूप से **'समय ही धन है'** उक्ति चरितार्थ क्यों नहीं होती? और यदि हम समय का सोच समझकर उपयोग नहीं करेंगे तो यह पंक्ति किस तरह से चरितार्थ होगी? यह सब करते हुए भी हमारे जीवन में बहुत से कार्य ऐसे होते हैं, जो कि हमारे नियंत्रण में होते हैं तथा कुछ ऐसे भी होते हैं जो कि हमारे नियंत्रण से बाहर होते हैं। जिन कार्यों पर हमारा नियंत्रण होता है, उन्हें सुचारू रूप से सम्पादित कर अपने जीवन की यात्रा को संतोषप्रद एवं सुखमय बना सकते हैं। उनमें से कुछ कार्य हैं- समय पर उठना, क्यों, क्या और कब खाना, क्या पहनना, किस प्रकार के दोस्त बनाना, अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से कैसा व्यवहार करना समय की पाबंदी आदि। ऐसे कार्य जिन पर हमारा नियंत्रण नहीं है, उनमें से कुछ हैं- उच्चाधिकारियों के साथ बैठक, कार्यस्थल पर पहुँचने में लगने वाला समय, ट्रेफिक में लगने वाला समय, कल क्या करना है आदि। ये सूचियाँ विस्तृत रूप से बनाई जा सकती हैं और इनका गहन विश्लेषण करने के उपरान्त अनुकूल परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

समय हर व्यक्ति की व्यक्तिगत धरोहर था, है और रहेगा। वैसे तो पुस्तकों में समय के उपयोग के बारे में बहुत सी विधियाँ दी गई हैं, जैसे योजनाबद्ध तरीके से समय पर कार्य करना, जीवन में कार्यों को वरीयता के आधार पर निष्पादित करना, प्रतिदिन के कार्य की सूची बनाना, 'नहीं' कहने की शक्ति रखना आदि-आदि। परन्तु कुछ ऐसी बातें, जो कि प्रयोग पर खरी उतरती हैं तथा जिनसे प्रतिदिन के 1440 मिनटों का निश्चित रूप से सदुपयोग किया जा सकता है, उनका विवरण निम्नानुसार प्रस्तुत किया जा रहा है-

**(अ) अनुपयोगी-अव्यवस्थित सामान (कल्टर) को हटानाः** घर में या कार्यालय की मेज पर यदि अनावश्यक सामान, फाइलें पड़ी हो तो उसका सीधा प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है। घर में इस बात का अभ्यास करते समय कि कौनसी वस्तुएँ अनावश्यक हैं, उन वस्तुओं का विश्लेषण करें कि इनमें से किनका गत तीन वर्षो में कोई उपयोग नहीं लिया गया है और फिर एक प्रश्न अपने आप से पूछें कि क्या मुझे इनकी वास्तव में जरूरत है? फिर **'पेरेटोज लॉ'** के आधार पर 80-20 सिद्धांत अपनाते हुए यह पता लगाएँ कि इनमें से ऐसी कौनसी 20 प्रतिशत वस्तुएँ हैं, जो कि 80 प्रतिशत प्रयोग में ली जाती हैं और कौनसी 80 प्रतिशत वस्तुएँ हैं जो कि 20 प्रतिशत प्रयोग में ली जाती हैं।

इसी प्रकार से कार्यालय में भी जिन पत्रावलियों एवं कागजों की जरूरत नहीं है, उनके बारे में दृढ़ निश्चय करके नष्ट करने के लिए तैयार हो जाइए। जिन कागज-पत्रों की आपके मेज पर जरूरत नहीं है, उन्हें फाइल कर दें। जिन पत्र-पत्रावलियों का आपसे कोई सम्बन्ध नहीं है, उन्हें सम्बन्धित को हस्तांतरित कर दें और जो शेष हैं, उन पर तुरन्त कार्यवाही करें। यदि आपका घर और कार्यालय व्यवस्थित, साफ एवं सादा है तो आप समय के उपयोग के लिए पूर्णतया तैयार हैं और साथ ही

आप मानसिक तौर पर व्यवस्थित हैं।

**(ब) अन्यत्र क्षेत्रों में रुचि जाग्रत करना**: हम पंचतंत्र का अध्ययन करें अथवा किसी अन्य श्रेष्ठ ग्रन्थ का, सभी में जीवनशैली की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अन्य क्षेत्रों में रुचि जाग्रत करने को आवश्यक माना गया है। यह रुचि कविता, नाच, नाटक, संगीत, विज्ञान, साहसिक अभियान, खेलकूद, अध्ययन, योग भक्ति, चिकित्सा आदि किसी भी क्षेत्र में हो सकती है। ऐसा करने से समय का पूर्ण सदुपयोग एवं विनियोजन होगा। जो भी समय विनियोजित किया जाता है, वह उपयोगी होता है और जीवन स्तर को ऊपर उठाता है।

**(स) स्वयं का अनुशासन**: स्वयं का अनुशासन का अर्थ है, स्वयं को अनुशासित करते हुए अपने जीवन पर नियंत्रण रखना। इसके लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य अपने शरीर, मन व आत्मा तीनों को इस प्रकार से समन्वय कर उन्हें तैयार करे कि इसके पश्चात जीवन की किसी भी राह पर चलने पर, लोग उसके व्यक्तित्व का आदर करें एवं उसके पथ पर चलना प्रारम्भ करें, उसका अनुसरण करें।

**(द) हर परिचित या सहयोगी को उसके नाम से बुलाना**: जीवन में किसी भी व्यक्ति को सबसे ज्यादा मिठास अपने नाम में महसूस होती है, अतः जीवन को आनन्दपूर्ण बनाने के लिए आवश्यक है कि नाम याद रखने की कला सीखें। ऐसे कई वैज्ञानिक अभ्यास हैं, जिनके द्वारा नाम याद रखने की कला को विकसित किया जा सकता है।

**(इ) वास्तविकता का सामना** : समय का सदुपयोग जीवन के प्रबंधन से ही हो सकता है, इसलिए अपने जीवन को व्यवस्थित करना अपने आप में समय का प्रबंधन है और यही समय का सदुपयोग भी है। हम कितने भाग्यशाली हैं कि प्रतिदिन हमें 86400 सैकण्ड बिना किसी ऑडिट एवं जाँच के एवं बिना किसी रोक-टोक के प्राप्त होते हैं। जीवन का हर दिन एक समय बैंक के रूप में होता है, जो कि हमें 1440 मिनट प्रदान करता है। बैंक से प्राप्त इन मिनटों का सदुपयोग करने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपनी अनावश्यक आदतों को दूर करें जैसे-ज्यादा भोजन करना, धूम्रपान करना, मदिरापान करना, गप्पे लगाना, ज्यादा सोना, दूसरों की आलोचना करना आदि-आदि।

समय का सदुपयोग एवं जीवन का प्रबन्धन 'वर्तमान' में ही किया जा सकता है। भूत और भविष्य इसकी परिधि में नहीं आते हैं। समय का वितरण सबको बराबर है, कोई ईर्ष्या का प्रश्न उत्पन्न नहीं होता है। समय को नष्ट करने वाले डाकू दो प्रकार के होते हैं। एक वे डाकू जो स्वयं व्यक्ति पैदा करता है दूसरा डाकू वे, जो कि हमारे जीवन में आकर हमारे समय को नष्ट करते हैं एवं हमारे जीवन स्तर को गिराने का पूरा प्रयास करते हैं। बाहर वालों का तो हम ज्यादा कुछ नहीं कर सकते हैं क्योंकि वे प्रायः स्वयं के दिमाग के उच्चाधिकारी परिजन, मित्र आदि होते हैं, परन्तु स्वयं के द्वारा थोपे गए डाकूओं का निवारण हम अवश्य कर सकते हैं इनमें से कुछ इस प्रकार हैं। अन्यमनस्कता (खोया-खोया रहना), अत्यधिक सामाजिक बनना (सोशियालाइजिंग), थकान, अनिर्णय, स्वयं के अनुशासन का अभाव, कार्य अधूरा छोड़ना, अव्यवस्थित जीवन, ध्यान देकर सुनने में असफल, प्रतिनिधान (डेलीगेट) करने में असफल एवं कागज का अस्त-व्यस्त होना।

आजकल एक फार्मूला अत्यधिक प्रयोग में है, वह है-24X7 इसका अर्थ है कि समय के उपयोग के लिए हर दिन के 24 घंटे एवं हर सप्ताह के 7 दिन का विचार किया जाना, ताकि समय के बैंक से चैक का पूरा भुगतान सही रूप से प्राप्त हो सके एवं 12 घंटों में 13 घंटों की उपलब्धि पा सकें।

हमारी स्थिति में एक रेशम के कीड़े की तरह है, जो स्वयं धागा एवं कोकून बुनता है और अन्त में उसी में फंस जाता है। इस भंवर में भटककर अन्त में हमें ऐसी स्थिति में नहीं पहुँचना चाहिए कि हम अपने ही हाथों को अपनी ही आँखों पर रखकर आँसू बहाए कि बहुत अंधकार है। सिर्फ अपने हाथों को अपनी आँखों से उठाकर दूर करना है और स्वतः ही सर्वत्र रोशनी का अनुभव होगा। 'शुभस्य शीघ्रम की नीति को अपनाइए।'

बिग्रेडियर (सेवानिवृत्त)
गाँव पोस्ट-श्रीसेला तह. बाली, पाली
(राज.)-306701
**मो: 9460877333**

## बच्चे में ईश्वर

एक दिन एक महात्मा जी अपने गाँव की ओर जा रहे थे कि किसी बच्चे ने आवाज देकर कहा-'महात्मा जी उधर से मत जाओ। उस तरफ एक बैल बहुत गुस्से में है और आपने लाल वस्त्र पहन रखा है।' बालक की बात अनसुनी करते हुए महात्मा जी ने विचार किया कि बालक उन्हें उपदेश दे रहा है। इसके अलावा उन्हें अपनी ही लिखी पंक्ति याद आई कि सभी में ईश्वर का वास है। उन्होंने सोचा, उस बैल को प्रणाम करूंगा और निकल जाऊंगा। यह सोचते-सोचते वे आगे बढ़ गए और बैल के नजदीक पहुँच गए। इसी बीच बैल ने उन्हें मारा और वे गिर पड़े। किसी तरह बचते-बचते वे वापस आए। इसके बाद वे वहां पहुँचे, जहां उनके गुरु महात्मा रहते थे। उन्होंने गुरु को सारा वृत्तान्त कह सुनाया। गुरु महात्मा जी ने मुस्करा कर कहा-'महात्मा जी, आपने बैल में तो भगवान को देखा, पर बच्चे में भगवान को नहीं देख पाए। आखिर उसमें भी तो भगवान थे। वे तो आपको रोक रहे थे, पर आप ही नहीं माने।'

## पुस्तक समीक्षा

### नूंवौ सूरज

लेखिका : **श्रीमती बसंती पंवार,** प्रकाशकः **रॉयल पब्लिकेशन, शक्ति कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर–342011;** संस्करणः **2017;** पृष्ठ संख्या : **104;** मूल्य : ₹ **150।**

श्रीमती बसंती पंवार, करीब पच्चीस बरसों से राजस्थानी और हिन्दी साहित्य जगत में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। साहित्य की सभी विधाओं में आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। सरकारी अध्यापिका के तौर पर जोधपुर में रहने के दौरान इन्होंने 'सौगन' नामक राजस्थानी में उपन्यास लिखा। इससे वे राजस्थानी भाषा की प्रथम महिला उपन्यासकार के रूप में अधिष्ठित हो गई। वैसे इनके लेखन की शुरूआत राजस्थानी भाषा में लिखी कहानियों से हुई थी।

समीक्ष्य कृति 'नूंवौ सूरज' बसंती जी की राजस्थानी भाषा में लिखी पन्द्रह कहानियों का संकलन है। वैसे तो इन कहानियों के कथानक में व्याप्त समस्याएँ हमें आसपास के लोगों के जीवन में प्रत्यक्ष दिखाई देती हैं। लेकिन लेखिका ने इन कहानियों में इन समस्याओं से डटकर धैर्य के साथ मुकाबला करने का सार्थक संदेश दिया है। पाठकों के मन में सकारात्मक और जीजिविषा की सोच को बढ़ावा देने वाली ये कहानियाँ, समष्टि से गहरा सरोकार रखती हैं।

संग्रह की पहली कहानी 'तीन रो वैम' में अध्यापिका नायिका अपने लिए 'तीन' का अंक अशुभ मानती है। संयोग से उसे तीन तारीख को तीन बजे ही दिल का दौरा पड़ता है। उसे घर के तीन जने ही अस्पताल ले जाते हैं। उसके बेड नम्बर तीन में सोना पड़ता है। जिससे वह अपनी मृत्यु की आशंका से त्रस्त हो जाती है। लेकिन जब स्वस्थ होकर घर लौटती है तो उसके पति और दोनों संतान उसे 'तीन तिगाड़ा, काम बिगाड़ा' के वैम (वहम) से मुक्त कराने में सक्षम हो जाते हैं।

संग्रह की दूसरी कहानी 'टोटको' में नायिका बसु के पति और सास छत पर पड़े टोटके को देखकर भयभीत हो जाते हैं। आनन-फानन में एक पण्डितजी को बुलाकर टोटके से बचने का उपाय करने के लिए पाँच सौ रुपये खरचने को तत्पर हो जाते हैं। बसु जब इनका विरोध करती है तो उसकी सास आत्महत्या करने का प्रयास करती है। आखिरकार जब बसु की सूझबूझ से लोगों को पता चलता है कि यह तो उसी पंडित और उसकी पत्नी की कारस्तानी है तो वे उन दोनों की जमकर खबर लेते हैं। पाठकों को कभी गुदगुदाती तो कभी अपने अंतर्मन में झांकने को यह कहानी प्रेरित करती है।

'दो-दो चाँद' में दाम्पत्य जीवन में सहनशक्ति और सूझबूझ के बल पर नायिका के द्वारा अपने भोग विलासी पति को सही मार्ग में लाने की कथा को बेहद भावभीने ढंग से उभारा गया है।

'बा दीवाळी' में नवविवाहित नायक अनिल एक अंजान महिला द्वारा फोन पर मैत्री प्रस्ताव से उत्पन्न मनोदशा का कुशल चित्रण किया गया है। विवाह के बाद, पहली दीवाली मनाने को आतुर अनिल, बेमन से उस अंजान महिला के बताए होटल के कमरे में पहुँचता है। हिम्मत करके जैसे ही अपनी पत्नी के प्रति प्रतिबद्ध होने की बात कहकर जाने लगता है तो उसे पता चलता है यह तो उसकी पत्नी व परिजनों द्वारा उसे दीपावली का सरप्राइज था।

'होली रो दिन' में स्वाभिमानी और अनाथ युवक की अनैच्छा के बावजूद घर जमाई बनने के बाद की त्रासदी को बड़ी बारीकी से उकेरा है। पत्नी और सास के द्वारा लगातार मानसिक रूप से व्यथित अनिल के घर छोड़ने के बाद उसकी पत्नी को उसका महत्त्व पता चलता है।

'सेवट' की नायिका 'मंजू' के किशोरावस्था में दकियानूसी परिवार में ब्याहे जाने से डॉक्टर बनने के अरमान धरे के धरे रह जाते हैं। लेकिन वह अपना अधूरा सपना, अपने पुत्र राहुल को डॉक्टर बनाकर पूरा करने में अपनी सार्थकता समझती है। यह कहानी आम स्त्री को कृत संकल्पी और जुझारू होने का हौंसला जगाती है।

संग्रह की शीर्षक कहानी 'नूंवो सूरज' का कथ्य बेहद मर्मस्पर्शी और समसामयिक है। कहानी का मुख्य पात्र सूरज, जल्दी से अमीर होने की चाह में गलत लोगों के सम्पर्क में आकर तस्करी करने लगता है। लेकिन उसके पिता किशनजी को जब यह बात पता चलती है तो वे उसे सही मार्ग में लाने के लिए भरसक प्रयत्न करते हैं। उसकी सरलमना गर्भवती पत्नी पूजा को उसके हाल में न छोड़कर अपने साथ गाँव ले आते हैं। पूजा के पुत्र के जन्म पर, उसकी सास उसके सुधरे हुए पति को उसके सम्मुख 'नया सूरज' कहकर पेश करती है। नशे या अपराध की दुनिया में रहने वाले युवकों के माता-पिता को यह कहानी, अपने लाडलों को सही राह पर लाने की, राह दिखाती प्रतीत होती है।

'बॉयफ्रेंड' प्लेटोनिक लव (अशरीरी दिव्य प्रेम) की वशीभूत अपने प्रेमी को ही अपना सब कुछ मानकर समाज की रीतियों को धता बताने की गलती करने वाली युवतियों को इसके दुष्परिणाम से चेताती है।

'उलझन' में एक विदेशी दम्पत्ति के द्वारा एक निर्धन परिवार की एक पुत्र के दत्तक लेने की मर्मस्पर्शी कथा है।

नायिका 'मणि' अपने पालकों द्वारा अपने अतीत के बारे में जानकर, कौतुहलवश अपने जैविक माता-पिता से मिलने जोधपुर आती है तो माता-पिता की दैन्यावस्था और उनके दकियानूसी विचारों को जानकर 'उलझण' में पड़ जाती है। कैलाश गाइड की माँ के लिए फैसले से मणि के जीवन में खुशियाँ वापिस लौट आती हैं।

'ममता बैनजी' में भारत में बाल श्रमिकों के प्रति, उनके मालिकों के जुल्मों का मुँह बोलता चित्रण है। लेकिन लेखिका ने नायिका ममता को मूक दर्शक न दर्शाकर, उसे साहसी और उदारमना चित्रित किया है। 'जन्मदिन' में अनाथ पूजा के आत्मनिर्भर होने पर अपनी सखी के दादा-दादी को वृद्धाश्रम से अपने साथ रखने का दोनों पक्षों की तृप्ति का मनमोहक चित्रण किया गया है। 'गिणगौर' में वहम की शिकार रजनी के भीतर छिपे कुंठा और निराशा को उसकी मित्र ऊषा द्वारा अपने तर्कों से दूर करने की घटना उकेरी गयी है।

'माँ रो दरद' में वृद्धा सरला को धोखे, इकलौते पुत्र द्वारा वृद्धाश्रम पहुँचाने की करुण-कथा है। लेकिन आम मांओं से हटकर सरला की पुत्र के नाम लिखी आखरी चिट्ठी और आखरी इच्छा के रूप पुत्र को अंत्येष्टि क्रिया में भाग न लेने की गुहार, पाठकों के मन में उथल-पुथल मचा देती है।

'रिटायर' में एक लापरवाह और अपनी कामकाजी पत्नी का घरेलू कामों में हाथ न बंटाने वाले पति की रिटायरमेंट के बाद की मनोवृत्ति को हास्य परक घटनाओं के मार्फत रेखांकित किया है। यह संग्रह की अंतिम कहानी, पाठकों को गुदगुदाती हुई दाम्पत्य जीवन में सहभागिता की सीख देती है।

आशा है लालित्यपूर्ण संदेशात्मक यह कहानी-संग्रह, अपनी सहज सरल बोलचाल की शैली में विषयानुकूल कहावतों से सुधी पाठकों के मन को आलोकित करने में सक्षम रहेगा।

समीक्षक : **पूर्णिमा मित्रा**
ए-59 करणी नगर, नागानेची रोड, बीकानेर (राज.)-334003
**मो: 8619205180**

## वैचारिक पुष्प गुच्छ

लेखिका : **डॉ. अपर्णा पाण्डेय;** प्रकाशकः **वृन्दावन बिहारी दार्शनिक अनुसंधान केन्द्र, बीह-72, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली-110049;** संस्करणः **प्रथम;** पृष्ठ संख्याः **176;** मूल्यः **₹ 140/-**

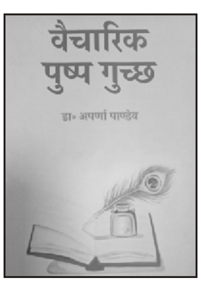


वैचारिक पुष्प गुच्छ पुस्तक की लेखिका डॉ. अपर्णा पाण्डेय 1996 से आदर्श शिक्षिका के रूप में कोटा, राजस्थान में राजकीय सेवा में है। आपने 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन, मोरिशस (2018) में हिंदी शिक्षिका के रूप में भागीदारी निभा कर राजस्थान का नाम गौरवान्वित किया है। आपने 2013 से 2015 तक भारतीय उच्चायोग, ढाका, बांग्लादेश में (प्रतिनियुक्ति) सेवाएँ दी हैं। देश-विदेश के अनेक मंचों का सफल संचालन किया, आकाशवाणी पर काव्यपाठ किया। पूर्व में आपकी पुस्तक पुराणों में शुकदेव प्रकाशित हो चुकी है। साथ ही विख्यात पत्र-पत्रिकाओं में लेख, कविता, समीक्षाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

'वैचारिक पुष्प गुच्छ' विचारों की सोंधी सुगंध जैसा आभास कराने वाली अद्वितीय पुस्तक है। पुस्तक में विचारों के विस्तार निबन्ध की शक्ल में नजर आते हैं। ये निबन्ध हमें अपने अतीत-वेद की अपौरुषेयता से लेकर सामवेद में सामगान पद्धति, पुराणों में भूगोल शास्त्र: एक दृष्टि व उपमा कालिदासस्य, तुलसी और संत कबीरदास से होते हुए मुंशी प्रेमचन्द तक की यात्रा करवाते हैं। साथ ही चेतना का विकास-अवसाद मुक्ति का प्रथम सोपान जैसे मनोवैज्ञानिक विषयों को भी छूते हैं।

यह सतत यात्रा कविमन की वैचारिक उथल-पुथल को चित्रित करती सी प्रतीत होती है, यहाँ कवयित्री कतिपय समाज को दर्पण दिखाते हुए सवाल खड़े करती है और लिखती है-

माँ जबसे गर्भ में आई हूँ,
कई सपने साथ में लाई हूँ।
क्या मेरे सपने चूर कर डालोगी?
क्या गर्भ में ही मार डालोगी?

लेखिका पुस्तक में नारी सशक्तिकरण विषय पर बहुत दृढ़ता से अपनी बात कहती है-

नारी ने नर को जन्म दिया,
उसने ही जगत बनाया है।

वहीं लेखिका मुखर शब्दों में कहती है-

शोला हूँ चिंगारी हूँ, में नवयुग की नारी हूँ।

वैचारिक पुष्प गुच्छ पुस्तक जीवन से जुड़े विचारों के कई रंग-पुष्पों से गुंथा एक ऐसा गुलदस्ता है जिसमें समाज को मानवीय कर्त्तव्यों का कर्मबोध कराते हुए भारतीय संतों, कवियों, विचारकों के जीवन आदर्शों को समेटते हुए सुंदर लेखों के संकलन के रूप में आधुनिक मानव का मार्ग प्रशस्त करती है।

पुस्तक के सारगर्भित लेखों में विलक्षण भाषा का प्रयोग विदुषी लेखिका के स्तरीय चिंतन का सिंहावलोकन कराती है। आशा है यह पुस्तक सभी को पसंद आएगी।

समीक्षक : **डॉ.रविन्द्र मारू**
भुवनेश बाल विद्यालय, पुलिस लाइन, बाराँ रोड, कोटा (राज.)
**मो: 9413941921**

## लट्टू और डोरी

लेखक : **कमलेश तिवारी,** प्रकाशक : **बोधि प्रकाशन, जयपुर** मूल्य : **₹ 100** संस्करण : **प्रथम 2020** पृष्ठ संख्या : **60**

हमारे देश के सन्दर्भ में देखें तो बच्चों को पढ़ने के लिए पाठ्यपुस्तक उपलब्ध होती है। यह

पाठ्यपुस्तक पाठ दर पाठ बढ़ती हुई परीक्षा के माध्यम से उसका मूल्यांकन करती है। यह मान लिया जाता है कि पाठ्यपुस्तक पढ़ना और अच्छे अंक लाना ही बच्चे की नियति है। कुल मिलाकर पाठ्यपुस्तक से इत्तर कोई भी पुस्तक उसके लिए त्याज्य हो जाती है। जबकि बच्चों की कल्पनाओं को नए आयाम देने तथा उनके अनुभव को विस्तार देने की जरूरत होती है। ऐसे में अच्छे बाल साहित्य की जरूरत सर्वविदित है लेकिन यह भी सत्य है कि वर्तमान में मीडिया और सोशियल मीडिया के प्रभाव ने पढ़ने की प्रवृत्ति को कम किया है। आज बच्चों के पास पढ़ने के लिए पाठ्यपुस्तकों के अलावा कुछ भी नहीं हैं। कई बाल पत्रिकाएं दम तोड़ चुकी है। आज बाल साहित्य के सन्दर्भ में सार्थक प्रयास की जरूरत महसुस होती है। साथ ही यह भी जरूरी है कि जहाँ एक ओर पढ़ने की प्रवृत्ति कम हुई हैं वहीं दूसरी ओर बच्चों के बीच टीवी पर दिखाए जाने वाले कार्टून चैनलों ने बच्चों के दिल में जगह बनाई है। आज बच्चों के लिए निकलने वाले कॉमिक्स कम होने की पूर्ति कार्टून चैनल कर रहे हैं।

इतना सब कुछ होने के बाद भी इस बात में कोई शंका नहीं की जानी चाहिए कि बच्चों को पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकों की आवश्यकता होती है। उनके विस्तृत कल्पना जगत को पोषण देने के लिए बाल साहित्य की उपयोगिता हमेशा बनी रहेगी। बाल साहित्य की पुस्तकें उनकी जिज्ञासाओं को उभारने तथा उनके अनुभव जगत को विस्तृत करने में सहायक होती है। यदि पुस्तक चित्रात्मक है तो वह बच्चों के अनुभव जगत को विस्तृत करने में ज्यादा सहायक होती है। बच्चे के संवेदनात्मक विकास में बाल साहित्य बहुत मदद कर सकता है। इतना

ही नहीं बाल साहित्य बच्चों के बच्चों के ज्ञान-विज्ञान की संपदा को समृद्ध करता है। एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि पाठ्यपुस्तकों से इतर कुछ रोमांचक और रुचिकर पढ़ने की इच्छा बच्चों के मन में होती है इसलिए बाल साहित्य की उपयोगिता पर कोई प्रष्न खड़ा नहीं किया जा सकता। बाल साहित्य न केवल बच्चों का रंजन करता है बल्कि वह उनमें भाषा कौशल यथा सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखने के विकसित करने में भी सहायक होता है।

इसी कमी को पूरा करता कवि, कथाकार, रंगकर्मी के साथ सरकारी विद्यालय में प्रधानाचार्य श्री कमलेश तिवारी बाल कहानी संग्रह 'लट्टू और डोरी' कुछ उम्मीद जगाता है। बाल मनोविज्ञान को समझते रचे गए इस बाल कहानी संग्रह में हुए इस संग्रह में बहादुर बंटी, जानवरों की जीत, छोटू का पेड़, हैप्पी न्यू ईयर, मीकू भुला खेल, थलम ठल्ली, लट्टू और डोरी, पृथ्वी की पंचायत, कुँए की मेंढकी और बकरे की अम्मा जैसी दस कहानियां संग्रहित हैं। इन कहानियों को पढ़क़र यह कहा जा सकता है कि यह बच्चों के कल्पना जगत के साथ चलते हुए उनमें कौतुहल पैदा करती हैं और अपनी गति से इस प्रकार आगे बढ़ती है कि बच्चा इन्हें पूरी पढ़े बगैर नहीं छोड़ेगा।

इस संग्रह की कहानियों में वह सब कुछ है जो बच्चों की जिज्ञासाओं को बढ़ाए तथा उन्हें षांत करें। बहादुर बंटी में लेखक ने मछली के बच्चे बंटी के माध्यम से नदी और समुद्र में आजाद रहने वाली मछलियों को घर के षो केष में बंद करने की मानवीय वृत्ति को बखुबी उठाया है तो जानवरों की जीत कहानी में अपने लाभ के लिए जंगलों को काटने की आदमी की फितरत पर चोट करते हुए जानवरों द्वारा अपने जंगल को बचाने को रोचक ढंग से रखा है। छोटू का पेड़ का चिड़िया का बच्चे छोटू के माध्यम से पेड़ लगाने की बात कहती है तो हैप्पी न्यू ईयर कहानी एक बड़ी सोसायटी के बच्चों द्वारा पास की गरीब बस्ती के बच्चों के साथ हैप्पी न्यू ईयर बना कर उनके साथ दोस्ती की कहानी के माध्यम से अमीर-गरीब को बराबर मानने की बात कहती है। इसी प्रकार अन्य कहानियाँ भी कुछ न कुछ अनकहें संदेश देती है।

दरअस्ल आजकल के बाल साहित्य में देखे तो वह बच्चों को शिक्षा देता नजर आता है जो बच्चों को बेहद ऊबाऊ लगता है लेकिन इस संग्रह की कहानियों को पढ़कर यह आश्वस्त हुआ जा सकता है कि ये सीधे-सीधे बच्चों को कोई शिक्षा नहीं देती वरन् उनकी जिज्ञासाओं का शमन करती हुई उनको मौलिक चिंतन का अवसर प्रदान करती हुई कुछ सोचने को मजबूर करती हैं। यह सोचने को मजबूर करना उन्हें कुछ करने की प्रेरणा देता है। इस संग्रह की कहानियों से गुजरते हुए यह महसुस किया जा सकता है कि लेखक ने अपने लेखकीय कौशल से प्रसंग और घटनाओं का तानाबाना कुछ इस तरह बुना है कि सहजता से बच्चों में पर्यावरण चेतना, मित्रता, आपसी भाईचारा, स्वार्थपरकता के त्याग, एक दूसरे की मदद करना, साहस, परोपकार और बुद्धिमता जैसे मानवीय मूल्यों का सहज पोशण करती हुई बच्चों के मन में एक सुन्दर संसार बनाने की परिकल्पना को पोशित करती हैं।

इस संग्रह की कहानियों की बालसुलभ भाषा इन्हें अधिक बोधगम्य बनाती है। चूंकि कमलेश तिवारी रंगकर्मी हैं इसलिए कहानियों को बढ़ाने के लिए छोटे-छोटे संवादों का प्रयोग करते हैं। ये संवाद कहानी की रोचकता को बढ़ाते हैं। कहानियों के बीच में छोटी-छोटी कविताओं के प्रयोग से बच्चों के मन में नाटक की तरह के दृष्यचित्र बनाती है।

बड़े फॉन्ट और बड़े आकार में प्रकाषित पुस्तक की सुन्दर छपाई इसे बच्चों के लिए पठनीय बनाने के लिए और भी मददगार है। इतना ही नहीं इस पुस्तक का आकर्षक कवर और कहानियों के प्रारम्भ में दिए गए रेखाचित्र इसे और भी अधिक आकर्षक बनाते हैं जो अन्ततः बच्चों को पढ़ने के प्रेरित करने में सहायक सिद्ध होती है। अंत में यह कहना गलत नहीं होगा कियह बाल मनोविज्ञान पर आधारित ऐसा बाल कहानी संग्रह है जो बच्चों में उनके विस्तृत कल्पना जगत को पोशण देने तथा उनके अनुभव जगत को विस्तृत करने में सहायक रहेगी।

समीक्षक : **डॉ. प्रमोद कुमार चमोली**
अनुसंधान अधिकारी
कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा,
राजस्थान, बीकानेर

## प्रेरक-प्रसंग

महात्मा कबीर अपने शिष्यों से कहा करते थे-

**जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।**
**हों बैरी ढूँढ़न गई, रही किनारे बैठ।।**

जिनने खोज की है, उनने पाया है। जो किनारे पर बैठे रहे हैं, वे बावले, पागल, मूर्ख कहलाए। इतिहास साक्षी है कि जिसने द्वार खटखटाया है, उसके लिए खोला गया है। यह ठीक है कि कभी-कभी बड़े प्रयत्न भी असफल हो जाते हैं, पर ऐसा सदा नहीं होता। ऐसे कुछ अपवाद ही कभी-कभी घटित होते हैं और अपवादों को सार्वजनिक नियम या प्रमाण नहीं माना जाता। कई व्यक्ति प्रयत्न करते हुए भी प्रतियोगिता में सफल नहीं हो पाते, पर इससे प्रयत्न या आकांक्षा की महानता नहीं घटती। कई महत्त्वाकांक्षियों में जिसकी तैयारी अधिक होती है, वह सफल रहता है, जिसके निर्बल प्रयास थे, वह पीछे रहा, पर जिसने अधिक सामर्थ्य संपादित कर ली थी, वह अधिक सफल रहा। जो प्रतियोगी सफल रहा, वह अपने प्रयास की उत्कृष्टता को ही तो परिचितों के सामने प्रकट करता है। जिसकी आकांक्षा जितनी फलितार्थ हो गई है, वह उतना ही सफल रहता है। बेशक, विजय साधनों से मिलती है, पर उन साधनों की अधिकता, उत्कृष्टता, सुव्यवस्था और सदुपयोग, यह सब आकांक्षा द्वारा ही संकलित होता है।

# बाल शिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।
-व. संपादक

## सम्मान है शिक्षक

गुजरे हुए पलों की याद है शिक्षक
आने वाले पलों का
ख्वाब है शिक्षक
पहली कक्षा के बच्चे के
क,ख,ग,घ से लेकर
साक्षात सरस्वती पुत्र और
साहित्य का
सम्मान है शिक्षक।
कभी धूप है शिक्षक
तो कभी छाँव है शिक्षक
कभी उजली सहर तो
कभी सुहानी शाम है शिक्षक
तो कभी हारे हुए बच्चे की हिम्मत
तो कभी बच्चे की जीत पर
हर माथे का सलाम है शिक्षक
कभी किसी के लिए
कुछ भी नहीं
तो कभी सभी की
आन-बान-शान है शिक्षक
अगर यूं ही मानों तो बहुत सादा
व्यक्तित्व होते हैं ये
वरना हकीकत में तो
गुरु शिष्य परंपरा की जान
है शिक्षक
और सही मायनों मे
हिन्दुस्तान का
स्वाभिमान है शिक्षक।

**सुभाष गर्ग**, कक्षा-10
रा.मा.वि.,डेडवा, जालोर (राज.)
मो: 9610714084

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है। -वरिष्ठ संपादक

# बालशिविरा GREEDINESS OF TOLARAM

Once there was a poor man. His name was Ramu. He lived in Gorkhpur village with his wife shirinki and two children a girl Pooja and a boy Ram. His children were study in a government school. Once a day Ramu thought- "I should work in a house so I can full the stomach of my little family." Shirinki saw that Ramu was thinking about something and then she asked Ramu-"What are you thinking" Ramu said- "nothing" Shirinki said- "If you are thinking anything, so tell me truth." Ramu said- "Ok now listen, I was thinking that we don't have money for enough food. I think that I should work in a house." Shirinki said- "If you will be a servent, I also will be a servent." Ramu said- "We will talk about it later." Ramu and his family members sleeped. In the early morning, Ramu wake up and went to kelmas forest near Gorkhpur village. When shirinki wake up, she saw that Ramu is not at home. she worried and think- "Where is he?" Then pooja wake up and found his mother in stress. She asked her mother- "What happened?" Then Ram wake up and asked- "What you both are" talking about? Where is Papa? Shirinki said- "Nothing happened. Your father is gone an important work. got ready for school Children got ready for school and school? Shirinki bring them to school. She came the home and was so worried. Ramu in the forest thought. I should search for a richest merchant of our village. But where? Oh! yes! I should go Tolaram's house. Ramu went Tolaram's house and asked to be his servent. Tolaram said yes to him. Since then Ramu do work in Tolaram's house. To the poor man's hut, whenever children asked her for ramu, she said that they are on important task, summer appears and there was lack of water. All crops were dimeterious and there is lack of water.

Tolaram- "Ramu come here."

Ramu-"Yes master."

Tolaram- "There is a lake in rampuri village. That is 5 K.M. Fill a Pitcher and bring it here."

Ramu- "Ok I will do it."

Ramu went to rampuri village. After he reached here, he was thirsty, so he sat there and a little cuphed his hand. He taste it again and again, it was always a delicious cold tea. He filled a pitcher and bring it to Tolaram's house. When Tolaram taste it, He shocked and asked ramu "This is a cold tea. From where do you bring it?" Ramu tell him the story of the magic lake of rampuri village. The wealthy merchant thought- "When ramu goes to forest for sleep in night, I will fill a pitcher of tea and drink it." Ramu went to the forest for sleep and then Tolaram went to the lake. He drank the water and suddenly. He cried with anger- "Oh no! this is only simple water." Then rampuri villagers wake up hearing this cry. They thought that there is a thief. They reached the direction of that sound. They can't saw that he is Tolaram because of darkness at night. They saw Tolaram and handed over him to panchayat. Next morning, villager do case on him. Ramu fill to pitcher of that magic lake and sold it he become rich then Tolaram. He went to his old mudy hut and pick his family to a house in city, They lived happlily without any trouble in life. when his children become big they became officer. Pooja become I.A.S., Ram become I.P.S..

Moral : Greediness brings A lot problems in Life.

Anushka Suthar
Class - VIth
R.B.M. Public School,
Bikaner

## शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

**-व. संपादक**

### शिवनगर विद्यालय में ली गई संविधान प्रस्तावना और कोविड-19 रोकथाम की शपथ

**बीकानेर :** राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शिवनगर में संविधान दिवस के अवसर पर राज्य सरकार के निर्देशानुसार विद्यालय के सभी कर्मचारियों ने संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया एवं इस मौके पर डॉ. भीमराव अंबेडकर की फोटो पर दीप प्रज्वलित कर माल्यार्पण किया। विद्यालय के कार्यक्रम अधिकारी श्री मोहरसिंह सलावद ने बताया कि राज्य सरकार के निर्देशानुसार संविधान दिवस के अवसर पर समस्त कर्मचारियों द्वारा संविधान की प्रस्तावना को अंगीकृत करने तथा प्रस्तावना के मूल्यों को जीवनचर्या का हिस्सा बनाए जाने की राज्य सरकार की मंशा के अनुरूप संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया गया तथा उसको शपथ रूप में अंगीकार करने का संकल्प लिया गया। व्याख्याता श्री गोवर्धन लाल गोदारा ने बताया कि संविधान दिवस के अवसर पर विद्यालय में विश्व महामारी कॉविड-19 की रोकथाम के लिए भी शपथ ली गई जिसमें राज्य सरकार और केन्द्र सरकार के इस बाबत दिए गए दिशा निर्देशों की पालना करने, मास्क के बिना सार्वजनिक स्थानों पर न जाने, समय-समय पर हाथ धोने तथा इसके साथ ही अपने आस-पास भी इन कार्यों को करने की प्रेरणा देने का संकल्प लेकर शपथ ली गई। इस अवसर पर विद्यालय के व्याख्याता सर्वश्री गोवर्धन लाल, वरिष्ठ अध्यापक मोहरसिंह सलावद, अध्यापक प्रभूराम, गणेशाराम, पशुधन सहायक सुमित गौरा, सुरेश कुमार, कमलसिंह भाटी आदि मौजूद थे।

### इन्द्रेश की पुस्तक इनसे बचिए का विमोचन

**बाँसवाड़ाः** राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिजौरी बड़ी, कुशलगढ़ के प्रधानाचार्य श्री राजकुमार इन्द्रेश द्वारा लिखित नाटक 'इनसे बचिए' का विमोचन विद्यालय परिसर में गुरुवार को मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कुशलगढ़ श्री शम्भू दयाल नायक के मुख्य आतिथ्य व प्रधानाचार्य कोटड़ा श्री राणा जोगेन्दर सिंह राठी की अध्यक्षता व प्रधानाचार्य पाटन श्री सुरेश चन्द शर्मा, प्रधानाचार्य लोहारिया बड़ा श्री बाबूलाल वर्मा के विशेष आतिथ्य में आयोजित हुआ। श्री इन्द्रेश ने बताया कि बचपन में दादी माँ से सुनी कहावत तीन कोट से बचो को आधार मानकर इस नाटक का

कथानक रचा गया है, जिसकी भूमिका बिहारी पुरस्कार से पुरस्कृत जोधपुर विश्वविद्यालय के डॉ. सत्यनारायण ने लिखी है व समीक्षा करते हुए डॉ. कचरू लाल गिरी ने कहा कि इन्द्रेश ने आम आदमी को जीवन में कैसे परेशानियों का सामना करना पड़ता है व वर्तमान समय की विसंगतियों को उजागर करते हुए नाटक के माध्यम से आज की व्यवस्था के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। श्री शम्भु दयाल नायक ने कहा कि यह कुशलगढ़ के इस घाटा क्षेत्र का सौभाग्य है कि यहाँ साहित्य जगत में विशेष पहचान रखने वाले प्रधानाचार्य श्री इन्द्रेश का पदस्थापन हुआ, इनकी लेखनी में इस क्षेत्र की समस्याओं को भी स्थान मिल पाएगा व जनमानस तक पहुँच पाएंगी। सभी ने श्री इन्द्रेश को साहित्य सृजन हेतु शुभकामनाएँ दीं।

### कुंचौली में मनाया संविधान दिवस समारोह

**राजसमंद** : राजसमंद परिक्षेत्र के कुंचौली कुंभलगढ़ में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुंचौली के स्काउट्स व ग्राम पंचायत के संयुक्त तत्वाधान में संविधान दिवस समारोह मनाया गया। संविधान दिवस समारोह ग्राम पंचायत कुंचौली की सरपंच निर्मला देवी भील की अध्यक्षता में शुरू हुआ। संविधान समारोह में शपथ राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के सहायक लीडर ट्रेनर स्काउट व शारीरिक शिक्षक श्री राकेश टांक द्वारा दिलवाई गई। स्काउट्स द्वारा कोरोना के विरुद्ध हस्ताक्षर अभियान की शुरुआत संविधान दिवस पर कर कोरोना महामारी के बारे में ग्रामवासियों को समझाने के लिए आज हस्ताक्षर अभियान की शुरुआत की। इस अवसर पर ग्राम विकास अधिकारी श्री हरीश कुमार मीणा, पंचायत सहायक, स्वास्थ्य विभाग से एएनएम. पुष्पा गायरी, स्काउट विभाग से

श्री राकेश टांक, आयुर्वेदिक विभाग, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा सहयोगिनी, समाजसेवी, बीएलओ. व विद्यालय के अध्यापक गण ने ग्रामवासियों में लोगों को कोरोना को हराने व जब तक कोरोना की दवाई नहीं तब तक मास्क ही दवाई है समझाने की शपथ लेते हुए हस्ताक्षर किए।

## प्रतिभा सम्मान समारोह 2020 का आयोजन

**अलवर–** राजकीय प्राथमिक विद्यालय ग्राम कोड़िया, रैणी के प्रांगण में ब्लॉक रैणी, क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों से उच्च अंकों से उत्तीर्ण कक्षा 10 व 12 के होनहार छात्र–छात्राओं को प्रोत्साहित करने एवं कोविड–19 के बारे में आम जन जागरण के उद्देश्य को लेकर प्रतिभा सम्मान समारोह 2020 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक श्री जौहरी लाल मीणा, विशिष्ट अतिथि श्री मुकेश किराड़– अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा मुख्यालय अलवर, श्री सुरेश चंद मीणा – ए.सी.बी.ई.ओ. रैणी, श्री प्रेमराज सैनी एवं श्री ओमप्रकाश घूमना– प्रदेशाध्यक्ष राष्ट्रीय मानवाधिकार एंड एंटी करप्शन व महिला–बाल विकास, श्रीकांत सैदावत आदि रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्राम पंचायत ईटोली के नव निर्वाचित सरपंच श्री धर्मराज मीणा ने की। कार्यक्रम का मंच संचालन श्री नंदलाल बैरवा ने किया। कार्यक्रम में माननीय विधायक श्री मीणा ने अपने संबोधन में कोविड–19 का हवाला देते हुए संक्रमण से सावधान रहने की सख्त आवश्यकता एवं सहयोग पर जोर दिया। अभिप्रेरणा प्लस समिति द्वारा मेरा गाँव मेरा शहर प्रतिभा हमारी पहचान के तहत आयोजित संदेश पूर्ण कार्यक्रम को बेहद सराहनीय बताया। ए.डी.ई.ओ. अलवर– श्री मुकेश किराड़ ने अपने संबोधन में आमजन को अपने बच्चों को ज्यादा से ज्यादा सरकारी स्कूल में पढ़ाने एवं सरकारी सुविधाओं का लाभ उठाने का आह्वान किया और प्रतिभावान छात्रों को शिक्षा का मूल मंत्र लक्ष्य बनाकर पढ़ना बताया। कार्यक्रम के संयोजक श्री भगवान सहाय जोरवाल ने बताया कि यह समारोह क्षेत्र की प्रतिभाओं, कार्मिकों, को गाँव में शिक्षा एवं सरकारी स्कूल के समग्र विकास में जोड़ने के उद्देश्य से आयोजित किया गया वहीं दूसरी ओर रैणी ब्लॉक क्षेत्र की उच्च अंक प्राप्त प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को मास्क, सैनिटाइजर, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। यह दूरदराज ढाणी जैसे क्षेत्रों में एक अनूठी पहल थी जिसका शुभारंभ गत वर्ष शिक्षा विभाग, बीकानेर में कार्यरत गुरु जी श्री भगवान सहाय मीणा ने किया। कार्यक्रम में समाज के बुद्धिजीवी लोगों ने युवा पीढ़ी से अंधविश्वासों को छोड़कर शिक्षा के मार्ग पर चलने का आह्वान किया गया। क्षेत्र के इन प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को समाज सुधारकों के अनुभवजन्य विचारों से अवगत कराकर सभी ने उनके द्वारा बताए गए आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में सरपंच श्री धर्मराज मीणा एवं गाँव के सर्वश्री ओम प्रकाश बैरवा, अशोक कुमार बैरवा, रामनिवास मीणा, प्रभु दयाल योगी, रघुवीर सिंह बैरवा, बीना बैरवा, शांति मीणा, खेलंता मीणा, खुशबू मीणा, कमला जोरवाल, मुकेश मेहरा, पूरणमल बैरवा, नथोली राम बैरवा, जगदीश मीणा, प्रेम नारायण मीणा आदि ने बढ़–चढ़कर अपना योगदान किया। ग्रामवासियों के आग्रह पर सरपंच व क्षेत्रीय विधायक ने गाँव में स्थित सरकारी स्कूल की चारदीवारी विधायक कोटा से कराने एवं पीने के पानी की व्यवस्था सुनिश्चित कराने का आश्वासन दिया।

## माता सरस्वती की मूर्ति स्थापित की गई

**भीलवाड़ा–** रघुनाथपुरा बनेड़ा स्थानीय विद्यालय में स्व. श्रीमती सुन्दर देवी सोमानी की स्मृति में विद्यालय की वरिष्ठ अध्यापिका श्रीमती आशा सोमानी पत्नी श्री जगदीश लाल सोमानी ने विद्यालय में सरस्वती मंदिर का निर्माण करवाया व सरस्वती माता की मूर्ति की स्थापना विधि विधान से की गई। मूर्ति स्थापना के समय विद्यालय प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष श्री कालू लाल गाडरी, श्री ईश्वर नाथ योगी, श्री मांगीलाल ओड, श्री प्रभू लाल कुमावत, श्री शंकर लाल गाडरी एवं श्री प्रभूनाथ योगी व विद्यालय परिवार के प्र.अ. श्री गोविन्द सिंह राठौड़ उपस्थित रहे। इनके अलावा सर्वश्री विजय जैन, मंजू पारीक, ममता भारद्वाज, अनुसूया ओझा, माया चन्देल, एम. शुभलक्ष्मी, घनश्याम टेलर, लक्ष्मण लाल गुर्जर, राजेन्द्र सिंह राठौड़, अशोक जीनगर, जगमोहन विजयवर्गीय, अंगवीर पानगडियां आदि उपस्थित थे। मूर्ति स्थापना श्री बनवारी लाल शास्त्री विद्वान पंडित की उपस्थिति में मंत्रोच्चारण के साथ सम्पन्न हुआ।

## जनसहयोग से सँवरता जीरावल का राजकीय विद्यालय

**सिरोही–**राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जीरावल स्टाफ की विद्यालय विकास की मुहिम को जबरदस्त सहयोग प्राप्त हो रहा है। कोरोना संक्रमण काल में विद्यालय में विकास कार्यों के अंजाम हेतु प्रधानाचार्यजी के मार्गदर्शन में योजना बनाई गई। जिसमें जाली व तारबंदी, रंग रोगन,हरित वाटिका,बबूल उन्मूलन, मैदान समतलीकरण, नल पाईप लाइन आदि कार्य मुख्य थे। जिसमें अंशदान की शुरुआत सर्वप्रथम विद्यालय स्टाफ द्वारा की गई। तत्पश्चात व्हाट्सएप ग्रुप जो विद्यालय विकास हेतु निर्माण किया गया, वहाँ इस योजना की जानकारी देकर सहयोग की अपील की गई। दल बनाकर भामाशाह बंधुओं से व्यक्तिगत संपर्क किया गया। विद्यालय की अपील पर ग्रामवासियों ने दिल खोलकर भरपूर सहयोग

किया। समाजसेवी व भामाशाह श्री सुरेश कुमार लादूराम जी रावल ने उदार हृदय का परिचय देते हुए रंग रोगन का सम्पूर्ण व्यय एक लाख चालीस हजार रुपये का चेक बड़े भ्राता श्री प्रकाशराज रावल के द्वारा संस्थाप्रधान श्री कमलकांत शर्मा को भेंट किया गया। विद्यालय के भव्य प्रवेश द्वार के लाभार्थी भी श्री सुरेश लादुरामजी रावल हैं। ग्राम पंचायत जीरावल के युवा सरपंच श्री कांतिलाल कोली ने बबूल उन्मूलन हेतु जेसीबी उपलब्ध करवाई। भामाशाह बंधुओं के सहयोग से मैदान समतलीकरण का प्रयास किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रधानाचार्य श्री कमलकांत शर्मा, व्याख्याता सर्वश्री भगवत सिंह सोलंकी, समाजसेवी सर्वश्री हजारी राम पुरोहित, मीठालाल, मुकेश पुरोहित, अनिता, जगदीश, कांतिलाल, लक्ष्मी सुथार, रिजवाना बानु, अरविंद, भादरनाथ, महेंद्र कुमार, रमेश धर्माणी, राजा चौहान, छगनलाल घांची उपस्थित रहे।

## संस्थाप्रधान ने प्रिंटर भेंट किया

**जालोर:** राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय लालपोल की संस्थाप्रधान संतोष माथुर ने विद्यालय को एक प्रिंटर मशीन भेंट की है। विद्यालय की ओर से सेवानिवृत्ति के अवसर पर श्रीमती माथुर का स्वागत किया गया। इस अवसर पर शारीरिक शिक्षक श्री दलपत सिंह आर्य ने संबोधित करते हुए कहा कि श्रीमती माथुर ने अपने जीवन काल में राज्य सरकार के आदेशों की पूर्ण रूपेण पालना व सहयोग किया। उन्होंने कहा कि उदारता से दिया गया दान का सुफल प्राप्त होता है। प्रधानाध्यापक श्री सुरेंद्र सिंह परमार ने कहा कि माथुर मैडम के कार्य अनुकरणीय रहेंगे। इस मौके पर श्री गणपत लाल माथुर व श्रीमती संतोष माथुर ने भी संबोधित किया। गायक श्री फारूक शेख दीवाना ने शानदार गीत की प्रस्तुति दी। इस मौके पर सर्वश्री राजेश बालोत, रजत माथुर, अर्पिता माथुर, स्वर्णाक्षी, तनीषा परमार, चारू, पवनी देवी, रेखा माली उपस्थित थे।

## विद्यालय स्टाफ ने विद्यालय को कम्प्यूटर व प्रिंटर भेंट किया

**झालावाड़–** राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय हरिगढ़ ब्लॉक खानपुर जिला झालावाड़ के समस्त स्टाफ ने मिलकर विद्यालय के लिए नया कम्प्यूटर व प्रिंटर भेंट किया। प्रधानाध्यापक प्रेम दाधीच ने बताया कि आजकल स्माइल 2 के कारण विद्यालय में कार्य बहुत अधिक बढ़ गया है एवं ग्रामीण क्षेत्र में सुविधाओं का भी अभाव है। इन सब परिस्थितियों को देखते हुए स्टाफ ने निर्णय किया कि सब राशि मिलाकर विद्यालय के लिए कम्प्यूटर व प्रिंटर खरीदे। इसके लिए प्रेम दाधीच ने 5,000 रुपये, श्रीमती रामसिया ने 5,000 रुपये, सियाराम धाकड़ ने 2,000 रुपये,

श्रीमती सरोज मीना ने 2,000 रुपये, प्रियंका दुबे ने 2,000 रुपये, कहकशा खानम ने 2,000 रुपये, ओम प्रकाश सेन 2,000 रुपये, मोहन सिंह चन्द्रावत ने 2,000 रुपये प्रदान किए। पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी प्रमोद कनेरिया व एस एम सी अध्यक्ष द्वारा पूजा करके कम्प्यूटर का शुभारंभ किया एवं समस्त स्टाफ को विद्यालय को भेंट देने पर बधाई व शुभकामनाएँ दी। प्रेम दाधीच ने बताया कि जब बालिकाएँ विद्यालय आना प्रारम्भ हो जाएंगी तब उन्हें भी कम्प्यूटर का ज्ञान प्रदान किया जाएगा।

## अध्यापकों द्वारा हस्तनिर्मित TLM का वितरण किया गया।

**पाली :** राज्य सरकार द्वारा चलाए गए कार्यक्रम स्माइल 2 के दिशा निर्देशों के अनुसार सुमेरपुर उपखंड के मोरडू गाँव में कोविड–19 की गाइडलाइन का पालन करते हुए विद्यालय के शिक्षकों द्वारा घर–घर जाकर गृहकार्य देकर विद्यार्थियों की समस्याओं को दूर किया गया। साथ ही विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों द्वारा छात्रों के लिए हस्तनिर्मित TLM बनाकर वितरित की गयी, जिससे विद्यार्थियों में सीखने के प्रति रोचकता बनी रहे। संस्थाप्रधान माँगीलाल व PEEO श्री राजीव चारण ने बताया कि अध्यापक सर्वश्री गौरव सिंह घाणेराव, रामनिवास सोलंकी, शिवराम मीणा व मुन्नालाल विश्नोई द्वारा समय–समय पर विद्यालय में नवाचार किए जाते रहे हैं जिससे विद्यालय व विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके।

## राजकीय नगर उ.मा.वि. बाँसवाड़ा में उपलब्ध होगी 45 वर्षों की शिविरा पत्रिका

**बाँसवाड़ा–** राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बाँसवाड़ा में शिविरा कॉर्नर की स्थापना की गई है। यहाँ विगत 45 वर्षों की शिविरा उपलब्ध रहेगी। जिसका कोई भी शिक्षक लाभ ले सकेगा। इसको शिक्षाविद् शान्तिलाल सेठ ने विद्यालय को भेंट किया है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नगर परिषद् के सभापति जैनेन्द्र त्रिवेदी ने कहा कि पुस्तकालय समृद्ध होने

का लाभ विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को मिलेगा। उन्होंने कहा कि शिविरा में महत्त्वपूर्ण आलेख के साथ नियमावली की जानकारी होती है जिसका सीधा लाभ शिक्षा जगत को मिलेगा। अध्यक्षता करते हुए शिक्षाविद् श्री शान्तिलाल सेठ ने कहा कि पढ़ने, लिखने का शौक प्रत्येक शिक्षक को होना चाहिए। शिविरा पत्रिका शिक्षकों के लिए आदर्श है तथा यह रचनात्मकता को बढ़ावा देती है। आरम्भ में अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रधानाचार्य श्री सुशील कुमार जैन ने कहा कि 45 वर्षों की साधना के पश्चात यह संकलन एकत्रित हुआ है इसका जिले भर के शिक्षक लाभ उठाएंगे। इस अवसर पर रेड ड्रॉप इन्टरनेशनल के श्री नीलेश सेठ तथा स्टाफ सदस्य उपस्थित थे। संचालन श्री वीरेन्द्र सिंह राव ने किया।

## कोरोना को बदला अवसर में

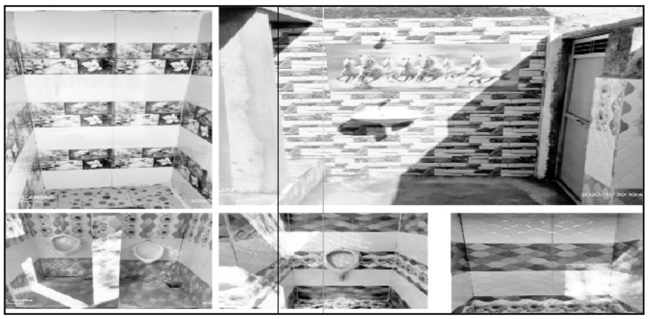

**झालावाड़–** कोरोना कहर के कारण जहाँ एक तरफ पूरी दुनिया अस्त–त्रस्त है, विद्यालयों में बच्चों की पढ़ाई सीमित पाठ्यक्रमों के साथ ऑनलाइन चल रही है वहीं इस आपदा को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कोटड़ी तह. पिड़ावा, झालावाड़ ने अवसर में बदल दिया। शाला स्टाफ ने राज्य सरकार के निर्देशानुसार गठित एसडीएमसी कमेटी में प्रस्ताव लेकर छात्र–छात्राओं के शौचालयों में अत्याधुनिक टाईल्स, यूरिन पोट एवं वाश बेसिन लगाकर विद्यालय की साज–सज्जा में चार चाँद लगा दिए। कोरोना काल का सदुपयोग कर वर्तमान में विद्यालय के शौचालय किसी होटल के शौचालय से कम नजर नहीं आते। कार्यवाहक प्रधानाचार्य श्री चिन्मय जैन, समस्त शाला स्टाफ व एसडीएमसी कमेटी ने अक्षय पेटिका व विकास में प्राप्त धन राशि से उक्त मनमोहक कार्य करवाया। विद्यालय के उक्त कार्य के संपूर्ण गाँव व आसपास के क्षेत्रों में चर्चा है। संपूर्ण कार्य श्री संजय जैन वरिष्ठ अध्यापक के कुशल मार्गदर्शन व निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

## श्रमदान से बदली स्कूल की तस्वीर

**जोधपुरः** कोविड–19 के चलते रा.उ.मा.वि. नेवरा रोड़ के शिक्षकों ने समय का सदुपयोग कुछ इस प्रकार से किया कि विद्यालय भवन का आकर्षक व बाल सुलभ बनाया। विद्यालय भवन में ऐसी पेंटिंग करवाई गई जिससे वह सुन्दर भी दिखे और ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को पढ़ाई में मदद भी मिल सके। अक्सर सरकारी विद्यालयों में अंग्रेजी की पढ़ाई कम होती है इस धारणा को तोड़ने के लिए एक अंग्रेजी विंग बनाई उक्त नाम से जिसमें सारे कोटेशन व पेंटिंग अंग्रेजी में हैं। यह विंग विद्यार्थियों के आकर्षण का केन्द्र बना है तथा विद्यार्थियों में अंग्रेजी के प्रति जो डर था वो कम हो रहा है। देवभाषा संस्कृत के प्रति रुचि जाग्रत करने के उद्देश्य से उक्त नाम से संस्कृत विंग बनाई गई जिसमें देवभाषा से संबंधित सूक्तियाँ, श्लोक चित्रकारिता का बखूबी चयन किया गया। हिंदी का दैनिक जीवन में अधिकाधिक प्रयोग करने के उद्देश्य से हिन्दी खंड की चित्रकारी, सुविचार, प्रेरक कथन, पहेलियों का चयन शानदार तरीके से किया। प्राथमिक वर्ग के गलियारे को अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों की रेलगाड़ी, साथ ही विभिन्न फलों, जानवरों की सचित्र जानकारी तथा इन्द्रधनुष सहित विभिन्न प्राकृतिक दृश्यों को उकेरा गया है। शिक्षा में अभिनय एवं कला को प्रोत्साहन देने हेतु सभागार कक्ष की दीवारों पर राजस्थानी कला एवं संस्कृति के विभिन्न भित्तिचित्र सुविचार लिखे गए हैं। इस सभागार का नामकरण 'आराध्या' प्रधानाचार्य श्री कानाराम चौधरी द्वारा किया गया। विजुअल्स से कोई भी चीज आसानी से सीखी जा सकती है। इसलिए हमने कोशिश की है कि बच्चे देखकर कुछ अच्छा सीख सकें। इससे विद्यालय के सौंदर्य में तो इजाफा हुआ ही है साथ ही शिक्षा के स्तर में भी सुधार होगा तथा अभिभावक भी आकर्षित होंगे।

विद्यालय के प्रत्येक कक्षा–कक्ष की अंदरुनी दीवारों पर फ्रंट साइड में ग्रीन बोर्ड जस्ट ऊपर विद्यालय की टैग लाइन A Better Future Starts Here तथा अन्य तीन दीवारों पर क्रमशः अंग्रेजी, हिन्दी व संस्कृत में कोटेशन लिखे गए हैं। जिसे विद्यार्थी हमेशा पढ़कर एक अच्छा इंसान बनने की प्रेरणा लेते हैं। स्थानीय विद्यालय में बच्चों के लिए स्मार्ट क्लास भी बनाई गई है। विद्यालय में ग्रीन बोर्ड व किताबों से तो पढ़ाते ही है लेकिन अब साथ–साथ में प्रोजेक्टर के जरिए पढ़ाई होने से बच्चे आनंद तथा रुचि के साथ सीखते हैं। विद्यालय में हर कार्यक्रम का संचालन (मंच संचालन) बालिकाओं के द्वारा किया जाता है। प्रार्थना सभा कार्यक्रम में सर्वाधिक उपस्थिति वाले विद्यार्थी प्रत्येक माह की अंतिम तिथि को सम्मानित किया जाता है तथा प्रत्येक कक्षा को प्रार्थना सत्र में बोलने का अवसर दिया जाता है। अभिभावक पट्ट मोबाइल नम्बर सहित बनाया गया है। स्टाफ मीटिंग की तरह प्रत्येक माह संस्थाप्रधान के साथ कक्षा मॉनिटरों की मीटिंग आयोजित होती है जिसमें प्रत्येक कक्षा में पढ़ाए गए पाठ्यक्रम का अनुमान हो जाता है तथा उनकी समस्याओं का निराकरण भी आसानी से हो जाता है। विद्यालय के चहुँमुखी विकास हेतु अभिभावक भी हमेशा सहयोग हेतु तत्पर रहते हैं तथा सभी शिक्षक कड़ी मेहनत करते हैं। प्रधानाचार्य श्री कानाराम चौधरी का मानना है कि किसी भी कार्य को सफल बनाने के लिए टीम वर्क जरूरी होता है, टीम अच्छी हो तो काम भी बेहतर होता है। मुझे बहुत अच्छे सहयोगी मिले हैं और मुझे उन पर गर्व है।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

# चतुर्दिक समाचार

## एंटी शिप मिसाइल ब्रह्मोस का सफल परीक्षण

**नई दिल्ली–** नौसेना ने ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल के एंटी शिप वर्जन का बंगाल की खाड़ी में मंगलवार को सफल परीक्षण किया। इन मिसाइलों को पनडुब्बी, जहाज या जमीनी प्लेटफार्म से छोड़ा जा सकता है। सूत्रों के अनुसार सेना ने 24 नवम्बर को सतह से सतह पर मार करने में सक्षम मिसाइल का परीक्षण किया था। इसकी रफ्तार आवाज की गति से करीब तीन गुना तेज या 2.8 मैक की है। मिसाइल के जमीन से छोड़े जाने वाले संस्करण की रेंज को भी 400 किलोमीटर तक बढ़ाया गया है।

## हर्बल चाय व आंवला है संजीवनी

**बीकानेर–** कोरोना के बढ़ते संक्रमण के कारण इससे बचने की चिंता की जा रही है लेकिन चिकित्सकों की खान-पान संबंधी सलाह पर अमल कम लोग ही कर रहे हैं। आयुर्वेद में ऐसी औषधियाँ व फलों का वर्णन है जो मनुष्य की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक है। इनके दैनिक खान-पान में उपयोग से मौसमी बीमारियों से बचा जा सकता है। इस बारे में आयुष चिकित्सक डॉ. एम. भारद्वाज का कहना है कि कोरोना काल में सभी को अतिरिक्त सावधानी रखने की आवश्यकता है। वे अपने दैनिक भोजन या नाश्ते में ऐसे पेय पदार्थ या फल, औषधियों को शामिल करें जो शरीर को अंदर से बलवान करें।

## छोटा हृदय दोष आसानी से हो सकता है ठीक

**जोधपुर–** आमतौर पर कुछ बच्चे जन्मजात हृदय दोष के साथ पैदा होते हैं, इसलिए नवजात अवधि या शैशवावस्था के दौरान इनका पता लग जाता है। बड़े आकार के दोषों (छेद) को तुरंत बंद करने की आवश्यकता होती है। इस तरह के दोष को शैशवावस्था या नवजात काल के दौरान ठीक करना जरूरी होता है। जबकि यदि समस्या छोटी है यानी हृदय का यह दोष (छेद) छोटा है तो ये बाद में बंद हो सकते हैं। कई छिद्र दोषों को बंद करने के लिए सर्जरी की आवश्यकता होती है। जहाँ तक हृदय में होने वाले छोटे छिद्रों का सवाल है तो इन्हें उपकरणों को लगाकर एंजियोग्राफी तकनीक के जरिए ऑपरेशन के बिना बंद किया जा सकता है। कुल मिलाकर यह हृदय के छिद्र के आकार और उसकी गंभीरता पर निर्भर करता है उसे उसका उपचार कब और कैसे किया जाना चाहिए।

## कैंसर से विकृत होंठ का पुनर्निर्माण

**बीकानेर–** कैंसर रोग के कारण विकृत हुए होंठ का कोठारी अस्पताल में ऑपरेशन कर पुनर्निर्माण किया गया। अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. ओपी श्रीवास्तव ने बताया कि जालवाली, घड़साना (श्रीगंगानगर) निवासी गिरधारी लाल (70) कई साल से होंठ के कैंसर से पीड़ित थे। इससे निचला होंठ विकृत हो गया और उन्हें खाने-पीने में परेशानी हो रही थी। मरीज ने अस्पताल में मुँह एवं गला कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. गुरप्रीत सिंह गिल से सम्पर्क किया। इसके बाद मरीज का ऑपरेशन कर निचले होंठ को निकालकर कैंसर को पूरी तरह साफ किया गया। बाद में माइक्रोवास्कुलर पद्धति से होंठ का पुनर्निर्माण प्लास्टिक सर्जरी से किया गया। मरीज अब स्वस्थ है। नाक, कान एवं गला रोग विशेषज्ञ डॉ. अजित सिंह एवं डॉ. पुष्पेन्द्र शेखावत ने बताया कि बीकानेर के चिकित्सा इतिहास में यह बड़ी उपलब्धि है। प्लास्टिक सर्जन डॉ. अक्षत वहल तथा डॉ. सतनाम अरोड़ा, प्रीति राठौड़, रामकुमार चौधरी, मृदुल व्यास, विरेन्द्र सिंह एवं नारायण दास सोनगरा ने ऑपरेशन में सहयोग दिया।

## 100 साल की जरूरतों को पूरा करेगा नया संसद भवन

**नई दिल्ली–** संसद की नई इमारत अगले 100 साल की जरूरतों के हिसाब से तैयार की जा रही है। इस इमारत में बड़ा कॉस्टीट्यूशन हॉल होगा, जिसमें देश की लोकतांत्रिक विरासत की झलक दिखाई देगी। संसद सदस्यों के लॉन्ज, कई कमेटियों के लिए कमरे, डाइनिंग एरिया और पर्याप्त पार्किंग स्पेस होगा। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने प्रस्तावित भवन के बारे में उम्मीद जताई है कि आजादी के 75 साल पूरे होने पर संसद का सत्र नए भवन में होगा। नए भवन में लोकसभा कक्ष में 888 सदस्यों और संयुक्त बैठकों के दौरान 1224 के बैठने की व्यवस्था होगी। इसी तरह राज्य सभा कक्ष में 384 सदस्य बैठ सकेंगे। बिरला का दावा है कि त्रिभुजाकार नए संसद भवन की एक झलक देखने के लिए दुनिया लालायित रहेगी।

## जरूरतमंद बच्चों को शिक्षित कर रही नीलम

**ग्वालियर–** बच्चे देश का भविष्य हैं। इनका शिक्षित होना जरूरी है, लेकिन आज भी काफी संख्या में बच्चे ऐसे हैं, जो पैसे के अभाव में पढ़ नहीं पाते। ऐसे बच्चों को शिक्षित करने का काम कर रही हैं ग्वालियर की 61 वर्षीय नीलम गर्ग। नीलम अब तक 200 से अधिक बच्चों को शिक्षित कर चुकी हैं। कॉलेज शिक्षिका रह चुकी नीलम जरूरतमंद बच्चों को पढ़ाने के साथ ही उन्हें पाठ्य सामग्री और स्कूल फीस देकर भी मदद कर रही हैं। नीलम का कहना है कि बच्चों की शिक्षा के लिए मैं कहीं भी जाने को तैयार हूँ। शहर के आसपास आदिवासी बच्चों को शिक्षित करने के लिए उनके क्षेत्र में क्लास लेती हूँ। बच्चों को शिक्षित करने की प्रेरणा नीलम को अपने पति से मिली।

## हल्दी वाला दूध देगा ताकत

**जयपुर–** महिलाओं की स्वास्थ्य समस्याओं को दूर करने में हल्दी का प्रयोग बहुत लाभकारी है। प्रसव के बाद यदि महिलाओं को हल्दी दी जाए तो उन्हें कई तरह की शारीरिक परेशानियों से निजात मिल सकती है। इतना ही नहीं, हल्दी के प्रयोग से यूरिन संबंधी तकलीफ में भी आराम मिलेगा। यह शरीर में रक्त की वृद्धि करने के साथ ही रक्तस्राव संबंधी समस्याओं में लाभ देगी। यदि नियमित हल्दी के दूध का प्रयोग किया जाए तो इससे शारीरिक कमजोरी भी दूर होगी और साथ ही रोग-प्रतिरोधक क्षमता भी मजबूत होगी।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

# हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। -**व. संपादक**

## नागौर

**रा.उ.मा.वि. खजवाना** में श्री देवाराम लामरोड़ (सेवानिवृत्त) द्वारा 70,000 रुपये की लागत से प्रार्थना स्थल (30x50) पर कोटा स्टेशन का कार्य करवाया, श्री रामनारायण जाखड़ द्वारा 1,50,000 रुपये की लागत से प्रार्थना स्थल पर टीन शैड का कार्य करवाया गया, श्री कालूराम (पूर्व उप सरपंच) द्वारा (32x40) 80,000 रुपये की लागत से टीन शैड का कार्य करवाया गया, श्री श्रीराम मुण्डेल से 10,000 रुपये की लागत से ब्लूटूथ म्यूजियम सिस्टम विद्यालय को भेंट किया गया।

## झालावाड़

**रा.उ.मा.वि. बड़बड़, ब्लॉक बकानी** को पूर्व छात्रों, अभिभावकों व विद्यालय में कार्यरत स्टाफ द्वारा विद्यार्थियों के बैठने हेतु कुल 60 टेबल व 60 स्टूल विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 66,000 रुपये।

## बाड़मेर

**रा.उ.मा.वि. होडू** को पीओ होडू परिक्षेत्र के प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों के सुश्री पूजा (अ.), सुश्री शमेष्टा (अ.), सुश्री सुनीता मीना (अ.), श्रीमती सुशीला (अ.), श्रीमती रीना चमार (अ.), श्री लालचन्द गुर्जर (शा.शि.), श्री विनय कुमार (अ.), श्रीमती चुन्नी चौधरी (प्रबोधक), श्री दयाराम (अ.) से 9 कुर्सी बाबत 5,400 रुपये प्राप्त हुए, श्री मूलाराम मेघवाल (अ.) से कुर्सी पेटे 2,000 रुपये प्राप्त हुए।

## पाली

**रा.उ.प्रा.वि. पुनाडिया, बाली** को श्री धर्मपाल सरेल द्वारा अपने पुत्र हार्दिक सरेल के जन्म दिवस के उपलक्ष में ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से 5,100 रुपये की राशि विद्यालय विकास हेतु भेंट की गई।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

# शिक्षा मंत्री को सहायता का चैक व निदेशक महोदय को स्मारिका भेंट

**कोरोना संकट काल में राजस्थान के पुरस्कृत शिक्षकों ने राजस्थान मुख्यमंत्री सहायता कोष 'कोविड-19' मिटिगेशन फंड में ग्यारह लाख इक्कीस हजार रुपये का सहायता राशि चैक शिक्षा मंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा जी को सौंपा। इस स्मृति को चिरस्थायी बनाए रखने के उद्देश्य से पुरस्कृत शिक्षक फोरम, राजस्थान द्वारा 'कोरोना योद्धा-राजस्थान' के सम्मानित शिक्षक' स्मारिका का प्रकाशन किया गया। 21 दिसम्बर, 2020 पुरस्कृत शिक्षकों के सहयोग से प्रकाशित यह स्मारिका माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री सौरभ स्वामी जी को भेंट की गई। इस अवसर पर पुरस्कृत शिक्षक डॉ. योगेन्द्र सिंह नरुका, सहायक निदेशक, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, सुनिल खत्री (अध्यापक संस्कृत शिक्षा), सतीश चन्द्र साध (वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक), डॉ. विष्णु दत्त जोशी (व्याख्याता-हिन्दी) उपस्थित रहे।**

**सतीश चन्द्र साध** सचिव, पुरस्कृत शिक्षक फोरम, बीकानेर इकाई, मो: 9414147972



शिविरा पत्रिका (मासिक) : जनवरी, 2021 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक: अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

16 दिसम्बर, 2020

# शिक्षा विभागीय (राज्य स्तरीय) मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह 2020

वेटरेनरी सभागार, बीकानेर

## रक्तदान

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22
शिविरा पत्रिका (मासिक) ● जनवरी, 2021
प्रकाशन तिथि : 2 जनवरी, 2021 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख
समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66

## शिक्षा विभागीय (राज्य स्तरीय) मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2020 में सम्मानित कार्मिक

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334011